संपादकीय जागरण

रविवार, 13 जुलाई, 2025 : श्रावण कृष्ण - 3 वि. 2082

बुरी आदतें जीवन को समय से पूर्व नष्ट कर देती हैं

सवाल खड़े करने वाली जांच

अहमदाबाद में एअर इंडिया विमान हादसे की प्रारंभिक जांच रपट इस दिल दहलाने वाली हवाई दुर्घटना के संभावित कारणों के जवाब कम दे रही है, सवाल अधिक खड़े कर रही है। समझना कठिन है कि इस प्रारंभिक जांच रपट को सुविचारित तरीके से क्यों नहीं जारी किया गया? किसी रपट को रात ढाई-तीन बजे जारी करने का क्या औचित्य? प्रश्न यह भी है कि इस अधकचरी सी रपट को जारी करना कितना आवश्यक था। यदि किसी कारण आवश्यक भी था तो यह क्यों नहीं स्पष्ट किया गया कि इसके आधार पर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जाना चाहिए और किसी ठोस नतीजे पर पहुंचने के लिए अन्य जांच रपटों की प्रतीक्षा की जानी चाहिए? इतने बड़े विमान हादसे की प्रारंभिक जांच रपट पर कामचलाऊ रवैया समझ से परे है। इसके बाद भी परे है कि सरकार पहले दिन से यह प्रकट कर रही थी कि वह इस विमान दुर्घटना के कारणों को सामने लाने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रतिबद्धता जताने का यह कोई तरीका नहीं होता।

अहमदाबाद विमान दुर्घटना की प्रारंभिक जांच रपट इसलिए विश्वसनीय नहीं जान पड़ती, क्योंकि उसके जरिये यह बताने की कोशिश की गई है कि कहीं न कहीं पायलटों से गलती हुई। आखिर इतने अनुभवी पायलट फ्यूल का स्विच आफ करने की गंभीर गलती कैसे कर सकते हैं? इस गलती को रोकने के तो कई उपाय होते हैं। पायलटों की बातचीत के विवरण से भी यही संकेत मिलता है कि 250 से अधिक लोगों की जान लेने वाले विमान के इंजन संभवतः किसी तकनीकी खामी से अचानक बंद हो गए। कहीं ऐसा तो नहीं कि विमान हादसे की प्रारंभिक जांच करने वाले विमान निर्माता कंपनी बोइंग को संदेह के दायरे से बाहर रखना चाहते थे? इस अंदेशे का एक कारण यह है कि अतीत में बोइंग पर ऐसे आरोप लग चुके हैं कि उसने अपने कई विमानों के निर्माण के दौरान उनके सुरक्षित संचालन उपायों की अनदेखी करना पसंद किया। ऐसे आरोप खुद इस कंपनी के कर्मचारियों ने लगाए थे। अच्छा यह हो कि भारत सरकार अहमदाबाद विमान हादसे के मूल कारणों की तह तक जाने के हर संभव उपाय करे। उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इस विमान दुर्घटना में जाने-अनजाने जिसने भी गलती की हो, उसका नाम सामने आए। कोई बचने-छिपने न पाए। यह ठीक नहीं कि विदेशी मीडिया का एक हिस्सा अहमदाबाद विमान हादसे की प्रारंभिक जांच रपट के शरारत भरे निष्कर्ष निकाल रहा है। यदि वह ऐसा कर पा रहा है तो हवाई दुर्घटना की आधी-अधूरी प्रारंभिक जांच रपट के कारण। यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है कि भारत सरकार और उसकी एजेंसियों के साथ एअर इंडिया प्रबंधन भी यह देखे कि विमान हादसे का पूरा और सही सच कैसे सामने आए। यह भारत की प्रतिष्ठा और विमान यात्रियों की सुरक्षा से जुड़ा मामला है।

दुखद स्थिति

वेलकम क्षेत्र की जनता कालोनी में चार मंजिला इमारत ढह जाने से छह लोगों की मौत हो गई। राजधानी में इमारत ढहने की यह पहली घटना नहीं है। प्रत्येक वर्ष इस तरह की घटनाएं होती हैं। हाल के कुछ महीनों में मुस्तफाबाद, करोलबाग, आजादपुर, बिहारी कालोनी, शाहदरा में इस तरह की घटनाएं हो चुकी हैं। विभाग जिम्मेदारी लेने की जगह एक-दूसरे को दोषी ठहराते रहते हैं। वेलकम की घटना पर भी दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड व नगर निगम एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। यह स्थिति दुखद है। कोई विभाग इस तरह से अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही से नहीं बच सकता है। ।

> स्थिति में सुधार करने के लिए अविलंब कदम उठाने की आवश्यकता है, लोगों के जीवन को इस तरह से असुरक्षित नहीं छोड़ा जा सकता है

राजधानी में कई इमारतें दशकों पुरानी और असुरक्षित हैं। इनका रखरखाव ठीक से नहीं होता है। इससे मानसून में इनके ढहने का खतरा बढ़ जाता है। निर्माण के दौरान मानकों का पालन नहीं करने से भी इस तरह की घटनाएं होती हैं। असुरक्षित इमारतों का सही तरह से सर्वे कर उन्हें खाली कराने की कार्रवाई नहीं होती है। सर्वे के नाम पर खानापूरी की जाती है। भ्रष्टाचार के कारण अवैध निर्माण पर रोक नहीं लग रही है। असुरक्षित ढंग से निर्माण कार्य होता है। कई बार निर्माण कार्य के दौरान ही दुर्घटना घट जाती है। स्थिति में सुधार करने के लिए अविलंब कदम उठाने की आवश्यकता है। लोगों के जीवन को इस तरह से असुरक्षित नहीं छोड़ा जा सकता है।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — **कल का परिणाम**

क्या 'उदयपुर फाइल्स' फिल्म की रिलीज पर रोक लगाने का फैसला सही है?

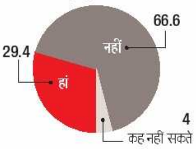

आज का सवाल

क्या अहमदाबाद विमान हादसे की जांच रपट पर पायलटों के संगठन की आपत्ति सही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

मतदाता सूची के सत्यापन पर व्यर्थ का शोर

संजय गुप्त

> **यदि समय-समय पर चुनाव आयोग की ओर से इसकी पड़ताल की जाती रहे कि वास्तविक मतदाता कौन हैं और वे कहां रह रहे हैं तो इसमें क्या हर्ज है?**

बिहार में आगामी विधानसभा चुनाव के पहले चुनाव आयोग ने राज्य में मतदाता सूची के सत्यापन अर्थात पुनरीक्षण की जो पहल की, उस पर कांग्रेस, राजद समेत अनेक विपक्षी दलों ने आसमान सिर पर उठा लिया। इन दलों ने यह बताने की कोशिश की कि चुनाव आयोग कोई अनुचित, अनावश्यक और असंवैधानिक काम कर रहा है। उन्होंने चुनाव आयोग के साथ मोदी सरकार पर भी तमाम आरोप लगाए। उनके हिसाब से चुनाव आयोग मतदाता सूची का सत्यापन मोदी सरकार के कहने पर कर रहा है और उसका इरादा किसी न किसी प्रकार भाजपा को चुनावी लाभ पहुंचाना है। राहुल गांधी ने चुनाव आयोग की इस पहल को महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव में हुई तथाकथित हेराफेरी से भी जोड़ा। वह बार-बार यह घिसा-पिटा आरोप दोहरा रहे हैं कि महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने भाजपा को लाभ पहुंचाने के लिए धांधली करवाई। इन आरोपों का चुनाव आयोग ने विस्तार से जवाब दिया है, लेकिन राहुल गांधी और उनके साथ कई विपक्षी नेता सच का सामना करने को तैयार नहीं दिख रहे हैं। साफ है कि उनके साथ कांग्रेस यह समझने को तैयार नहीं कि उनकी राजनीतिक जमीन कमजोर हो रही है और इसके लिए वे चुनाव आयोग पर दोष मढ़कर कुछ हासिल नहीं कर सकते।

मतदाता सूची का सत्यापन कोई नई बात नहीं है। बिहार में ही इसके पहले 2003 में मतदाता सूची का सत्यापन हुआ था। अन्य राज्यों की तरह बिहार में भी मतदाता बढ़े हैं। बिहार के लाखों लोग रोजगार के सिलसिले में बाहर जाते हैं और कुछ तो वहीं स्थाई रूप से बस जाते हैं। इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि बांग्लादेश से होने वाली अवैध घुसपैठ से पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर के राज्यों के साथ-साथ झारखंड और बिहार भी प्रभावित हैं। मतदाता सूची के सत्यापन से न केवल बिहार के वैध-वास्तविक मतदाताओं का पता चलेगा, बल्कि इसकी भी जानकारी हो सकेगी कि कहीं अवैध बांग्लादेशी बिहार में मतदाता तो नहीं बन गए हैं? आखिर जब वे बंगाल में बन सकते हैं तो बिहार में भी इसकी आशंका है।

चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया है कि मतदाता सूची का सत्यापन निष्पक्ष चुनाव की बुनियादी शर्त है। यदि समय-समय पर इसकी पड़ताल की जाती रहे कि वास्तविक मतदाता कौन हैं और वे कहां रह रहे हैं तो इसमें क्या हर्ज है? शायद ऐसे ही जायज सवालों के कारण चुनाव आयोग की पहल के खिलाफ जिन राजनीतिक दलों और लोगों ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया, उन्हें निराशा ही हाथ लगी। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग की पहल पर रोक लगाने से इन्कार कर दिया। इतना अवश्य रहा कि उसने चुनाव आयोग को मतदाताओं के सत्यापन के लिए आधार, राशन कार्ड, वोटर आइडी को भी इस्तेमाल करने का सुझाव दिया। यह ठीक ही है कि चुनाव आयोग सुप्रीम कोर्ट के सुझाव पर अमल करने को तैयार है। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि चुनाव आयोग का काम नागरिकता तय करना नहीं है। हालांकि चुनाव आयोग का इस संदर्भ में यह कहना था कि हर मतदाता को भारतीय नागरिक होना चाहिए, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि नागरिकता तय करने का काम गृह मंत्रालय का है। कुल मिलाकर सुप्रीम कोर्ट का फैसला सही है। यह फैसला चुनाव आयोग की अनावश्यक आलोचना करने वालों को आईना दिखाने वाला है। उसने व्यर्थ की राजनीति करने वालों को सबक सिखाने का ही काम किया। चुनाव प्रक्रिया और चुनाव आयोग पर सवाल पहले भी उठाए जाते रहे हैं। हाल के समय में सबसे ज्यादा सवाल ईवीएम पर उठे हैं। सवाल उठाने वाले दलों में कांग्रेस सबसे आगे है, जबकि उसके समय में ही ईवीएम पर अमल शुरू हुआ। केंद्र की सत्ता से बाहर होने के बाद कांग्रेस लगातार यह साबित करने की कोशिश कर रही है कि भाजपा ईवीएम में कुछ गड़बड़ी कराकर चुनाव जीत रही है। वह और उसके सहयोगी राजनीतिक दल जब ऐसे आरोप लगाते हैं तो यह भूल जाते हैं कि वे भी तो चुनाव जीतते रहते हैं। उन्होंने झारखंड में चुनावी जीत हासिल की थी। कांग्रेस यह देखने को तैयार नहीं कि उसके और सहयोगी दलों के प्रत्याशी जितने अंतर से चुनाव हारते हैं, उतनी संख्या में अवैध वोट नहीं डलवाए जा सकते।

अवधेश राजपूत

कोई भी प्रक्रिया खुद में संपूर्ण नहीं हो सकती। चुनाव प्रक्रिया में भी कुछ कमियों या विसंगतियों का उल्लेख किया जा सकता है, पर यह हर कोई मानेगा कि समय के साथ भारत की चुनाव प्रक्रिया में सुधार हुआ है और इसी कारण चुनाव आयोग की दुनिया भर में प्रतिष्ठा बढ़ी है। बिहार में मतदाता सूची के सत्यापन के चुनाव आयोग के फैसले पर विपक्षी दलों ने जो भी सवाल उठाए, वे कुल मिलाकर लोगों को गुमराह करने वाले ही हैं। कांग्रेस और अन्य दलों ने मतदाता सूची के सत्यापन को लेकर चुनाव आयोग पर जो तमाम आरोप लगाए, उनसे यही अधिक साफ हुआ कि वे पुरानी मतदाता सूचियों के सहारे चुनाव कराना चाह रहे हैं और यह मानकर चल रहे कि मतदाता सूची के सत्यापन से कुछ ऐसे लोगों के नाम वोटर लिस्ट से कट सकते हैं, जो अब मतदाता नहीं हैं और इससे उन्हें राजनीतिक नुकसान हो सकता है। आखिर वे इस नतीजे पर कैसे पहुंच सकते हैं कि ऐसे लोग उन्हें ही वोट देते?

यह अच्छा है कि चुनाव आयोग ने उच्चतम न्यायालय के सामने साफ किया कि मतदाता सूची के सत्यापन की 60 प्रतिशत प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और विधानसभा चुनाव के पहले शेष काम को पूरा कर लिया जाएगा। बेहतर होगा कि सभी राजनीतिक दलों के साथ बिहार के लोग भी यह समझें कि चुनाव आयोग की पहल से फर्जी मतदाताओं के नाम कटेंगे। यह ठीक है कि इस पहल से बिहार के कुछ उन लोगों को परेशानी हो सकती है, जो बाहर रहते हैं और अब भी इस राज्य के वोटर हैं, लेकिन इसके आधार पर चुनाव प्रक्रिया और लोकतंत्र को सशक्त बनाने के काम को रोका नहीं जा सकता। लोकतंत्र और अधिक सशक्त हो, इसकी चिंता देश के नागरिकों को भी करनी होगी।

response@jagran.com

पुरस्कार पाने की अजीब खुजली

हास्य-व्यंग्य

खुजली कई तरह की होती है। ऐसा चिकित्साशास्त्र बताता है, लेकिन एक विशिष्ट तरह की खुजली का चिकित्सा विज्ञान की पुस्तकों में कोई रिकार्ड नहीं है। यह खुजली है पुरस्कार पाने की। 'पुरस्कार पाने की खुजली' एक अदृश्य किस्म की खुजली है। इस खुजली को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। अमूमन पीड़ित व्यक्ति ही इस खुजली की वेदना को महसूस कर पाता है, लेकिन कभी-कभी पीड़ित व्यक्ति इतना अधिक खुजैला हो जाता है कि उसका दर्द फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स जैसी इंटरनेट मीडिया साइटों और व्यक्तिगत बातचीत में भारतीय नालों की तरह लगातार उफनने लगता है और तब उसके आसपास के लोगों को महसूस होता है कि पीड़ित व्यक्ति दरअसल पुरस्कार पाने की खुजली से जूझ रहा है। इस खुजली का उपचार अभी तक विज्ञानी नहीं खोज पाए हैं।

पुरस्कार पाने की खुजली किसी को भी, कभी भी हो सकती है। यह उम्र, जाति, मजहब, राष्ट्र वगैरह देखकर नहीं होती। 'पंछी, नदिया, पवन के झोंके, कोई सरहद इन्हें न रोके' की तर्ज पर पुरस्कार पाने की खुजली तीव्र विचरण करती है। व्यक्ति कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, इस खुजली के आगे बेबस महसूस करता है। अब डोनाल्ड ट्रंप साहब को लीजिए। वह भी इस खुजली से पीड़ित हैं। उनकी खुजली की दवा है नोबेल पुरस्कार। दुनिया का सबसे ताकतवर शख्स

पीयूष पांडे

> **यदि झूठ बोलना और फर्जी दावों की कोई श्रेणी होती तो ट्रंप को पिछले कार्यकाल में ही नोबेल मिल जाता**

एक अदद नोबेल पुरस्कार चाहता है, लेकिन वह मिल नहीं पा रहा है तो खुजैलापन बढ़ता जा रहा है। नोबेल अवार्ड धन देकर खरीदा जा सकता तो ट्रंप साहब कब का खरीद लाए होते! नोबेल पुरस्कारों की श्रेणी में अगर झूठ बोलना और फर्जी दावों की कोई श्रेणी होती तो ट्रंप साहब को पिछले कार्यकाल में ही यह पुरस्कार मिल जाता।

डोनाल्ड ट्रंप की तरह हमारे देश के कुछ नेताओं को भी 'पुरस्कार खुजली' हो गई है। वे भी इनके-उनके लिए नोबेल मांगते रहते हैं। नेता बिना कुछ किए धरे जब वोट मांग लेता है, तो अवार्ड मांगना क्या चीज है? बड़े लोगों की बात निराली होती है। वे बड़ा अवार्ड चाहते हैं। आम लोग छोटे अवार्ड से खुजली मिटा लेते हैं। मेरे मुहल्ले के एक साहब गली नंबर छह के नुक्कड़ पर आयोजित हुए "राष्ट्रीय स्तर के" अवार्ड समारोह से अवार्ड झटक लाए। इस पुरस्कार को पाने के बाद उन्होंने न केवल फेसबुक-इंस्टाग्राम वगैरह पर 13 दिनों तक अलग-अलग एंगल से अवार्ड लेते हुए तस्वीरें पोस्ट कीं, बल्कि मुझसे एक प्रेस विज्ञप्ति लिखवाई और उसे 'बमबम टाइम्स', 'टाप स्कैंडल' और 'आवारा खबरें' जैसे कई समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में पैसे देकर खबर छपवाई। हद ये कि उन खबरों की कतरनों को उन्होंने फिर 13 दिनों तक फेसबुक, वाट्सएप और इंस्टाग्राम वगैरह पर पोस्ट किया।

सच कहूं तो ये खुजली मुझे भी है, लेकिन जिस तरह ज्यादा लड़की देखने के चक्कर में कई बार लड़के कुंवारे रह जाते हैं, वैसे ही गली स्तर के अवार्ड को शुरुआती दौर में हिकारत की नजर से देखने की वजह से मैं भी खाली हाथ रह गया। मुहल्ले के कई अवार्डवीर 20-25 पुरस्कार झटक चुके हैं, लेकिन आज तक मेरा खाता भी नहीं खुल पाया है। मुहल्ले में कथित बुद्धिजीवी होते हुए पुरस्कार रहित होना कैबिनेट में बिना पोर्टफोलियो वाले मंत्री जैसा होना है। मैं पुरस्कार पाने की खुजली से अब मरा जा रहा हूं। वैसे नैतिकता का तकाजा तो यह है कि गड्ढे वाली सड़क पर चलते हुए इस भीषण महंगाई में तीन-तीन ईएमआइ के बोझ और स्कूल को बच्चों की फीस लगातार देने के बावजूद उसी स्कूल के अध्यापकों से बच्चों को ट्यूशन पढ़ाते हुए मैं जीवित बचा हुआ हूं तो सिर्फ इस कारनामे के लिए मुझे नोबेल पुरस्कार दिया जाना चाहिए। नोबेल पुरस्कार समिति सुना आपने?

response@jagran.com

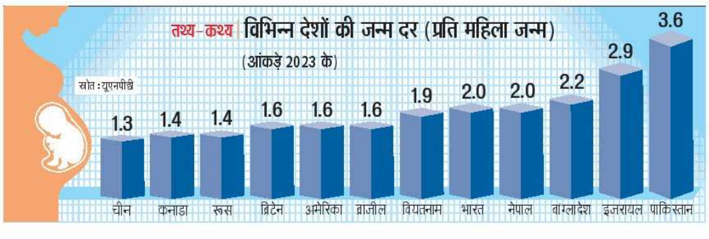

ऊर्जा

आत्म प्रवंचना

आत्म प्रवंचना एक मानसिक विकृति है जिसमें व्यक्ति अपनी कमियां छिपाकर खुद को समाज के समक्ष उस रूप में प्रस्तुत करता है, जैसा वह नहीं है। कपट की आधार भूमि पर पोषित यह आपराधिक कृत्य समाज को धोखा देने के उद्देश्य से किया जाता है, किंतु सच अधिक समय तक छिपता नहीं। उजागर होते ही आत्मिक पराभव का शिकार होना पड़ता है। विश्वास खंडित होने से सामाजिक प्रतिष्ठा दांव पर लग जाती है। स्वाभिमान को क्षति पहुंचने से जीवन मृतक तुल्य हो जाता है। अतएव आत्म प्रवंचना समाज को नहीं, स्वयं को धोखा देने का कुत्सित प्रयास है। जीवन के वास्तविक आनंद हेतु इससे बचने का प्रयास करना चाहिए।

आत्म प्रवंचना में मनुष्य अपनी कमियों को स्वीकार तो करता है, किंतु समाज में आदर पाने अथवा स्वार्थ पूर्ति के उद्देश्य से उन्हें छिपाकर लोगों को गुमराह करने का प्रयास करता है, जिससे लोग प्रवंचना के शिकार होते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं, किंतु झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा प्रमुख है। व्यक्तित्व में सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, सहजता एवं सरलता लाकर इससे बचा जा सकता है। आत्मिक शुचिता के साथ चारित्रिक दृढ़ता आत्म प्रवंचना से बचने का प्रमुख उपाय है। असत् पर आधारित होने से आत्म प्रवंचना न लौकिक जीवन के लिए श्रेयस्कर है, न आध्यात्मिक जीवन के लिए, क्योंकि दोनों की आधारभूमि सत् है। इसीलिए महर्षि अरविंद आत्म प्रवंचना को इन दोनों मार्गों की सबसे बड़ी बाधा मानते थे। मनुष्य द्वारा गलतियां स्वाभाविक हैं, किंतु जीवन के उत्कर्ष के लिए इन्हें छिपाने के बजाय दूर करना मानव का स्वभाव होना चाहिए। इसके लिए आत्म निरीक्षण की निष्पक्ष दृष्टि के साथ गलतियों की स्वीकारोक्ति और पुनरावृत्ति न करने की दृढ़ता जरूरी है। इससे चारित्रिक दोषों का परिहार और सद्गुणों का विकास होगा, जिससे आत्म सम्मान के साथ जीने का मार्ग प्रशस्त होगा।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

जमीन का कृषि मंत्री

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की सक्रियता किसी से छिपी नहीं है। जब मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री थे तो बिल्कुल जमीनी सक्रियता के कारण ही मामा बन गए थे। अब केंद्र में हैं, तो खेतों में ऐसे उतर रहे हैं जैसे पूरे खेतिहर हों। अब विज्ञानियों को मजबूर कर रहे हैं कि वे भी खेत तक जाएं और किसानों से रूबरू हों। उनका यह रूप किसानों को बेहद पसंद आ रहा है। उनकी इस सक्रियता से अपना ज्यादातर समय मंत्रालय में गुजारने वाले उनके मंत्रिमंडल के सहयोगी भी परेशान हैं। कुछ सहयोगियों ने उनकी सक्रियता को देखकर दौरे बढ़ाने को कहा है। देखना दिलचस्प होगा कि मामा की सक्रियता आने वाले दिनों में और क्या रंग दिखाती है।

दुर्घटना के बाद घटना

अहमदाबाद में हुए एअर इंडिया विमान हादसे के बाद नागरिक उड्डयन मंत्रालय सकते में है। असलियत में कोई समझ नहीं पा रहा कि हालात से कैसे निपटा जाए। केंद्रीय मंत्री ने अभी तक सिर्फ एक प्रेस कांफ्रेंस की है और उसमें सिर्फ लिखित बयान पढ़ा, कोई सवाल नहीं, कोई विवरण नहीं दिया। हादसे पर

राजरंग

गठित वायुयान दुर्घटना अन्वेषण ब्यूरो (एएआइबी) की आरंभिक जांच रिपोर्ट आ गई है जिसे मंत्रालय एक तरह से छूने को तैयार नहीं है। रिपोर्ट पर एक संक्षिप्त सूचना तीन दिन पहले मीडिया को दी गई थी। दो दिन बाद एक विदेशी मीडिया ने इस पर विस्तृत रिपोर्ट चला दी। शनिवार आधी रात के बाद इसे सार्वजनिक करने का फैसला किया गया, लेकिन मंत्रालय ने इसे अपनी वेबसाइट पर नहीं डालकर एएआइबी की वेबसाइट पर अपलोड किया। जब अमेरिका, ब्रिटेन का मीडिया इसे प्रमुख खबरों में दिखा रहा था, तब शनिवार को सुबह चार बजे इस रिपोर्ट को भारतीय मीडिया के लिए सार्वजनिक किया गया। मजेदार बात यह रही कि एएआइबी की वेबसाइट पर दिखाया गया कि यह रिपोर्ट प्रेस सूचना ब्यूरो पर उपलब्ध है, लेकिन वहां जाने पर कोई रिपोर्ट नहीं दिखती, न ही कोई प्रेस विज्ञप्ति।

थमा डील का डंका

भारत और अमेरिका के बीच ट्रेड डील...! कई दिनों से 'हाटकेक' बना यह मुद्दा अचानक ठंडा क्यों और कैसे पड़ गया? इसे लेकर बहुतों के मन में शंका-संशय हो सकता है, लेकिन अंदर की कहानी है कि डील के डंके पर सरकार का डंडा चला है। दरअसल इस मुद्दे पर भारत सरकार खामोशी से नजर बनाए हुए है कि ट्रेड की डील को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति कौन सा कार्ड चलेंगे, लेकिन उत्साही मीडिया चैनलों ने न जाने कितनी बार बाजी सजा दी और हरा-जीता भी दिया। आए दिन दावे किए कि आज या कल तक डील, अमेरिका ये चाहता है, भारत के मन में ये है... आदि। यह हवाबाजी न सिर्फ सरकार का सिरदर्द बढ़ा रही थी, बल्कि आयात-निर्यात से जुड़े कारोबारियों का भी ब्लडप्रेशर बढ़ा रही थी। आखिरकार सरकार को व्हाइट हाउस से पहले मीडिया हाउस पर फोकस करना पड़ा। दो टूक कह दिया गया है- वेट एंड वाच! उसका असर दिख भी रहा है।

सीएम सुईट

कर्नाटक में मुख्यमंत्री सिद्दरमैया अभी तक भले ही उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार पर भारी दिख रहे हों, लेकिन दिल्ली में सांकेतिक रूप में ही सही डीके शिवकुमार आगे निकल गए। हुआ यह कि पिछले दिनों डीके शिवकुमार और सिद्दरमैया, दोनों दिल्ली में थे। डीके शिवकुमार एक दिन पहले दिल्ली आ गए और कर्नाटक भवन की नई बिल्डिंग में स्थित सीएम सुईट में डेरा जमा लिया। अगले दिन जब सिद्दरमैया दिल्ली पहुंचे तो उन्हें कर्नाटक भवन की पुरानी बिल्डिंग में स्थित सीएम सुईट में ठहरना पड़ा। जबकि इसके पहले जब सिद्दरमैया दिल्ली में आए थे, तो नई बिल्डिंग स्थित सीएम सुईट में ही रुके थे। यही नहीं, डीके शिवकुमार अकेले प्रियंका गांधी वाड्रा से मिलने में भी सफल रहे।

पोस्ट

उत्तर प्रदेश में जलालुद्दीन द्वारा हजार से अधिक हिंदू लड़कियों के साजिशन इस्लाम में मत परिवर्तन का मामला सामने आया है, लेकिन प्रदेश के महत्वपूर्ण नेताओं ने महिला सुरक्षा के इस विषय पर एक शब्द बोलना उचित नहीं समझा। साकेत@saket71

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने अपने एक बयान से देश के प्रधानमंत्री मोदी ही नहीं, बल्कि भारत के मित्र देशों का भी मजाक बना दिया। यह स्टैंडअप कामेडी होती तो चल भी जाता था, लेकिन ऐसा बयान क्या एक मुख्यमंत्री पद से आना शोभनीय है?
मीनाक्षी जोशी@IMinakshiJoshi

गुजरात से लेकर बिहार और पुणे तक भारत में पुल गिर रहे हैं। बिना भ्रष्टाचार के ऐसा संभव नहीं है। हमें इन्फ्रास्ट्रक्चर की गुणवत्ता और सुरक्षा के प्रति गंभीर होना पड़ेगा।
शेखर गुप्ता@ShekharGupta

बोइंग को क्लिनचिट देने के लिए पायलट पर दोष मढ़ा जा रहा है। एक पायलट ने कहा कि तुमने इंजन क्यों बंद कर दिया तो दूसरे पायलट ने उत्तर दिया कि मैंने बंद नहीं किया। हर्ष वर्धन त्रिपाठी@MediaHarshVT

जनपथ

गहरी साजिश लग रही रचा गया छलछंद,
वरना होते क्यों भला दोनों इंजन बंद।
दोनों इंजन बंद ठप्प ईंधन सप्लाई,
गिरता गया विमान न ले पाया ऊंचाई।
खुराफात पर आज नजर है सबकी ठहरी,
करिए जमकर जांच हुई जो साजिश गहरी!

\- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 35 अंक 359

****

अर्थ जागरण

महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में आत्मनिर्भरता के व्यापक प्रयासों के तहत हैदराबाद में रेअर अर्थ मैग्नेट का उत्पादन शुरू किया जाएगा। - **जी किशन रेड्डी**, केंद्रीय खनन मंत्री

समझदार निवेशक को रास्ते से नहीं भटका सकती बाजार में हेराफेरी

सोचिए जेन स्ट्रीट ने किया क्या? उन्होंने दिन की शुरुआत में बैंक निफ्टी के स्टाक्स खरीदे ताकि इंडेक्स ऊपर जाए। साथ ही आप्शंस में शार्ट पोजिशन ली। जब इंडेक्स ऊपर गया और फिर नीचे आया, तो उन्हें मुनाफा हुआ. यह 'पंप-एंड-डंप' स्कीम का हाई-टेक, एल्गोरिदमिक वर्जन है, जो पूंजी और गति के बल पर चलता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि यह जोड़-तोड़ केवल कुछ घंटों या दिनों में काम करता है। यह महीनों या सालों की रणनीति नहीं है। यह उसी ट्रेडिंग माडल पर आधारित है जिसे हाल के वर्षों में रिटेल निवेशकों ने तेजी से अपनाया है। आप्शन, फ्यूचर और हाइपर-रिएक्टिव ट्रेडिंग। यही सबसे ज्यादा जोखिम वाला इलाका है।

सेबी के आंकड़े बताते हैं कि वित्त वर्ष 2021 से 2024 के बीच 91 से 93 प्रतिशत रिटेल डेरिवेटिव ट्रेडरों ने पैसा गंवाया। अक्टूबर 2024 के सुधारों के बाद भी यह आंकड़ा 91 प्रतिशत ही बना रहा। यह आंकड़े वही कहानी कहते हैं जो हर दिन नजर आती है। निवेशक तुरंत मुनाफे की चाह में आप्शंस में कूदते हैं और नुकसान उठाते हैं।

अब सवाल यह नहीं है कि मार्केट में हेरफेर होता है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या इससे आपकी निवेश रणनीति बदलनी चाहिए? अगर आप किसी समझदारी से चुनी गई कंपनी में लंबे समय के लिए निवेश कर रहे हैं, तो क्या फर्क पड़ता है अगर कोई एल्गोरिदम कुछ घंटों के लिए इंडेक्स को घुमा रहा है? अगर आपका निवेश कई सालों के नजरिये से है, तो रोज के उतार-चढ़ाव से विचलित होना व्यर्थ है। हेराफेरी सिर्फ अल्पकालिक भ्रम पैदा करती है। जो लोग इन नकली संकेतों पर प्रतिक्रिया करते हैं, सिर्फ वही जाल में फंसते हैं। अगर आप इन संकेतों को देख ही नहीं रहे, तो आप उस खेल का हिस्सा ही नहीं हैं। इसीलिए बार-बार एक ही बात दोहराई जाती है। वही बिजनेस खरीदिए जिसे आप समझते हैं, लंबे समय तक होल्ड करिए और हर रोज की खबरों के शोरगुल से खुद को दूर रखिए।

जेन स्ट्रीट का मामला एक और बात साफ करता है, सबसे ज्यादा नुकसान उन्हीं को हुआ जो डेरिवेटिव्स में जल्दी कमाई की होड़ में लगे थे। वित्त वर्ष 2025 में इन निवेशकों ने 1.05 लाख करोड़ रुपये गंवाए। ये वैसे भी एक ऐसा खेल खेल रहे थे जिसमें उनके खिलाफ ही दांव लगा था। हेराफेरी ने इसे और बदतर कर दिया। लेकिन हेरफेर करने वाले जो नहीं कर सकते, वो यह कि किसी अच्छे बिजनेस की वैल्यू नहीं बदल सकते। एक मुनाफे वाली कंपनी को बेकार नहीं बना सकते। और किसी कमज़ोर कंपनी को विजेता नहीं बना सकते। हेराफेरी बस शोर है, असलियत नहीं।

इसलिए असली सुरक्षा बेहतर कानून से नहीं, बल्कि बेहतर निवेश व्यवहार से आती है। स्टाक्स की बजाय बिजनेस पर ध्यान दीजिए। घंटों की बजाय सालों में सोचिए। ऐसा पोर्टफोलियो बनाइए जो बाजार के तूफानों को भी झेल सके।

जेन स्ट्रीट का मामला अदालत में तय होगा। लेकिन निवेशकों के लिए सबक एकदम सीधा है। बुनियादी बातों से न हटिए, डेरिवेटिव्स की दुनिया से दूरी बनाए रखिए। याद रखिए कि लंबी अवधि में हमेशा बुनियादी वैल्यू की जीत होती है। फिर चाहे खेल कभी-कभी गड़बड़ वाला ही क्यों न हो।

धीरेंद्र कुमार, संपादक, हिंदी डाट वैल्यूरिसर्चआनलाइन डाट काम

बोनस

सेबी की जेन स्ट्रीट के खिलाफ हालिया कार्रवाई ने भारत के ट्रेडिंग समुदाय में हलचल मचा दी है। आरोप गंभीर हैं। कथित तौर पर बैंक निफ्टी इंडेक्स में मिलीभगत से खरीद-बिक्री का जोड़-तोड़, जिससे अरबों का मुनाफा कमाया गया, जबकि रिटेल ट्रेडरों को भारी नुकसान हुआ। गुस्सा जायज है। जब रेगुलेटर कहता है कि 91 प्रतिशत व्यक्तिगत ट्रेडर डेरिवेटिव्स में पैसा गंवाते हैं और विदेशी संस्थाएं सुनियोजित तरीके से बाजार को नचा रही हैं तो यह मानना स्वाभाविक है कि पूरा खेल ही गड़बड़ है। लेकिन मार्केट में ऐसा होता है और इसका असर केवल उसी ट्रेडिंग पर होता है जो अल्पकालिक और सट्टेबाजी वाली होता है। लंबी अवधि के निवेशकों के लिए इसका कोई खास मतलब नहीं। समझदार निवेशकों को बाजार में हेराफेरी उनके रास्ते से भटका नहीं सकती है।

जुलाई के दूसरे सप्ताह में शुद्ध निवेशक बने एफपीआइ

जेएनएन, नई दिल्ली: जुलाई के पहले सप्ताह में 1,400 करोड़ रुपये की निकासी करने वाली विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआइ) दूसरे सप्ताह में शुद्ध निवेशक बन गए हैं। नेशनल सिक्योरिटीज डिपाजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) के डाटा के अनुसार, 7-11 जुलाई के दौरान एफपीआइ ने भारतीय इक्विटी बाजार में कुल 5,259.19 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया है। इसके साथ जुलाई में एफपीआइ का कुल निवेश 3,839 करोड़ रुपये हो गया है।

एनएसडीएल के डाटा के अनुसार, एफपीआइ ने इस सप्ताह पांचों कारोबारी सत्रों के दौरान शुद्ध रूप से निवेश किया है। इस दौरान आठ जुलाई मंगलवार को सबसे ज्यादा 2,771.19 करोड़ रुपये का निवेश किया। इस ताजा निवेश के साथ कैलेंडर वर्ष 2025 में एफपीआइ की कुल निकासी घटकर 74,062 करोड़ रुपये रह गई है।

जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के मुख्य निवेश रणनीतिकार वीके विजयकुमार का कहना है कि भारत के मुकाबले अन्य बाजार अभी भी सस्ते बने हुए हैं। ऐसे में आने वाले समय में विदेशी निवेशक भारत से और निकासी कर सकते हैं।

5,259 करोड़ रुपये का निवेश किया एफपीआइ ने 7-11 जुलाई के दौरान

74,062 करोड़ रह गई इक्विटी से एफपीआइ की निकासी 2025 में

कर बोझ में कमी, स्थिर महंगाई से बढ़ेगी खपत

केयरएज रेटिंग्स ने कृषि उत्पादन के लिए अनुकूल दृष्टिकोण से ग्रामीण खपत बढ़ने की उम्मीद जताई

नई दिल्ली, आइएएनएस: आयकर बोझ में कमी, स्थिर महंगाई, ब्याज दरों में कमी और कृषि उत्पादन के लिए अनुकूल दृष्टिकोण से ग्रामीण आय को समर्थन मिलेगा। केयरएज रेटिंग्स ने ताजा रिपोर्ट में कहा कि इन सभी संकेतों से पूरे देश, खासतौर पर ग्रामीण खपत बढ़ने की संभावना है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में निजी खपत व्यय की करीब 60 प्रतिशत हिस्सेदारी है और यह देश के विकास पर गहरा प्रभाव डालता है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि घरेलू खपत में लगातार सुधार निजी क्षेत्र के पूंजी खर्च में महत्वपूर्ण वृद्धि के लिए आवश्यक है। हम चालू वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान निजी खपत की वृद्धि 6.2 प्रतिशत रहने की उम्मीद कर रहे हैं। पिछले तीन वर्षों में इसका औसत 6.7 प्रतिशत रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, लंबी अवधि में घरेलू आय को प्रभावित करने वाले कारकों की निगरानी करना महत्वपूर्ण होगा, ताकि निजी खपत में स्वस्थ वृद्धि सुनिश्चित की जा सके। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में समग्र खपत की वृद्धि सामान्यतः स्वस्थ रही है। हालिया संकेत शहरी मांग में बढ़ते दबाव को दर्शाते हैं, जबकि ग्रामीण मांग मजबूत बनी हुई है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि चालू वित्त वर्ष में अनुकूल कृषि उत्पादन और महंगाई में कमी से ग्रामीण खपत को समर्थन मिलने की उम्मीद है।

भारत का घरेलू कर्ज उभरती अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कम: रिपोर्ट में कहा गया है कि जब आय में वृद्धि कमजोर होती है, तब घरेलू कर्ज बढ़ता है। रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2023-24 में घरेलू कर्ज जीडीपी का 41 प्रतिशत और खर्च करने योग्य शुद्ध आय 55 प्रतिशत थी। हालांकि, भारत का घरेलू कर्ज कुछ उभरती अर्थव्यवस्थाओं- जैसे थाइलैंड (जीडीपी का 87 प्रतिशत), मलेशिया (67 प्रतिशत) और चीन (62 प्रतिशत) की तुलना में कम था। रिपोर्ट में कहा गया है कि घरेलू देनदारियों के असुरक्षित खंड की निकटता से निगरानी करना आवश्यक है, जो महामारी के बाद के वर्षों में बढ़ा है। यह आय वृद्धि में कमी और इस खंड में बढ़ती डिफाल्ट दरों को देखते हुए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

खपत में बढ़ोतरी के प्रमुख कारण

- आरबीआइ की ओर से लगातार तीन बार ब्याज दरों में कटौती
- 12 लाख रुपये तक की कर-मुक्त आय से कर बोझ में कमी
- नीतिगत उपायों से खुदरा और थोक महंगाई में लगातार कमी आना
- इस वर्ष मानसून के सामान्य से बेहतर रहने की संभावना

- निजी खपत व्यय की देश की जीडीपी में करीब 60 प्रतिशत हिस्सेदारी
- चालू वित्त वर्ष में निजी खपत की वृद्धि 6.2 प्रतिशत रहने की उम्मीद

रिपोर्ट में ग्रामीण क्षेत्रों में मांग मजबूत बने रहने का संकेत दिया गया है ● इंटरनेट मीडिया

जून में 41,117 करोड़ रुपये रहा जीवन बीमा उद्योग का नया कारोबार प्रीमियम

एक अन्य रिपोर्ट में केयरएज रेटिंग्स ने कहा है कि जून 2025 में भारतीय जीवन बीमा उद्योग का नया कारोबार प्रीमियम 41,117.1 करोड़ रुपये रहा है। संशोधित सरेंडर मूल्य नियमों, कम बिक्री और समूह एकल प्रीमियम में कमी के बावजूद उद्योग यह प्रीमियम हासिल करने में कामयाब रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, जून के नए कारोबार प्रीमियम में वार्षिक आधार पर 2.5 प्रतिशत की वृद्धि रही है। हालांकि, यह जून 2024 में 20 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में काफी कम है। केयरएज रेटिंग्स का अनुमान है कि जीवन बीमा उद्योग अगले तीन से पांच वर्षों में 10 प्रतिशत से 12 प्रतिशत की दर से बढ़ता रहेगा। इस वृद्धि में उत्पाद नवाचार, सहायक नियमों, तेज डिजिटलाइजेशन, प्रभावी वितरण और बेहतर ग्राहक सेवाओं की भूमिका रहेगी।

कंपनियों को बतानी होगी कार्यालय की सटीक लोकेशन, फर्जीवाड़ा रुकेगा

जागरण संवाददाता, कानपुर : फर्जी कंपनियां खोलकर टैक्स में हेराफेरी व अन्य अनियमितता करने वालों पर शिकंजा कसने के लिए कारपोरेट मामलों का मंत्रालय (एमसीए) 14 जुलाई यानी सोमवार से नए नियम लागू करने जा रहा है। इसके तहत कंपनियों को अन्य जानकारियों के साथ ही पंजीकृत कार्यालय का अक्षांश और देशांतर यानी सटीक लोकेशन बतानी होगी। कार्यालय की स्पष्ट दिखने वाली फोटो भी मंत्रालय के पोर्टल पर अपलोड करनी होगी। ऐसा न होने पर कंपनी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। कंपनी सचिव संस्थान कानपुर चैप्टर के पूर्व चेयरमैन गोपेश साहू ने बताया कि यह जानकारी वर्ष में दो बार देनी होगी।

जीएसटी प्रणाली लागू होने के बाद माना जा रहा था कि फर्जी कंपनियों का गठन बंद हो जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा। बड़ी संख्या में फर्जी कंपनियां बनती हैं। कागजों पर ही खरीद-बिक्री दिखाकर करोड़ों का इनपुट टैक्स क्रेडिट (आइटीसी) लेती हैं और गायब हो जाती हैं। इसके साथ ही फर्जी कंपनियां बनाकर सिर्फ बिल बेचने का भी खेल होता है। कंपनियां बिल बेचकर कमीशन लेती हैं। इन्हीं बिलों के सहारे आइटीसी क्लेम किया जाता है। पिछले आठ वर्षों में बहुत सारी कंपनियां बिलों को फर्जी तरीके से बेचते पकड़ी गई हैं।

इस तरह की गड़बड़ियों को रोकने के लिए एमसीए नई व्यवस्था लागू कर रहा है। इसके लिए मंत्रालय ने अपने वी-2 पोर्टल को वी-3 के नाम से अपडेट कर दिया है। यह 14 जुलाई से शुरू हो जाएगा और इसमें कंपनियों को अपने दूसरी तमाम जानकारियों के साथ ही पंजीकृत कार्यालय की लोकेशन दर्ज करानी होगी। गोपेश साहू के अनुसार, ऐसा इसलिए किया गया है कि अगर कंपनी ने कार्यालय का स्थान बदला भी तो नए स्थान की जानकारी मंत्रालय के पास रहेगी। कोई कंपनी एक बार जानकारी देने के बाद यह कहकर नहीं बच सकेगी कि उसने कार्यालय का स्थान बदल दिया था।

- कारपोरेट मामलों के मंत्रालय के पोर्टल पर सोमवार से लागू होगी नई व्यवस्था
- फर्जी कंपनियां खोलकर टैक्स में हेराफेरी व अन्य अनियमितताओं पर लगेगी रोक

राष्ट्रीय जागरण

एक नजर में

'जस्टिस वर्मा मामले में कोई समर्थन न करे विपक्ष'

नई दिल्ली: राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने शनिवार को कहा कि जस्टिस यशवंत वर्मा पर महाभियोग का प्रस्ताव लाने के सरकार के किसी भी प्रयास का विपक्ष को तब तक समर्थन नहीं करना चाहिए जब तक कि न्यायमूर्ति शेखर यादव की सांप्रदायिक टिप्पणी की जांच सुनिश्चित नहीं हो जाती। पूर्व कानून मंत्री ने स्पष्ट किया कि वर्मा का मामला भ्रष्टाचार से संबंधित नहीं है और जो पार्टियां न्यायाधीश के खिलाफ कार्रवाई का समर्थन करने का विचार कर रही हैं, उन्हें अपने रुख पर पुनर्विचार करना चाहिए। (प्रेट्र)

कूनो में शिकार के दौरान घायल मादा चीता की मौत

श्योपुर: मप्र के कूनो नेशनल पार्क में आठ साल की मादा चीता नाभा की मौत हो गई। शिकार की कोशिश में वह घायल हो गई थी। उसके पैर में फ्रैक्चर था। उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। भारत में चीता पुनर्वास परियोजना के तहत नाभा को सितंबर, 2022 में नामीबिया से लाया गया था। चीता परियोजना के सीसीएफ उत्तम कुमार शर्मा ने बताया कि घायल नाभा को बाड़े में रखा गया था। पोस्टमार्टम के बाद मौत के कारणों के बारे में और जानकारी मिल सकेगी। (नईदुनिया प्रतिनिधि)

'मध्यस्थता विवादों के समाधान का पसंदीदा तरीका बन रहा है'

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि भारत अब स्थापित मध्यस्थता केंद्रों की बराबरी करने का प्रयास नहीं कर रहा है, बल्कि सक्रिय रूप से इस बात की "पुनर्कल्पना" कर रहा है कि एक गतिशील और बहुध्रुवीय कानूनी व्यवस्था में मध्यस्थता कैसी हो सकती है और होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मध्यस्थता का भविष्य न केवल अंतरराष्ट्रीय है, बल्कि भारतीय भी है। मध्यस्थता को अब एक गौण या वैकल्पिक तंत्र के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि यह विवादों के समाधान का एक पसंदीदा तरीका बनता जा रहा है। वह 10 जुलाई को स्वीडन के गोथेनबर्ग में 'अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता की पुनर्कल्पना : एक वैश्विक मध्यस्थता स्थल के रूप में भारत का उदय' विषय पर एक गोलमेज वार्ता में बोल रहे थे। (प्रेट्र)

भगोड़े हथियार डीलर भंडारी को कानूनी उपाय के लिए मिला समय

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : अदालत ने यूके में रह रहे हथियार डीलर संजय भंडारी को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित करने के आदेश के खिलाफ कानूनी उपाय अपनाने के लिए समय दिया है। राउज एवेन्यू स्थित विशेष न्यायाधीश संजय जिंदल ने शनिवार को ईडी की जब्ती याचिका पर सुनवाई स्थगित करते हुए भंडारी के अधिवक्ता को दो अगस्त तक की मोहलत दी।

ईडी ने याचिका में भंडारी और उनकी पत्नी के नाम पर भारत, दुबई और यूके में अचल संपत्ति, नोएडा और गुरुग्राम में बेनामी संपत्तियां, वसंत विहार और पंचशील शापिंग काम्प्लेक्स जैसी संपत्तियां, बैंक खाते, आभूषण और नकदी का जिक्र किया है।

विशेष न्यायाधीश संजीव अग्रवाल ने पांच जुलाई को संजय भंडारी को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया था।

आध्यात्मिक शांति के लिए गुफा में रह रही रूसी महिला को बचाया

गोकर्ण, एएनआइ : उत्तर कन्नड़ जिले की रामतीर्थ पहाड़ियों में स्थित एक गुफा से रूस की एक महिला और उसके दो छोटे बच्चों को निकाला गया। रूसी महिला आध्यात्मिक शांति की तलाश में वहां रह रही थी।

महिला की पहचान 40 वर्षीय नीना कुटीना उर्फ मोही के रूप में हुई है। वह 'बिजनेस वीजा' पर रूस से भारत आई थी। वह सनातन धर्म और भारत की आध्यात्मिक परंपराओं से बहुत ज्यादा प्रभावित है। इसलिए वह गोवा के रास्ते तटीय शहर गोकर्ण पहुंची थी। पुलिस निरीक्षक श्रीधर और उनकी टीम ने बताया कि मोही के दो बच्चे भी हैं। इनका नाम छह वर्षीय प्रेया और चार वर्षीय अमा है। ये दो सप्ताह से जंगल के बीचों बीच और पूरी तरह से एकांत में रह रहे थे।

सोनम के भाई ने राजा के भाई को लौटाए 10 लाख रुपये के आभूषण

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या और उसमें पत्नी सोनम का हाथ होने की पुष्टि के बाद अब दोनों परिवारों में बढ़ी तल्खी सार्वजनिक भी होने लगी है। शादी में करीब 10 लाख रुपये के आभूषण राजा के परिवार की ओर से सोनम को दिए गए थे। सोनम के भाई गोविंद ने शनिवार को राजा के भाई विपिन रघुवंशी को आभूषण वापस कर दिए। इसकी बाकायदा थाने में लिखा-पढ़ी भी करवाई गई। हालांकि, गोविंद ने राजा को उपहार में दी गई कार, वाशिंग मशीन, फ्रीज लेने से इन्कार कर दिया है। सोनम के पिता देवी सिंह ने कहा कि सामान बेटी को कन्यादान के रूप में दिया था। वह हम कभी नहीं लेंगे।

इंदौर के राजा रघुवंशी की सोनम से 11 मई को शादी हुई थी। 20 मई को दोनों हनीमून मनाने मेघालय के शिलांग गए थे। सोनम ने अपने कथित प्रेमी राज कुशवाहा के साथ षड्यंत्र रचकर आकाश, आनंद व विशाल उर्फ विक्की की सहायता से 23 मई को राजा की हत्या कर दी।

कश्मीर में 13 जुलाई की आड़ में अलगाववाद को हवा देने का षड्यंत्र

जुलूस निकालने की अनुमति से प्रशासन का इन्कार, कश्मीर केंद्रित दलों ने की थी तैयारी, भाजपा ने बताया बड़ा षड्यंत्र

नवीन नवाज ● जागरण

श्रीनगर: कश्मीर में 13 जुलाई के अवकाश व शहीदी दिवस की आड़ में अलगाववादी व सांप्रदायिक भावनाओं को हवा देकर अपनी राजनीतिक दुकान को पक्का करने में जुटे कश्मीर केंद्रित राजनीतिक दलों का मंसूबा फिलहाल विफल हो गया है। प्रशासन ने किसी भी राजनीतिक दल को ख्वाजा बाजार नक्शबंद साहब में बने कब्रिस्तान पर जमा होने या जुलूस निकालने की अनुमति नहीं दी है। वहीं सत्ताधारी नेशनल कान्फ्रेंस हो या पीडीपी, पीपुल्स कान्फ्रेंस हो या अपनी पार्टी ने रविवार को 13 जुलाई 1931 को मारे गए 22 लोगों की कब्र पर श्रद्धांजलि अर्पित करने की तैयारी कर रखी थी। इसी बीच, कांग्रेस ने इस मुद्दे से खुद को दूर रखते हुए कहा कि यह उसका सरोकार नहीं है। वहीं भाजपा ने इसे अलगाववाद को हवा देने जैसा कहा।

बता दें कि 13 जुलाई 1931 में महाराजा हरि सिंह के खिलाफ विद्रोह की शुरुआत हुई थी। इसमें महाराजा के सिपाहियों की गोली से 22 लोग मारे गए थे।

क्या कहते हैं राजनीतिक दल

- पीडीपी प्रमुख महबूबा ने कहा कि नेकां भाजपा के आगे घुटने टेक चुकी है
- पीपुल्स कान्फ्रेंस के सज्जाद लोन ने कहा कि कश्मीरियों को बेइज्जत किया जा रहा है, जो असहनीय है।
- नेकां के अली मोहम्मद सागर ने जिला प्रशासन को पत्र लिखकर सूचित किया कि वह 13 जुलाई को शहीदी दिवस मना रही है। पार्टी अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित करने जाएंगे।
- प्रदेश कांग्रेस प्रमुख तारिक हमीद करा ने इस विषय में बातचीत करते हुए कहा कि हमारा इससे सरोकार नहीं है, यह हमारा एजेंडा नहीं है।
- भाजपा विधायक विक्रम रंधावा ने कहा कि जो 13 जुलाई के अवकाश की बात कर रहे हैं, वह अलगाववाद के बीज बोने का प्रयास कर रहे हैं।

महिला ने पति संग मिलकर प्रेमी की हत्या कर शव जलाया

जासं, फतेहपुर : दो जुलाई से लापता युवक की हत्या महिला ने अपने पति के साथ मिलकर की थी। महिला का उससे प्रेम प्रसंग चल रहा था और पति उसे रास्ते से हटाने का दबाव बना रहा था। महिला ने प्रेमी को घर बुलाया और पति की मदद से रस्सी से उसका गला कसकर मार डाला। उसी की बाइक से उसका शव रिंद नदी के किनारे ले जाकर जला दिया। पहचान न हो, इसलिए अधजले शव का सिर व हाथ के पंजे काटकर रिंद नदी के किनारे अलग-अलग फेंक दिया था। बाइक भी वहीं छोड़ दी।

कसियापुर के 32 वर्षीय राहुल पटेल अपनी मां के साथ कानपुर के स्वर्ण जयंती विहार सेक्टर पांच में किराये के कमरे में रहता था। दो जुलाई को स्वजन ने कानपुर के सेन पश्चिम पारा थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई थी। नौ जुलाई को रिंद नदी के किनारे सिर विहीन शव बरामद किया। सिर एक किमी दूर मिला था। भाई सुशील पटेल ने चश्मा, बाइक आदि देखकर राहुल पटेल की शिनाख्त कर ली। जांच के बाद पुलिस ने आरोपित रामभवन और उसकी पत्नी सरिता को हिरासत में ले लिया था। एसपी अनूप कुमार सिंह ने बताया कि दंपती को जेल भेजा जा रहा है।

सड़क सुरक्षा पर चिंतित नहीं राज्य, डिवाइस लगे न ही कमांड सेंटर बने

जितेंद्र शर्मा ● जागरण

नई दिल्ली : तमाम राजनीतिक मुद्दों के लिए संघवाद पर हायतौबा करने वाली अधिकतर राज्य सरकारों का सच यह है कि जन सुरक्षा से जुड़े काम से उनका कोई सरोकार नहीं है। बढ़ते सड़क हादसे चिंता का कारण बने हुए हैं, इसकी रोकथाम को लेकर जितने उदासीन वाहन चालक या संचालक हैं, उतनी ही बेपरवाह राज्य सरकारें भी हैं। यही वजह है कि विशेषज्ञों की सलाह पर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने सड़क सुरक्षा के लिए वाहनों को व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग डिवाइस से लैस करते हुए कंट्रोल एंड कमांड सेंटर स्थापित करने के लिए निर्भया फंड से बजट भी निर्धारित कर दिया, तब भी राज्यों ने इसे लागू करने में रुचि नहीं ली।

सड़क सुरक्षा जैसे मुद्दे की गंभीरता को समझाने के लिए यह आंकड़ा दोहराना आवश्यक है कि देश में हर साल एक लाख 70 हजार से लेकर एक लाख 80 हजार लोगों की सड़क हादसों में मौत हो जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यातायात नियमों का पालन करने की पहली जिम्मेदारी वाहन चालकों की ही है। देश की विडंबना यह है कि अधिकतर आमजन यातायात नियमों का पालन नहीं करना चाहते और सरकारें पालन कराने में असहाय हैं या फिर बिल्कुल बेपरवाह हैं। यूं तो बहुत सारे नियम और योजनाएं हैं, जो कागज से सड़क पर उतर ही नहीं पाई हैं, लेकिन इस बीच एक महत्वपूर्ण योजना की चर्चा की जा सकती है, जिसके अमल से न सिर्फ यात्रा के दौरान महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित होती, बल्कि विशेषज्ञ मानते हैं कि इससे गलत लेन ड्राइविंग, ओवरस्पीड, सिग्नल जंप से लेकर मोटर ट्रांसपोर्ट वर्कर्स एक्ट के प्रविधान के अनुरूप चालकों के एक दिन में अधिकतम आठ घंटे ड्यूटी की भी निगरानी की जा सकती है।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा परिषद के सदस्य डा. कमल सोई का कहना है कि दिल्ली के निर्भया कांड के बाद महिला सुरक्षा बड़ा मुद्दा था। यात्रा के दौरान महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से परिवहन मंत्रालय में भी निर्भया फंड बनाया गया। विशेषज्ञों ने सुझाव दिया कि व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग डिवाइस सभी पब्लिक ट्रांसपोर्ट में लगा दिए जाएं तो महिला सुरक्षा के साथ ही यातायात नियमों का पालन कराने से लेकर चालकों की निगरानी भी की जा सकती है। इस पर मंत्रालय ने 463 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित करते हुए योजना शुरू कर दी। इसमें केंद्रांश के साथ राज्य सरकारों को भी वित्तीय भागीदारी करनी थी।

डा. सोई का कहना है कि कुछ राज्यों ने रुचि जरूर दिखाई, लेकिन इसे पूरी तरह अभी तक किसी भी राज्य ने लागू नहीं किया है। वह दावा करते हैं कि कई पश्चिमी देशों में इसी तकनीक से सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाया गया है। वह मानते हैं कि यातायात नियमों का पालन कराने में गृह मंत्रालय को अपनी भूमिका बढ़ानी चाहिए, क्योंकि उसके पास परिवहन मंत्रालय की तुलना में अधिक संख्या बल है। वहीं, मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि 15 जनवरी, 2020 से चल रही इस योजना में तीस राज्यों ने प्रस्ताव जरूर दिए थे, लेकिन फिर उसे लागू करने में रुचि सिर्फ बिहार, हिमाचल प्रदेश और पुदुचेरी ने दिखाई। हालांकि, धरातल में इस पर कहीं भी काम नहीं हो सका है। इसके अलावा चालक को झपकी के कारण होने वाली मौतों के आंकड़े दर्ज करने और चालकों के आठ घंटे ड्यूटी के नियम का पालन कराने से संबंधित अंतरिम याचिका वरिष्ठ अधिवक्ता केसी जैन ने भी सुप्रीम कोर्ट में लगाई है।

- निर्भया फंड से कंट्रोल एंड कमांड सेंटर बनवाने के लिए रखा गया था 463 करोड़ रुपये का बजट
- विशेषज्ञों का दावा, महिला सुरक्षा के साथ वाहनों और चालकों की निगरानी के लिए योजना है कारगर

चित्रकूट में उफनाई मंदाकिनी, सड़क पर चल रहीं नावें

- 100 मकान ढहे, मलबे में दबकर दो की मौत, मप्र के रास्ते डूबने से संपर्क कटा
- रामघाट में लोहे के पुल तक पहुंचा पानी, रजौला पुल के ऊपर से पानी बह रहा

जागरण टीम, कानपुर : बुंदेलखंड और कानपुर मंडल के जिलों में शुक्रवार आधी रात के बाद से शनिवार सुबह तक झमाझम बारिश हुई। चित्रकूट में 24 घंटे में 100 मिमी से ज्यादा पानी बरसा। मध्य प्रदेश के जिला सतना में अधिक बारिश के कारण मंदाकिनी नदी विकराल रूप धारण कर चुकी है। गुरुवार सुबह नदी खतरे के निशान 126.50 मीटर से पांच मीटर ऊपर बह रही थी। रामघाट में चार दर्जन दुकानें, तुलसी मंदिर और आरती स्थल जलमग्न हो गए हैं। कई स्थानों पर नावें चलानी पड़ीं। हनुमानधारा बाईपास पर रजौला पुल के ऊपर से पानी बह रहा है, जिससे मप्र का संपर्क टूट गया है।

जिला मुख्यालय में मंदाकिनी का पानी तरौंहा कस्बे में घुस गया है। कर्वी-तरौंहा मार्ग पर नावें लगाई गई हैं। मानिकपुर में बरदहा नदी में बाढ़ का पानी चमरौंहा रपटा में ऊपर से बह रहा है, जिससे मानिकपुर और मप्र के डभौरा तथा अन्य दो दर्जन गांवों का संपर्क टूट गया है। बरदहा के तेज बहाव में मानिकपुर-धारकुंडी मार्ग पर निर्माणाधीन पुल का करीब पांच मीटर एप्रोच मार्ग बह गया है। इससे धारकुंडी सहित करीब सौ गांवों का संपर्क बाधित हो गया है। उप्र और मप्र को जोड़ने वाले लोहे के पुल से बाढ़ का पानी छू रहा है।

पटरी धंसने से 35 मिनट खड़ी रही ट्रेन : बांदा, हमीरपुर और जालौन में यमुना, बेतवा और केन नदी का जलस्तर बढ़ गया है। कानपुर-कासगंज रूट पर चौबेपुर के मरियानी गांव के पास मिट्टी कटने से पटरी धंस गई, जिससे रेल यातायात बाधित रहा। इस दौरान कालिंदी एक्सप्रेस करीब 35 मिनट खड़ी रही।

मंदाकिनी की बाढ़ में डूबा रामघाट व आसापास का क्षेत्र ● सौ. : प्रशासन

टिहरी में पेड़ के नीचे दबकर दो बच्चों की मौत

जासं, देहरादून: उत्तराखंड में वर्षा व भूस्खलन से परेशानी बढ़ी हुई है। चार धाम यात्रा सुचारू है, लेकिन यात्रा राजमार्ग कई स्थानों पर भूस्खलन के कारण खतरनाक बने हैं। राज्य में 105 संपर्क मार्ग मलबा आने से अवरुद्ध हैं। टिहरी जनपद के नैल गांव में आंधी से गिरे पेड़ के नीचे दबकर दो बच्चों की मौत हो गई। दोनों स्कूल से लौटते समय आंधी-वर्षा से बचने के लिए पेड़ के नीचे रुके थे, तभी हादसा हो गया। मौसम विभाग ने देहरादून, नैनीताल व बागेश्वर में भारी वर्षा का आरेंज अलर्ट जारी किया है।

पहाड़ दरकने से कीरतपुर-मनाली फोरलेन बंद

जासं, मंडी : हिमाचल में वर्षा व भूस्खलन के दो राष्ट्रीय राजमार्ग के अलावा 252 सड़कें बंद हैं। मंडी में शुक्रवार को पहाड़ दरकने से कीरतपुर-मनाली फोरलेन बाधित हो गया। एक बरात भी फंस गई।

****

फ्यूल स्विच के 'रन' से 'कटआफ' होने की कहानी

अहमदाबाद में 12 जून को हुए एअर इंडिया के बोइंग 787-8 विमान हादसे पर शुरुआती जांच रिपोर्ट आ गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि विमान के टेकआफ के तुरंत बाद दोनों इंजन के लिए फ्यूल सप्लाई बंद हो गई थी। भारत के एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टीगेशन ब्यूरो (एएआइबी) द्वारा शुक्रवार को जारी की गई रिपोर्ट के अनुसार फ्यूल स्विच एक सेकेंड के अंदर 'रन' से 'कटआफ' मोड में चले गए। इसकी वजह से विमान ने थ्रस्ट खो दिया। अब बहस इस दिशा में बढ़ चली है कि फ्यूल सप्लाई कैसे बंद हुई। क्या यह मानवीय चूक का नतीजा है या तकनीकी खराबी। पड़ताल पर एक नजर:

लैंडिंग गियर पूरी तरह से वापस नहीं आ सका था। विंग फ्लैप और स्लैट्स एक्सटेंडेड पोजिशन में थे। टेकआफ कान्फिगरेशन के हिसाब से यह सही था।

फ्यूल कटआफ के कारण

- **मानवीय गलती:** कैप्टन सुमीत सभरवाल या फर्स्ट आफिसर क्लाइव कुंदर ने अनजाने में दोनों फ्यूल कंट्रोल स्विच को कटआफ पर कर दिया होगा। उन्होंने इसे कोई और कंट्रोल स्विच समझ लिया होगा या किसी दूसरी समस्या पर गलत रिएक्शन दिया होगा। कुछ विश्लेषकों के अनुसार, पायलट का इरादा शायद एक इंजन के फ्यूल स्विच कटआफ पोजिशनप में लाना रहा होग लेकिन गलती से दोनों स्विच कटआफ पोजिशन में आ गए। मिसकम्युनिकेशन की वजह से या दबाव में इस तरह की गलती हो सकती है।
- **परिदृश्य:** लाकिंग सिस्टम और गार्ड ब्रैकेट्स को सक्रिय करना पड़ता है। इससे आकस्मिक और अनजाने में स्विच-आफ होने की संभावना कम हो जाती है। हालांकि, तनाव या ध्यान भटकने से प्रक्रियागत चूक हो सकती है, जैसे कि गलती से स्विच को रन से कटआफ पोजिशन में कर देना।
- **केस स्टडी:** 2015 में ट्रांसएशिया एयरवेज की फ्लाइट 235 के एक पायलट ने एक इंजन फेल होने के बाद गलत इंजन बंद कर दिया था जिससे दुर्घटना हुई और 43 लोगों की मौत हो गई। यह तनाव में हुई एक स्पष्ट मानवीय भूल थी। पिछले दशक के आइसीएओ के आंकड़ों के अनुसार, 53 प्रतिशत विमानन दुर्घटनाओं का कारण मानवीय भूलें थीं। वहीं यह सभी भूलें ज्यादातर टेकआफ जैसे अहम फेज में हुईं।
- **इसके लिए साक्ष्य:** सीवीआर का संवाद भ्रम की स्थिति दर्शाता है और पायलट द्वारा अनजाने में उठाए गए कदम का संकेत देता है। स्विच का रन की पोजिशन में वापस आना और एक इंजन का थोड़ी देर के लिए फिर स्टार्ट होना, यह दर्शाता है कि पायलट को गलती का एहसास हुआ और उसने उसे ठीक करने का प्रयास किया।
- **इसके खिलाफ साक्ष्य:** स्विच के सुरक्षा उपायों के कारण गलती से मूवमेंट की संभावना कम हो जाती है। प्रारंभिक रिपोर्ट में किसी भी काकपिट आपात स्थिति (जैसे, इंजन में आग लगने या इंजन खराब होने की चेतावनी) का उल्लेख नहीं है। इन स्थितियों में तनाव के कारण पायलट गलती से स्विच को कटआफ पोजिशन में ले जा सकता है।

मैकेनिकल या इलेक्ट्रिकल खराबी

- **परिदृश्य:** किसी मैकेनिकल या इलेक्ट्रिकल खराबी के कारण फ्यूल कंट्रोल स्विच कट आफ पोजिशन में चले गए या फ्यूल सप्लाई बाधित हो गई। इसका कारण फ्लाई-बाय-वायर सिस्टम के डिजाइन में दिक्कत, वायरिंग समस्या या साफ्टवेयर की खराबी के कारण ऐसा हो सकता है। वायरिंग या साफ्टवेयर में कोई खराबी सैद्धांतिक रूप से स्विच को रन से कटआफ की स्थिति में ले जा सकती है।
- **एफएए बुलेटिन:** 2018 के एफएए विशेष उड़ान योग्यता सूचना बुलेटिन में बोइंग के फ्यूल स्विच लाकिंग सिस्टम के अप्रत्याशित रूप से बंद होने की संभावित समस्या पर प्रकाश डाला गया था। हालांकि यह एक सलाह थी। इस पर एक्शन लेना अनिवार्य नहीं था। एयर इंडिया ने उन निरीक्षणों को लागू नहीं किया, जिनकी सिफारिश की गई थी।

इसके लिए साक्ष्य: सीवीआर का "मैंने नहीं किया" वाला जवाब पायलट की सिस्टम में किसी खराबी पर हैरानी का संकेत हो सकता है, न कि उसकी अपनी कार्रवाई का। एक सेकंड के अंतराल में ही स्विच का कटआफ स्थिति में चला जाना किसी गड़बड़ी का संकेत हो सकता है।

- **विपक्ष में साक्ष्य:** स्विच सुरक्षा उपाय (लाक और गार्ड) और मजबूत डिजाइन के कारण इस बात की संभावना बेहद कम है कि स्विच अपने आप रन से कटआफ स्थिति में चली जाए। उड़ान भरने के तुरंत बाद ही स्विच का टर्नआफ मोड में जाना किसी आकस्मिक खराबी के बजाए मैनुअल आपरेशन का संकेत देता है। इसके अलावा, एयर इंडिया के 33 ड्रीमलाइनर की दुर्घटना के बाद के निरीक्षण और बोइंग/जीई की सलाह का न होना सिस्टम से जुड़ी किसी समस्या का संकेत नहीं देता है।

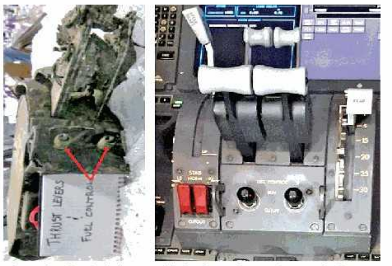

दुर्घटना न हो इसलिए दो स्टेप में काम करने के लिए डिजाइन किया गया है फ्यूल कंट्रोल स्विच।

कोई साजिश तो नहीं...

- **परिदृश्य:** एक पायलट ने विमान को क्रैश करने के इरादे से जानबूझकर दोनों फ्यूल कंट्रोल स्विच को कटआफ पर कर दिया। हो सकता है कि ऐसा उसने आत्महत्या करने या किसी मनौवैज्ञानिक दबाव या व्यक्तिगत मकसद के लिए किया हो। सीवीआर के संवाद से पता चलता है कि एक पायलट को इस कार्रवाई की जानकारी नहीं थी। दूसरे पायलट द्वारा जानबूझ कर कटआफ करने की सूरत में ऐसा हो सकता है।
- **अनुभवी थे पायलट:** सभरवाल एक अनुभवी प्रशिक्षक थे और सेवानिवृत्ति के करीब थे। उनके साथ किसी तरह की समस्या की जानकारी नहीं है। कुंदर एक योग्य को-पायलट थे जिनका रिकार्ड साफ था। दोनों ने ब्रीदएनेलाइजर टेस्ट पास कर लिया था और उन्हें कोई मानसिक स्वास्थ्य समस्या नहीं थी।
- **केस स्टडी:** 2015 में जर्मनविंग्स फ्लाइट 9525 के को-पायलट एंड्रियास लुबित्ज ने कैप्टन को लाक कर दिया और आटोपायलट मोड को नीचे उतरने के लिए सेट करके विमान को क्रैश कर दिया। इसमें 150 लोग मारे गए थे। माना जाता है कि को- पायलट ने ऐसा अवसाद और आत्महत्या की प्रवृत्ति की वजह से ऐसा किया।

इजिप्टएयर फ्लाइट 990 (1999): को-पायलट गेमेल अल-बतूती ने संभवत: आटोपायलट मोड को बंद करके और गोता लगाकर विमान को दुर्घटनाग्रस्त कर दिया। दुर्घटना में 217 लोग मारे गए। को पायलट के ऐसा करने की वजह स्पष्ट नहीं हुई। संभवत: व्यक्तिगत तनाव के कारण पायलट ने ऐसा किया।

- **इसके लिए साक्ष्य:** जान नैन्स (बीबीसी, जुलाई 2025) और कैप्टन स्टीव जैसे विशेषज्ञों ने अपने यूट्यूब पाडकास्ट में बताया है। स्विच के सुरक्षा उपायों के लिए जानबूझ कर कदम उठाने की जरूरत होती है। दोनों का तर्क है कि एक सेकंड के अंतराल पर होने वाली यह गतिविधि मैनुअल संचालन से मेल खाती है।
- **सीवीआर साक्ष्य:** सीवीआर में भ्रम और खंडन एकतरफा कार्रवाई का संकेत देते हैं। जानबूझ की गई गड़बड़ी की सूरत में कम ऊंचाई और तेज घटनाक्रम (दुर्घटना से 32 सेकंड पहले) रिकवरी को बेहद मुश्किल बना देता है।
- **विपक्ष में साक्ष्य:** जर्मनविंग्स या इजिप्टएयर के मामलों के विपरीत, किसी भी पायलट के लिए कोई ज्ञात कारण या मानसिक स्वास्थ्य समस्या नहीं है। सभरवाल की सेवानिवृत्ति योजनाएं और कुंदर का साफ रिकार्ड स्थिरता का संकेत देते हैं।
- स्विच का वापस रन मोड में आना और एक इंजन का थोड़ी देर के लिए फिर से स्टार्ट होना, आत्महत्या के इरादे से मेल न खाते हुए रिकवरी के प्रयास का संकेत देता है।

क्रैश होने के बाद विमान का मलबा दूर-दूर तक फैल गया था।

ग्राउंड स्टाफ के स्तर पर गड़बड़ी

- **परिदृश्य:** किसी बाहरी व्यक्ति जैसे ग्राउंड क्रू या किसी और ने गलत इरादे से फ्यूल सिस्टम के साथ छेड़छाड़ की जिससे स्विच हिल गए या कटआफ स्थिति का आभास देने लगे। ऐसा किसी के द्वारा छेड़छाड़ करने या साफ्टवेयर में हेरफेर के जरिये किया गया।
- एएआइबी, गुजरात पुलिस और आतंकवाद-रोधी दस्ते ग्राउंड हैंडलिंग आपरेशन की समीक्षा कर रहे हैं। कर्मचारियों के फोन जब्त कर रहे हैं, और छेड़छाड़ के साक्ष्यों के लिए एसवीपीआइ हवाई अड्डे के सीसीटीवी फुटेज का विश्लेषण कर रहे हैं। छेड़छाड़ के किसी भी संकेत की पुष्टि नहीं हुई है।
- **विपक्ष में साक्ष्य:** स्विच सुरक्षित काकपिट में हैं, जहां उड़ान से पहले केवल अधिकृत कर्मचारी ही पहुंच सकते हैं। छेड़छाड़ के लिए सुरक्षा और उड़ान-पूर्व जांचों को दरकिनार करना होगा। दोनों पायलटों इन जांचों को बिना किसी विसंगति के पूरा किया। सीवीआर की रियल टाइम की गडबड़ी से पता चलता है कि समस्या उड़ान के दौरान हुई थी, न कि जमीन पर किसी तरह की छेड़छाड़ से। एयर इंडिया फ्लाइट 171 पर 11 जुलाई, 2025 की प्रारंभिक रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि दुर्घटना दोनों इंजन के बंद होने के कारण हुई थी। ऐसा दोनों फ्यूल कंट्रोल स्विच के कटआफ पर चले जाने के कारण हुआ और पायलट की उलझन सीवीआर पर दर्ज की गई थी। पश्चिमी मीडिया तोड़फोड़ की बात को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक प्रतीत होता है और एक पायलट के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का संकेत दे रहा है। लेकिन कोई भी ठोस साक्ष्य पायलटों या ग्राउंड स्टाफ द्वारा जानबूझकर की गई गड़बड़ी की पुष्टि नहीं करता है।

जागरण रिसर्च

एएआइबी की रिपोर्ट अधूरी, जवाब देने से ज्यादा सवाल उठ गए

जयप्रकाश रंजन • जागरण

- उड्डयन विशेषज्ञों ने निकाली एएआइबी की रिपोर्ट में कई खामियां
- बोइंग या जीई को किसी तरह की अनुशंसा नहीं करने पर आपत्ति

नई दिल्ली : एअर इंडिया विमान हादसे पर सरकारी एजेंसी 'विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो' (एएआइबी) की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट को एक के बाद एक कई विशेषज्ञों ने खारिज कर दिया है। उन्होंने ना सिर्फ रिपोर्ट को अधूरा बताया है, बल्कि एजेंसी पर तथ्यों पर चुप्पी का आरोप भी लगाया है। विशेषज्ञों का कहना है कि जांच रिपोर्ट से जवाब मिलने से ज्यादा सवाल उठ गए हैं।

देश के प्रमुख उड्डयन विशेषज्ञ संजय लाजर ने कहा है कि इस रिपोर्ट ने सवालों का जवाब देने की जगह और सवाल ही पैदा कर दिया है। उन्होंने पायलटों के बीच हुई पूरी बातचीत जारी नहीं किए जाने पर सवाल उठाया है। उन्होंने कहा कि उड़ान भरते ही खामी का पता चल गया था। लेकिन पायलटों के बीच सिर्फ दो लाइन का संवाद ही बाहर आया है। लाजर ने इसे अफसोसजनक करार दिया है, क्योंकि इससे हादसे के कारणों पर ज्यादा प्रकाश पड़ता। एएआइबी ने अपनी रिपोर्ट में जिस तरह से यह कहा है कि वह बोइंग या जीई को किसी तरह की अनुशंसा नहीं कर रहा है, इस पर लाजर ने कड़ा एतराज जताया है। पूछा है कि जब तक विस्तृत जांच ना की जाए, तो ब्यूरो ऐसा कैसे कह सकता है?

एक अन्य उड्डयन विशेषज्ञ अमित सिंह ने एएआइबी की रिपोर्ट के कई बिंदुओं पर तकनीकी तौर पर सवाल उठाया है। जैसे रिपोर्ट में कहा गया है कि दोनों इंजनों की ईंधन आपूर्ति कटआफ कर दिया गया था। बाद में एक इंजन की क्षमता खत्म होने लगी। अमित सिंह ने कहा है कि रिपोर्ट में यह स्पष्ट नहीं है कि किस ईंजन की क्षमता कम होने लगी। उन्होंने रैम एयर टर्बाइन (रैट) को लेकर जो बातें रिपोर्ट में कही गई हैं, उसे भी संदेहास्पद माना है। रैट आपातकालीन परिस्थिति में फेल हो रहे इंजनों को अतिरिक्त शक्ति देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। सिंह का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज से साफ है कि जैसे ही विमान थोड़ा सा ऊपर गया है, तभी उसमें रैट को चालू कर दिया गया है। जबकि ईंजन के पूरी तरह से फेल होने के बाद पांच सेकेंड लगता है रैट को चालू होने में। इसका साफ मतलब है कि ईंजन पहले ही फेल हो गया था। ऐसे में रिपोर्ट में जो डाटा का आकलन किया गया है, उस पर संदेह पैदा होता है।

यूं ही नहीं बंद हो सकता है फ्यूल स्विच

नई दिल्ली, प्रेट्र : दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआइबी) की प्रारंभिक रिपोर्ट में फ्यूल स्विच बंद होने को हादसे का कारण बताया गया। इससे दोनों इंजन बंद हो गए। लेकिन फ्यूल स्विच यूं ही बंद नहीं हो सकता। फ्यूल स्विच ईंधन के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं। इसकी दो स्थितियां होती हैं - 'रन' (चालू) से 'कटआफ' (बंद)। स्विच का उपयोग इंजन को चालू या बंद करने के लिए किया जाता है। एक पायलट के अनुसार इनमें लाकिंग मैकेनिज्म होता है। इस लाक को पहले हटाना पड़ता है। स्विच की स्थिति बदलने से पहले उन्हें ऊपर खींचना पड़ता है। बोइंग 787 ड्रीमलाइनर में फ्यूल स्विच थ्रस्ट लीवर के नीचे होते हैं। हर मूवमेंट पर पायलट को अलर्ट मिलता है। थ्रस्ट लीवर कार के एक्सीलेटर पैडल की तरह है। इसमें दो चरम स्थितियां हैं - एक बंद और दूसरी पूर्ण शक्ति या फुल स्पीड। जब इंजन बंद करते हैं तो फ्यूल कंट्रोल स्विच कट आफ मोड में होता है। जब इंजन चालू होता है, तो दो चरणों वाली प्रक्रिया होती है, जिसमें स्टार्ट सिलेक्टर को चालू किया जाता है और फिर फ्यूल कंट्रोल को रन मोड में रखा जाता है। इसके बाद इंजन स्टार्ट हो जाता है।

सेकेंड दर सेकेंड क्या हुआ

11.17 बजे : उड़ान एआइ423 के रूप में संचालित एअर इंडिया ड्रीमलाइनर वीटी-एएनबी नई दिल्ली से अहमदाबाद उतरा।

13.13.00 बजे : विमान ने पुशबैक और स्टार्ट अप का अनुरोध किया।

13.13.13 बजे: हवाई यातायात नियंत्रण (एटीसी) ने पुशबैक को मंजूरी दी।

13.16.59 बजे: एटीसी ने स्टार्ट अप की मंजूरी दी।

13.19.12 बजे: एटीसी ने पूछा कि क्या विमान को रनवे की पूरी लंबाई की आवश्यकता है? विमान ने रनवे 23 की पूरी लंबाई की आवश्यकता की पुष्टि की।

13.25.15 बजे: विमान ने टैक्सी क्लीयरेंस का अनुरोध किया, जिसे एटीसी ने मंजूरी दे दी।

13.26.00 बजे: विमान टैक्सीवे आर4 के माध्यम से रनवे 23 पर पहुंचा, टेक-आफ के लिए तैयार हुआ।

13.32.03 बजे: विमान का नियंत्रण जमीन से टावर को स्थानांतरित।

13.33.45 बजे: विमान को रनवे 23 पर लाइन में लगने का निर्देश दिया गया।

13.37.33 बजे: एटीसी ने रनवे 23 से उड़ान भरने की अनुमति दी।

13.38.39 बजे: विमान ने रनवे से उड़ान भरी।

13.38.42 बजे: विमान की अधिकतम गति 180 नाट तक पहुंची। इसके तुरंत बाद इंजन एक और इंजन दो, दोनों के ईंधन कटआफ स्विच एक सेकेंड के अंतराल पर 'रन' से 'कटआफ' स्थिति में चले गए। ईंधन आपूर्ति बंद होते ही इंजन की गति धीमी होने लगती है। उड़ान भरने के तुरंत बाद रैम एयर टर्बाइन (आरएटी) का इस्तेमाल किया गया। एक पायलट दूसरे से पूछता हुई सुनाई देता है कि उसने ईंधन क्यों बंद किया? दूसरा जवाब देता है कि उसने ऐसा नहीं किया।

13.38.47 बजे: इंजन एन1 और एन2, दोनों की गति न्यूनतम गति से नीचे चली जाती है। आरएटी का पंप हाइड्रोलिक पावर की आपूर्ति शुरू करता है।

13.38.52 बजे: इंजन एन1 का ईंधन कटआफ स्विच 'कटआफ' से 'रन' पर जाता है।

13.38.56 बजे: इंजन एन2 का ईंधन कटआफ स्विच भी 'रन' पर चला जाता है। इंजन 1 में सुधार होता है, लेकिन इंजन 2 अब भी काम करने में असमर्थ है।

13.39.05 बजे: दो पायलटों में से एक पायलट ने मेडे यानी आपातकालीन काल दिया।

13.39.11 बजे: विमान से डाटा रिकार्डिंग बंद हुई।

13.44.44 बजे: दमकल गाड़ियां बचाव और अग्निशमन के लिए हवाई अड्डे से रवाना हुईं।

अभी किसी भी निष्कर्ष पर न पहुंचें, फाइनल रिपोर्ट आने दें : नायडू

- कहा-यह तकनीकी मामला है, जांच एजेंसियों पर भरोसा करना चाहिए
- पायलटों की संक्षिप्त बातचीत से नहीं निकाल सकते निष्कर्ष : मोहोल
- सच्चाई का पता लगाने के लिए न्यायिक जांच जरूरी : विशेषज्ञ

राम मोहन नायडू

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : नागरिक उड्डयन मंत्री विमान के राम मोहन नायडू ने कहा कि अहमदाबाद में एअर इंडिया के विमान दुर्घटना के संबंध में किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचना अभी अपरिपक्वता होगी। अभी केवल प्रारंभिक रिपोर्ट आई है। अभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए। हमें फाइनल रिपोर्ट का इंतजार करना चाहिए। यह तकनीकी मामला है और जांच एजेंसियों पर भरोसा करना चाहिए। एक बार जब उन्हें चीजें स्पष्ट हो जाएंगी तो वे अंतिम रिपोर्ट सौंपेंगी। ब्लैक बाक्स के डाटा को डिकोड करने का कार्य दिल्ली स्थित एएआइबी लैब में किया जा रहा है। एएआइबी, भारतीय पायलट और क्रू-मेंबर दुनिया में सर्वश्रेष्ठ पेशेवर हैं। हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों के साथ पूरा न्याय होना चाहिए। हम अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ कर रहे हैं।

नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल ने कहा कि पायलटों की बातचीत के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता, क्योंकि यह बहुत संक्षिप्त है। आगे की जांच जरूरी है। हमें उस रिपोर्ट का इंतजार करना चाहिए। पहले ऐसी दुर्घटनाओं के मामले में ब्लैक बाक्स को विदेश भेजना पड़ता था। अब, हम इस जांच को खुद जल्दी से पूरा कर सकते हैं। एएआइबी एक स्वतंत्र निकाय है और इसमें मंत्रालय का कोई हस्तक्षेप नहीं है।

वहीं, उड्डयन विशेषज्ञ शक्ति लुंबा ने कहा कि नागरिक उड्डयन मंत्रालय को सच्चाई का पता लगाने के लिए इस हादसे की न्यायिक जांच करवानी चाहिए। यह सभी के हित में होगा और देश व नागरिक उड्डयन सेक्टर की प्रतिष्ठता के लिए भी सही होगा। अगर ऐसा नहीं होता है तो एएआइबी की रिपोर्ट का विरोध और मुखर ही होगा।

उल्लेखनीय है कि 12 जून को अहमदाबाद से लंदन के गैटविक जाने वाला एअर इंडिया का विमान हादसे का शिकार हो गया था। इसमें चालक दल के सदस्यों समेत 241 लोगों की मौत हो गई थी। यह विमान एयरपोर्ट के पास ही स्थित एक मेडिकल कालेज के छात्रावास पर गिरा, जहां 19 लोगों की मौत हो गई थी। इस हादसे में सिर्फ एक विमान यात्री जिंदा बचा था। 67 लोग घायल हुए थे। एएआइबी को जांच की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

अमेरिकी गोल्डन चेसिस से ब्लैक बाक्स का डाटा डाउनलोड

नई दिल्ली, प्रेट्र : अमेरिका से मंगाए गए एक विशेष उपकरण गोल्डन चेसिस की मदद से दुर्घटनाग्रस्त एअर इंडिया विमान के ब्लैक बाक्स से 49 घंटे का उड़ान डाटा डाउनलोड किया गया। 12 जून को अहमदाबाद में हुए इस हादसे में विमान नष्ट हो गया था। विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो 24 जून को दोनों ब्लैक बाक्स लेकर दिल्ली आया था। आम तौर पर जांच एजेंसियां ब्लैक बाक्स से डाटा निकालने के लिए गोल्डन चेसिस और डाउनलोड केबल का इस्तेमाल करती हैं। दुर्घटना जांच ब्यूरो ने शनिवार को कहा कि डाटा डाउनलोड करने के लिए गोल्डन चेसिस और डाउनलोड केबल अमेरिका के राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड से मंगवाई गई है। एएआइबी की दिल्ली लैब ने 24 जून को फारवर्ड ब्लैक बाक्स से डाटा डाउनलोड करने की कोशिश की। इसमें क्रैश प्रोटेक्शन माड्यूल निकाला गया। माड्यूल को गोल्डन चेसिस पर लगा ब्लैक बाक्स से प्रारंभिक डाटा निकाला गया। इसमें 49 घंटे का उड़ान डाटा व छह उड़ानों की जानकारी मौजूद थी। पीछे का (आफ्टर) ब्लैक बाक्स बहुत क्षतिग्रस्त था व पारंपरिक तरीकों से डाटा नहीं निकाला जा सका।

एफएए बुलेटिन की अनदेखी भारी तो नहीं पड़ी

जयप्रकाश रंजन • जागरण

अमेरिकी नियामक एजेंसी ने बोइंग के फ्यूल कंट्रोल स्विच के लाकिंग मैकेनिज्म में संभावित खराबी की चेतावनी दी थी

नई दिल्ली : नागरिक उड्डयन क्षेत्र की अमेरिकी नियामक एजेंसी फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (एफएए) इस सेक्टर से जुड़ी सभी कंपनियों को समय-समय पर सुरक्षा सूचना बुलेटिन जारी करती है। एफएए ने 17 दिसंबर, 2018 को एक स्पेशल एयरवर्थनेल इंफोर्मेशन बुलेटिन (एसएआइबी-संख्या एनएम-18-33) जारी किया था, जिसमें बोइंग विमानों के फ्यूल कंट्रोल स्विच के लाकिंग मैकेनिज्म में संभावित खराबी की चेतावनी दी गई थी। यह बुलेटिन बोइंग 717-200, 737 जैसे विमानों के लिए था, लेकिन यह बाध्यकारी नहीं था।

एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इंवेस्टीगेशन ब्यूरो (एएआइबी) की प्रारंभिक रिपोर्ट में इस बुलेटिन का उल्लेख किया गया है और आशंका जताई गई है कि फ्यूल कंट्रोल सिस्टम में छेड़छाड़ के कारण एयर इंडिया का विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ। इस घटना के बाद दुनिया भर में एविएशन कंपनियों के बीच एफएए के इस बुलेटिन पर चर्चा शुरू हो गई है। एविएशन क्षेत्र के विशेषज्ञों का कहना है कि एफएए इस तरह की कई सलाह जारी करती है। एएआइबी द्वारा उल्लेखित बुलेटिन का मुख्य उद्देश्य विमानन कंपनियों को फ्यूल कंट्रोल स्विच के लाकिंग फीचर के डिसएंगेज होने की संभावना के बारे में सचेत करना था।

यह स्थिति अनजाने में स्विच के हिलने और इन-फ्लाइट इंजन शटडाउन जैसी गंभीर समस्याएं पैदा कर सकती थी। तब एफएए को बोइंग 737 चलाने वाली कुछ कंपनियों से यह रिपोर्ट मिली थी कि फ्यूल कंट्रोल स्विच का लाकिंग फीचर डिसएंगेज था। एफएए ने साफ तौर पर तब सलाह दी थी कि विमानन कंपनियां फ्यूल कंट्रोल स्विच की जांच करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि लाकिंग मैकेनिज्म ठीक है। अब यह बात हो रही है कि एयर इंडिया ने सुझाव के आधार पर निरीक्षण किया होता तो हादसे को रोका जा सकता था?

कालिख से ढकी दीवारें व जले पेड़, भूले नहीं भूलता विमान हादसा

अहमदाबाद, प्रेट्र : कालिख से ढकी दीवारें, जले हुए पेड़ और वीरान पड़ी इमारतें। कोई गतिविधि नहीं। एक अजीब ही तरह की खामोशी। यह टूटती है तो सिर्फ तब, जब वहां तैनात चंद पुलिसकर्मी कुछ चहल-कदमी करते हैं या फिर आपस में कोई चर्चा। अहमदाबाद विमान हादसे के एक माह बाद भी यही तो नजारा है दुर्घटनास्थल और आसपास के परिसर का। देश के सबसे भीषण विमान हादसों में से एक इस दुर्घटना की भयावह यादें आज भी भूले नहीं भूलतीं।

पिछले माह यानी 12 जून को एअर इंडिया का बोइंग ड्रीमलाइनर विमान एआइ-171 अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल हवाई अड्डे से दोपहर 1.39 पर लंदन के लिए उड़ान भरने के चंद क्षणों के भीतर ही बीजे मेडिकल कालेज के छात्रावास परिसर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

अहमदाबाद विमान हादसे के एक माह बाद भी घटनास्थल पर छाई है खामोशी, शनिवार को क्षतिग्रस्त इमारतों के पास से गुजरता एक पुलिसकर्मी • एपी

विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद उसमें आग लग गई थी। इसमें विमान सवार 242 में से 241 लोगों की जान चली गई थी। इसके अलावा मेडिकल कालेज परिसर में मौजूद और आसपास के भी 19 लोगों की जान गई थी। दुर्घटना के वक्त कई मेडिकल छात्र और रेजिडेंट डाक्टर या तो अपने हास्टल के कमरों में थे या दोपहर के भोजन के लिए मेस में इकट्ठा हुए थे। विमान मेस की इमारत से ही टकराया था। बीजे मेडिकल कालेज की डीन मीनाक्षी पारिख ने बताया कि विमान हादसे से चार छात्रावास भवन और मेस बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे। क्षतिग्रस्त मेस भवन भी अब उपयोग में नहीं है।

सुरक्षित टेकआफ पर ही परिजन छोड़ते हैं एयरपोर्ट परिसर

भीषण हादसे के बाद एअर इंडिया ने 16 जून को नए कोड एआइ-159 के साथ अहमदाबाद-लंदन फ्लाइट फिर शुरू की थी। शनिवार को यह फ्लाइट दोपहर 1:08 बजे रवाना हुई। कई लोग अपने संबंधियों के पूर्वाह्न 10 बजे 'चेक-इन' करने के बाद हवाई अड्डे से चले गए जबकि कई वहीं ठहर गए। इनमें भारतीबेन और राजेश भी थे जोकि लंदन जा रही बेटी को छोड़ने आए थे। भारतीबेन ने कहा- 'हम थोड़े घबराए हुए हैं क्योंकि यही उड़ान एक महीने पहले दुर्घटनाग्रस्त हुई थी। इसलिए हम उसके विमान के उड़ान भरने तक यहीं रुके हुए हैं। जो किस्मत में लिखा है, उसे हम बदल नहीं सकते। लेकिन पूरा विश्वास है कि बेटी सुरक्षित पहुंच जाएगी।' हालांकि राजेश ज्यादा संयमित दिखे और कहा कि अगर लोग ऐसी त्रासदियों से डरते रहेंगे तो कोई कहीं नहीं जा पाएगा। वहीं भावनगर के गजानंद सात वर्षों से लंदन में बसी बेटी, दामाद और नातिन को छोड़ने आए थे। वह तीन घंटे तक एक बेंच पर बैठे रहे और फ्लाइट के टेकआफ करने के बाद ही टैक्सी से घर के लिए रवाना हुए।

****

लोकमत सारांश
थोडक्यात... पण सखोल
epaper.lokmat.com | www.lokmat.com

आमदार, मंत्र्यांना ठोकमध्ये नाइट ड्रेस घेऊन दिले तर..?

अतुल कुलकर्णी
संपादक, मुंबई

अधून मधून

मा. राहुल नार्वेकरजी, नमस्कार

गेला आठवडा विधानसभा गाजवणाऱ्या आ. संजय गायकवाड यांच्या कृत्याची चौकशी करण्याची घोषणा मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांनी केली. खरे तर त्यांच्यावर अन्यायच झाला, असे आपल्याला वाटत नाही का? दिवसभर सभागृहात प्रश्नोत्तरे, लक्षवेधी यात सगळे लोकप्रतिनिधी व्यस्त असतात. रात्री दमून भागून आमदार निवासात आल्यावर जेवणही चांगले मिळत नसेल तर त्यांनी काय करावे? मारहाण करणारे ते पहिले आमदार नाहीत.

२०१३ मध्ये क्षितिज ठाकूर यांनी पोलिस अधिकाऱ्यावर हल्ला केला होता. त्याआधी मनसेमध्ये असताना राम कदम यांनी शपथ घेण्यावरून अबू आझमी यांचा सभागृहातच कार्यक्रम केला होता. विद्यमान मंत्री नितेश राणे यांनी अधिकाऱ्यांच्या अंगावर मासे फेकले होते. मात्र, ते आपल्याला दिसलेच नाहीत, असे पुढे त्या अधिकाऱ्यांनी सांगितले. (बहुतेक ते अधिकारी मनोहर जोशी पंथाचे असावेत) सरकारी कर्मचाऱ्यांविषयी सगळ्यात जास्त प्रेम नितेश राणे यांना की बच्चू कडू यांना यावर दोन्ही सभागृहातल्या सदस्यांची समिती नेमा. तेव्हा केवळ आमदाराने मारहाण केली म्हणून एकट्याची चौकशी न करता असे मुलखावेगळे काम करणाऱ्या आमदार, अधिकाऱ्यांना खरे तर विधिमंडळातर्फे सन्मानित केले पाहिजे. ज्या ज्या आमदारांनी आत्तापर्यंत अधिकाऱ्यांवर हात उगारला, त्या सगळ्यांचा सत्कार करता येईल, शिवाय ज्या अधिकाऱ्यांनी सगळे नियम गावाच्या बाहेर, धाब्यावर नेऊन ठेवले असतील, त्यांचाही ढाबारत्न पुरस्काराने सन्मान केला तर..? परवाची घटना पेपरमध्ये वाचल्यापासून आम्हाला रिकामा वेळ भरपूर होता. बसल्या बसल्या काही कल्पना सुचल्या आहेत. त्यावर अंमल झाला तर भविष्यातले आदर्श आमदार, असे असतात हे सांगता येईल.

आमदार निवासाचे कॅन्टीन, सरकारच्या विविध विभागांतील कामांचे टेंडर वर्षानुवर्षे स्वतःलाच मिळवणाऱ्या ठेकेदारांचे व त्यांच्या यशात सहभागी असणाऱ्या अधिकारी, मंत्रिमहोदयांना जीवनगौरव पुरस्कार दिला पाहिजे. ज्या एफडीए अधिकाऱ्यांनी आमदार निवासच नव्हे, तर महाराष्ट्रातील कुठल्याही हॉटेलची, कधीही, कसलीही तपासणी केलेली नाही, अशा अधिकाऱ्यांना कार्यभूषण पुरस्काराने सन्मानित केले पाहिजे. आमदारांना कशा पद्धतीने जेवण दिले ते फोटोमधून दिसून आले. प्लास्टिकबंदी असतानाही प्लास्टिकच्या पिशवीत डाळ भात देणाऱ्या, प्लास्टिकबंदी राज्यात लागू न करणाऱ्या अधिकाऱ्यांना प्लास्टिक शिरोमणी पुरस्कार द्यायला हरकत नाही.

विधानसभेत उपमुख्यमंत्री अजित पवार भाषण करत असताना नॅपकिनवाले आमदार हळूच कोणाकडून तरी एका हातात काहीतरी घेतात. दुसऱ्या हाताने ते चोळून हलकेच स्वतःच्या ओठाखाली ठेवतात... असा व्हिडीओ आम्हाला घरबसल्या पाहायला मिळाला. (बहुतेक तंबाखू अशा पद्धतीने खाल्ली जात असावी.) आमच्या नातवाने, ते काका जे खात आहेत ते मला पाहिजे, असा आग्रह धरला होता. ते नेमके काय खात होते, हे कळाले तर आम्ही आमच्या नातवाला ते घेऊन द्यावे का..? सभागृहात तंबाखूसदृश्य पदार्थ खाता येत असेल तर तो कुठेही खाता येईल ना... (सभागृहात मोबाइलवर पॉर्न फिल्म बघणारे आपल्या विधानसभेत नाहीत. त्या मानाने आपण बरेच मागे पडलो आहोत.)

महाराष्ट्रात गुटखाबंदी असताना तो राजरोस विकू देणाऱ्या एफडीए अधिकारी, कर्मचाऱ्यांचा त्याच गुटख्याच्या माळा घालून सत्कार केला पाहिजे. म्हणजे फुलांवर होणारा खर्चही वाचेल. आमदार महोदयांना चांगले जेवण मिळाले नाही, म्हणून त्यांनी त्याचा राग जेवण आणून देणाऱ्या वेटरवर काढला. 'चूक कोणाची, मार कोणाला' या शीर्षकांतर्गत त्या वेटरचाही चांगले कपडे देऊन सत्कार करा. त्याचवेळी आमदार आणि मंत्र्यांना ठोक भावात नाईट ड्रेस घेऊन द्या. एवढा प्रगत व श्रीमंत महाराष्ट्र, पण त्या राज्यातले लोकप्रतिनिधी बनियान, टॉवेल, लुंगी अशा वेशात बसतात, हे बरोबर नाही. नाईट ड्रेस घेण्यासाठी एखादे मोठे टेंडर काढा. शेवटी ते विधिमंडळाची प्रतिमा उंचावत असतात. संजय शिरसाठ एवढे मोठे मंत्री. मात्र तेही बनियनवर बसून सिगरेट ओढताना दिसले. बनियन, लुंगीवर आमचे नेते पाहून आम्हाला किती वाईट वाटले. तुमचा रागही आला. तुम्ही विधिमंडळाचे सर्वेसर्वा. लोकप्रतिनिधींची अशी अवस्था योग्य नाही. अधिवेशन संपायच्या आत सगळ्यांना चांगले नाइट ड्रेस घेऊन द्या. (सिगरेट ओढल्याने कॅन्सर होत नाही का? तसे असेल तर तेही तुम्ही जाहीर करा.)

शिवाय नोटा ठेवायला जागा नसल्यामुळे अनेक नेत्यांना नोटांची बंडले बॅगमध्ये ठेवावी लागतात. बॅग चुकून उघडी राहिली की, त्याचे कोणीतरी शूटिंग करते. आपल्याकडे भोंग्यांना बंदी असली, तरी सकाळी एक भोंगा नियमितपणे वाजतो, असे आ. अमीन पटेल सांगत होते. त्यामुळे त्या भोंग्यावरून हे जाहीर प्रसारण महाराष्ट्राची प्रतिमा मलिन करते. तेव्हा सगळ्या लोकप्रतिनिधींना एक चांगले लॉकरही घेऊन द्या. ज्यांच्याजवळ नोटा असतील ते नोटा ठेवतील. ज्यांच्याकडे नसतील त्यांना नोटा गोळा करण्याची इच्छा निर्माण होईल. त्यातून एक सकारात्मक वातावरण तयार होईल. अध्यक्ष म्हणून असे वातावरण तयार करण्याची तुमची जबाबदारी नाही का..? आपल्या उत्तराची अपेक्षा नाही.

- आपलाच, बाबूराव

सोने आणखी किती भाव खाणार?

विनायक कुळकर्णी
आर्थिक समुपदेशक

सोन्याच्या दराची झळाळी वाढतच आहे. आता तर लाखाचा टप्पा गाठून सोन्याने विक्रम नोंदवला आहे. सोने इतका भाव का खात आहे? राष्ट्रीय-आंतरराष्ट्रीय घटना-घडमोडींशी त्याचा काही संबंध आहे का, याचा शोध घेण्याचा प्रयत्न...

मागील पंचवीस वर्षांचा सोन्याच्या दरातील वाढीचा आढावा घेतला असता, २००० सालच्या डिसेंबरपासून ते २०१०च्या ऑक्टोबरपर्यंत सोन्याच्या किंमतीमध्ये तब्बल ३९४ टक्के वाढ झाली होती. २०१० साली २२ वेळा भाववाढ होऊन त्याने किमतींचे सर्व विक्रम मोडले होते. आताही एप्रिल २०२४ मधील सोन्याच्या दरात ३०.४० टक्क्यांनी वाढ होऊन २०२५च्या एप्रिलमध्ये किमतीने एक लाखाचा टप्पा गाठून विक्रम केला आहे. याआधी २०११ मध्येही अशीच ३१.१० टक्क्यांनी वृद्धी झाली होती.

दीर्घ मुदतीत अमेरिकेच्या फेडरल रिझर्व्ह बँकेचे व्याजदराबाबतचे धोरण आणि इतर देशांच्या केंद्रीय बँकांकडून वेळोवेळी केली जाणारी सोनेखरेदी लक्षात घेता सोन्याच्या दरात भविष्यात सुद्धा वाढच अपेक्षित आहे. ज्या-ज्या वेळी जगभरात कोविडसारखी महामारी किंवा युद्धजन्य किंवा कमालीची आर्थिक मंदीची परिस्थिती उद्‌भवते त्या-त्या वेळी सोन्याच्या मागणीत मोठी वाढ होते. परिणामी मागणी आणि पुरवठ्याचे व्यस्त प्रमाण निर्माण झाल्याने सोन्याच्या किमतीत वाढ होते. मध्यपूर्वेत भूराजकीय तणाव वाढत आहे. युक्रेन-रशिया युद्ध असो की इस्राईल -पॅलेस्टाइन युद्ध युरोप आणि मध्यपूर्वेत असणारी अशांतता, तसेच ऑपरेशन सिंदूर लक्षात घेता बहुसंख्य देशांच्या केंद्रीय बँकांनी मोठ्या प्रमाणात सोने खरेदी सुरू केली आहे. २०२३ मध्येच १०३७ टन सोने या बँकांनी खरेदी केले होते.

अमेरिकेच्या ३६ ट्रिलियन डॉलर्स कर्जाचा भार बघून अमेरिकेच्या धोरणकर्त्यांना पण व्याजदर कपातीचे वेध लागलेले आहेत. ही कपात करण्याच्या दृष्टीने अमेरिकेच्या फेडरल रिझर्व्हकडून पावले टाकली आहेत.

बहुसंख्य देश त्यांच्या वितरित केलेल्या चलनी कागदी नोटा किंवा अन्य धातूंची नाणी यांच्या सम प्रमाणात शुद्ध सोन्याचा साठा बाळगतात.

जागतिक घडामोडींचा विशेषतः आंतरराष्ट्रीय भूराजकीय अस्वस्थता आणि युद्धजन्य परिस्थितीमुळे सोन्याच्या दरात भाववाढ होत असताना भारतात नेमका लग्नाचा हंगाम आणि सण यामुळे मागणीत वाढ झाल्याने भारतात सुद्धा सोन्याच्या दराने उच्चांक गाठला आहे.

याचा अर्थ सोन्याचे दर यापुढेही वाढत जाणार का? तर याचे उत्तर होय असे असले तरीही २०२६ मध्ये अमेरिका आणि युरोपातील काही देशांचा राखीव सोन्यातील काही हिस्सा विक्रीस येण्याची शक्यता वर्तविली जात असल्याने २०२६ मध्ये कदाचित प्रति ट्रॉय औंस ३००० डॉलर्सपर्यंत सोन्याचा दर खाली उतरू शकतो.

३१.१०३

ग्रॅम म्हणजे एक ट्रॉय औंस असते. ८६ रुपये प्रति डॉलर दर गृहीत धरला तर भारतात सोन्याचा दर प्रतिदहा ग्रॅम

८२९५०

रुपये इतका उतरू शकतो. परंतु त्यानंतर पुढील तीन ते चार वर्षांत सोन्याचा दर प्रति ट्रॉय औंस

४४००

डॉलर्स पर्यंत अपेक्षित आहे. जर युद्धजन्य किंवा खूपच जागतिक मंदी उद्‌भवली तर मात्र हाच दर ५००० डॉलर्स वर उंचावू शकतो. म्हणजेच भारतात प्रतिदहा ग्रॅम सोन्याचा दर

१,४०,०००

ते दीड लाख रुपयांपर्यंत रुपया-डॉलरच्या विनिमय दरानुसार असण्याची शक्यता आहे.

'सीसीएमपी'वरून वैद्यकीय क्षेत्रात गोंधळ

डॉ. संतोष कदम
अध्यक्ष, महाराष्ट्र इंडियन मेडिकल असोसिएशन

महाराष्ट्र सरकारने सुरू केलेल्या 'सीसीएमपी' अभ्यासक्रमावरून राज्यात वैद्यकीय क्षेत्रात मोठा वाद निर्माण झाला आहे. या निर्णयानुसार, होमिओपॅथी पदवीधर डॉक्टरांना एका वर्षाच्या औषधशास्त्राच्या अभ्यासक्रमानंतर आधुनिक वैद्यकशास्त्रातील औषधे लिहिण्याची परवानगी दिली जाणार आहे. या निर्णयास आयएमएने विरोध केला आहे.

हा अभ्यासक्रम भारतीय वैद्यकीय परिषद (एसएमसीआय वा राष्ट्रीय वैद्यकीय आयोग (एनएमसी) मान्यताप्राप्त नसून, या कोर्समध्ये आठवड्यातून केवळ दोन दिवस (शनिवार-रविवार) शिकवले जाणारे औषधशास्त्र पुरेसे नसते. यामुळे होमिओपॅथी डॉक्टरांना एमबीबीएस पदवीधरांच्या समतूल्य मानणे हे केवळ अप्रामाणिकच नव्हे तर जनतेच्या आरोग्यासाठी धोकादायक आहे.

शासनाने 'महाराष्ट्र होमिओपॅथिक प्रॅक्टिशनर्स कायद्या'त सुधारणा करून या डॉक्टरांना एमएमसीमध्ये नोंदणी करण्याची प्रक्रिया सुरू केली आहे. त्यामुळे ते एकाच वेळी दोन वैद्यकीय परिषदमध्ये नोंदणीकृत होणारा पहिलाच गट ठरणार आहेत. त्यामुळे ही संपूर्ण प्रक्रिया एक बेकायदेशीर 'बॅकडोअर एन्ट्री' आहे, ज्यामुळे इतर वैद्यकीय शाखांमधूनही अशी मागणी उद्‌भवण्याचा धोका आहे. हा प्रकार राजकीय दबाव आणि व्यावसायिक हितसंबंधांमुळे राबवला जात आहे. राज्यातील अनेक खासगी होमिओपॅथी

महाविद्यालयांमध्ये जागा रिकाम्या असून, नवीन अधिसूचनेमुळे त्याठिकाणी प्रवेश आणि डोनेशनची मागणी वाढण्याची शक्यता आहे.

शासनाचा दावा आहे की, हे डॉक्टर ग्रामीण भागात कार्यरत होतील. मात्र प्रत्यक्षात मुंबईसह शहरी भागातील ज्येष्ठ होमिओपॅथची नोंदणी सुरू झाल्याचा आमचा दावा आहे. अभ्यासक्रमानंतर हे डॉक्टर ग्रामीण सेवेत जातील याची खात्री नाही.

एमबीबीएस डॉक्टरांची कमतरता ही चुकीची धारणा आहे. अनेक आधुनिक वैद्यक पदवीधर सरकारी नोकरीसाठी प्रतीक्षेत आहेत. सिव्हिल व प्राथमिक आरोग्य केंद्रे यशस्वीरीत्या एमएमबीएस डॉक्टर चालवत आहेत. आयएमएने २०१४ मध्येच या निर्णयाला मुंबई उच्च न्यायालयात आव्हान दिले असून, एमएमसीनेही स्वतंत्र याचिका दाखल केली होती. मात्र आजपर्यंत न्यायालयीन निर्णय लांबलेला आहे.

सीसीएमपी अभ्यासक्रम हा जनतेच्या आरोग्याच्या दृष्टीने लाभदायक की धोका - याचा निर्णय आता शासनाने पारदर्शक, वैज्ञानिक आणि कायदेशीर चौकटीतच घ्यावा, अशीच वैद्यकीय क्षेत्राची एकमुखी मागणी आहे.

'सीसीएमपी' आरोग्यासाठी गरजेचा

डॉ. बाहुबली शाह
प्रशासक, महाराष्ट्र होमिओपॅथिक परिषद

महाराष्ट्र विधिमंडळाने एकमताने संमत केलेल्या कायद्यानुसार सुरू झालेला सीसीएमपी (सर्टिफिकेट कोर्स इन मॉडर्न फार्माकोलॉजी) हा अभ्यासक्रम आजच्या आरोग्यविषयक गरजांची पूर्तता करणारा महत्त्वाचा टप्पा ठरत आहे. साडेपाच वर्षांच्या होमिओपॅथी अभ्यासक्रमासह एक वर्षाच्या क्लिनिकल रोटेशनचा समावेश असलेला हा कोर्स आधुनिक वैद्यकीय शिक्षणाचे मूलभूत तत्त्व आत्मसात करून तयार करण्यात आला आहे.

सीसीएमपी अभ्यासक्रमास शासन मान्यता मिळाली आहे. यामुळे हा अभ्यासक्रम पूर्ण करणारे डॉक्टर्स आधुनिक औषधोपचार करू शकतात. उच्च न्यायालय किंवा सर्वोच्च न्यायालयातून यावर स्थगिती मिळविण्याचे 'आयएमए'चे अनेक प्रयत्न अयशस्वी ठरले आहेत, हे वास्तवही लक्षात घेणे महत्त्वाचे आहे.

यवतमाळ येथील शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालयाच्या औषधशास्त्र विभागाने केलेल्या अभ्यासानुसार सीसीएमपी अभ्यासक्रमानंतर ग्रामीण व दुर्गम भागातील आरोग्यसेवेच्या गुणवत्तेत सुमारे १०० टक्के वाढ झाली आहे. नॅशनल जर्नल ऑफ सायंटिफिक रिसर्चमध्ये प्रसिद्ध झालेला हा अहवाल अभ्यासक्रमाची परिणामकारकता दर्शवतो.

एमएमसी कायदा १९६५च्या तरतुदीनुसार सीसीएमपी अर्हता ही अनुसूचित २८ व्या क्रमांकावर अधिसूचित आहे. त्यामुळे महाराष्ट्र

मेडिकल कौन्सिलने या अर्हताधारकांची स्वतंत्र नोंद करणे बंधनकारक आहे. परंतु एमएमसीमधील तत्कालीन सत्ताधारी आयएमएच्या दबावामुळे गेली आठ वर्षे ही नोंदणी प्रक्रिया टाळली जात होती.

अखेर, वैद्यकीय शिक्षणमंत्र्यांच्या अध्यक्षतेखालील बैठकीत एमएमसी प्रबंधकांनी विधि व न्याय विभागाच्या अभिप्रायानुसार कार्यवाही करण्याची तयारी दर्शवली. त्यानंतर वैद्यकीय शिक्षण विभागाच्या पत्राच्या आधारावर एमएमसीने नोंदणी प्रक्रिया सुरू करण्यासाठी अधिसूचना प्रसिद्ध करण्यात आली आहे. दुसरीकडे या पूर्णपणे कायदेशीर प्रक्रियेविरोधात आयएमएकडून वारंवार आक्षेप घेतले जात आहेत. शासनावर दबाव आणण्यासाठी वैद्यकीय सेवा बंद करण्याची धमकी देणे, जनतेला वेठीस धरणे हे प्रकार अत्यंत निषेधार्ह आहेत. आयुष डॉक्टर्सनी अशा अराजकतेच्या विरोधात उभे राहून, जनतेच्या आरोग्य रक्षणासाठी शासनाला पूर्ण सहकार्य करण्याची भूमिका घेतली आहे. सीसीएमपी हा अभ्यासक्रम म्हणजे ग्रामीण व दुर्गम भागातील आरोग्य सेवा सुधारण्यासाठीचा एक सकारात्मक आणि आवश्यक पुढाकार असून, त्याला विरोध नव्हे तर पाठबळ द्यावे.

बीसीसीआयचा 'टॉपर' पंच

रोहित नाईक
उपमुख्य उपसंपादक

विशेष मुलाखत
पवन हलवणे
क्रिकेट पंच

भारतीय क्रिकेट नियामक मंडळाच्या (बीसीसीआय) पंच परीक्षेत विदर्भाच्या पवन हलवणे यांनी प्रथम क्रमांक मिळवला. अकोला जिल्ह्यातील सांगवी बाजार या छोट्याशा गावात शेतकरी कुटुंबात जन्मलेल्या पवन यांनी आपल्या यशाने क्रिकेटप्रेमी तरुणांना करिअरची नवी दिशा दाखवली आहे. कुटुंबात खेळाचे वातावरण नसताना, क्रिकेटवरील प्रेमापोटी पवन यांनी घेतलेली झेप उल्लेखनीय आहे. यानिमित्ताने त्यांच्याशी खास बातचीत.

क्रिकेट पंच म्हणून तुमचा प्रवास कसा झाला?

उत्तर : सौरव गांगुली यांचा माझ्यावर मोठा प्रभाव आहे. विश्वचषकातील त्यांची १८३ धावांची खेळी पाहून मी प्रेरित झालो. आठवीत असताना क्रिकेट खेळण्यासाठी अकोल्यात पुढील शिक्षणासाठी गेलो. तिथे शाळा जिल्हास्तरावर कर्णधार आणि ऑफ स्पिनर म्हणून छाप पाडली. विद्यापीठ आणि राज्यस्तरावरही खेळण्याची संधी मिळाली. पुढे खेळाडूव्यतिरिक्त पंचांच्या क्षेत्राविषयी माहिती मिळाली. एस. के. बन्सल या माजी आंतरराष्ट्रीय पंचांचे मार्गदर्शन लाभले.

या परीक्षेसाठी कसे पात्र ठरता येते?

उत्तर : सुरुवातीला आपल्याला स्थानिक संघटनेकडे पंच म्हणून नावनोंदणी करावी लागते. तेथे एक-दोन वर्षे पंच म्हणून कामगिरी पाहिली जाते. येथून आपण राज्य समितीच्या निवड परीक्षेसाठी पात्र ठरतो. ही परीक्षा पास झाल्यानंतर पंच म्हणून दर्जेदार सामन्यांची जबाबदारी मिळते. राज्य संघटनेच्या पंच परीक्षेतून अव्वल चार उमेदवार बीसीसीआयच्या लेव्हल-२ पंच परीक्षेसाठी पात्र ठरतात. देशात ३८ राज्ये आहेत आणि प्रत्येकाचे ४ यानुसार १५२ उमेदवार बीसीसीआयच्या परीक्षेसाठी पात्र ठरतात. विदर्भ संघटनेसह बीसीसीआयच्या परीक्षेतही मी अव्वल क्रमांक पटकावला. यापुढे कामगिरीनुसार प्रवास ठरेल. आता रणजी, आयपीएल अशा स्पर्धांमध्ये पंचगिरी करण्याचे लक्ष्य आहे. तेथे चांगली कामगिरी केल्यास मला आंतरराष्ट्रीय स्तरावर संधी मिळू शकते.

ही परीक्षा कशी घेतली जाते?

उत्तर : यंदा ही परीक्षा नरेंद्र मोदी स्टेडियमवर झाली. पहिला टप्पा थिअरीचा असतो. एकाच हॉलमध्ये एकाच वेळी १५२ उमेदवारांची परीक्षा झाली. माझ्या मते यंदाचा पेपर सर्वांत आव्हानात्मक होता. पूर्ण परीक्षा इंग्रजी भाषेतूनच होते. यामध्ये सामन्यातील परिस्थितीनुसार, तसेच नियमांबाबत प्रश्न विचारले जातात. यानंतर प्रॅक्टिकल, व्हायवा-व्हिडीओ आणि शेवटी प्रेझेंटेशन होते. प्रेझेंटेशनमध्ये इंग्रजी संभाषण, आत्मविश्वास यांवर लक्ष दिले जाते. चिठ्ठी उचलून मिळणाऱ्या विषयावर प्रेझेंटेशन द्यावे लागते. मला 'सुपर ओव्हर' हा विषय आला होता.

वाघांच्या मृत्यूचं अरण्यरुदन

अनंत सोनवणे
वन्य जीव अभ्यासक

वाघ मरत असताना वनविभाग काय करत आहे, असा विचारला जाऊ लागला. व्याघ्रप्रेमी वन अधिकाऱ्यांना फासावर चढवण्याची भाषा करू लागले; पण खरंच का आणि कसे मेले एवढे वाघ? या प्रश्नांची उत्तरं शोधताना व्याघ्रसंवर्धनाच्या जटिल प्रक्रियेत सहसा दुर्लक्षित राहिलेल्या मुद्द्यावर टाकलेला प्रकाशझोत.

महाराष्ट्रात २०२५ सालच्या पहिल्या तीन महिन्यांत २२ वाघांचा मृत्यू झाला. माजी वनमंत्री सुधीर मुनगुंटीवार यांनी पावसाळी अधिवेशनात यासंदर्भात प्रश्न विचारला. त्यावर विद्यमान वनमंत्री गणेश नाईक यांनी उत्तर दिलं. त्यांनी दिलेल्या स्पष्टीकरणानुसार २२ पैकी १३ वाघांचा नैसर्गिक मृत्यू झाला. चार वाघ विजेच्या धक्क्यानं, तर चार वाघ रस्ता किंवा रेल्वे रूळ ओलांडताना झालेल्या अपघातात मरण पावले. एका वाघाच्या मृत्यूचं कारण समजू शकलेलं नाही.

आपल्या अतिरेकी व्याघ्रप्रेमामुळे अनेकांना ही कारणमीमांसा निव्वळ धूळफेक वाटू शकते. कारण वाघावरलं आपलं प्रेम आणि ज्ञान बऱ्याचदा सफारी, छायाचित्रण, समाजमाध्यमांवरच्या रील्स इथवरच मर्यादित असतं. त्यामुळे वाघाचं नैसर्गिक जीवनचक्र, त्यातली खडतर आव्हानं आणि मनुष्यनिर्मित समस्या यांचा खोलात जाऊन अभ्यास करण्याची फारशी तसदी आपण घेत नाही.

काही अपवाद वगळता नैसर्गिक अधिवासातल्या वाघाचं सरासरी जीवनमान असतं बारा-तेरा वर्षांचं. वार्धक्याबरोबरच प्रौढ वयातल्या वाघांच्या मृत्यूचं आणखी एक महत्वाचं कारण म्हणजे दुसऱ्या वाघांबरोबरची लढाई. वाघ मुळातच स्वत:च्या टेरिटरीबद्दल अत्यंत संवेदनशील असतो. तिथं तो दुसऱ्या वाघाची घुसखोरी सहन करू शकत नाही आणि कोणी घुसखोरीचा प्रयत्न केलाच तर संघर्ष अटळ असतो. काही वेळा हा संघर्ष जीवघेणा ठरतो.

आता कुणी म्हणेल की हा जीवघेणा संघर्षच होऊ देता कामा नये. खरं तर वाघांमधला वर्चस्वाचा हा संघर्ष जंगलाच्या 'सर्व्हायवल ऑफ द फिटेस्ट'या कायद्याला अधोरेखित करतो. निसर्गनियमांनुसार केवळ सशक्त जनुकंच प्रजातीचं अस्तित्व अखंड ठेवू शकतात, तसंच आनुवंशिक वैविध्यासाठी प्रजातीमध्ये जनुकांचं अंतर्गत आदान-प्रदान होणं आवश्यक असतं. या दोन्ही गोष्टी या वर्चस्वाच्या लढाईतून साध्य होतात. पराभूत वाघ टेरिटरी सोडून जातो किंवा मरण पावतो आणि विजेता वाघ मादींशी मिलन करून त्याचा वारसा पुढे चालवतो. या साऱ्या प्रक्रियेत काही वाघांचा मृत्यू स्वाभाविक आहे. मात्र, दुर्दैवानं या संघर्षात आपलाही हातभार लागतोय. एका बाजूला दिवंगत पंतप्रधान इंदिरा गांधी यांच्या दूरदृष्टीतून अस्तित्वात आलेल्या प्रोजेक्ट टायगरमुळे वाघांना संरक्षण मिळाल्यानं त्यांची संख्या वाढतेय, तर दुसऱ्या बाजूला नागरीकरण आणि औद्योगिकरणाच्या रेट्यामुळे जंगलांचा झपाट्यानं ऱ्हास होतोय. त्यामुळे लहान क्षेत्रात वाघांची घनता वाढते आणि संघर्षाच्या घटनाही वाढतात.

पाटबंधारे विभागानं गोसीखुर्द प्रकल्प आणि महामार्ग प्राधिकरणानं एनएच-४४ आणि एनएच-६ बांधताना दाखवलेली समज सर्वच प्रकल्पांमध्ये दिसायला हवी. वाघांना सुरक्षित रस्ता किंवा रूळ ओलांडण्याची सुविधा निर्माण करायला हवी. मला वाटतं सच्च्या व्याघ्रप्रेमींनी वाघ मेले म्हणून दुःख किंवा आकांडतांडव करण्यापेक्षा जंगल आणि वाघाचे भ्रमणमार्ग (Corridor) वाचवण्याचे प्रयत्न करायला हवेत. रेखीय प्रकल्पांच्या उभारणीत वन्यजीवांचा विचार व्हावा, यासाठी जनमताचा रेटा तयार करायला हवा. नाही तर आपलं दुःख म्हणजे निव्वळ अरण्यरुदन ठरेल.

शिकारीचे धागेदोरे म्यानमारपर्यंत

यावर्षी चंद्रपूर जिल्ह्यात राजुरा इथं घडलेल्या वाघाच्या चोरट्या शिकारीनं वन विभागाची झोप उडवलीय. या प्रकरणाचे धागेदोरे आसाम, मेघालयमार्गे म्यानमारपर्यंत पोहोचले आहेत. बहुतेक आरोपींना अटक झालेली असून, सध्या प्रकरण न्यायप्रविष्ट आहे.

१. वाघांची गणना करताना केवळ प्रौढ वाघांचा समावेश केला जातो, मात्र, मृत्यूची नोंद करताना लहान पिलांचाही समावेश असतो. त्यामुळे मृत्यूदर जास्त भासतो.

२. वयाची दोन वर्षे पूर्ण होण्याआधीच अनेक बछड्यांचा मृत्यू होतो. त्यापैकी बहुसंख्य बछड्यांना त्यांचा पिता नसलेल्या एखाद्या नर वाघानं ठार मारलेलं असतं.

३. कारण पिलांच्या मृत्यूनंतर मादी पुन्हा मिलनासाठी तयार होते आणि नराला आपला वारसा पुढे चालवण्याची संधी मिळते.

४. काही वाघ शेतकऱ्यांनी कुंपणात सोडलेल्या विजेच्या धक्क्याने मरतात, हा माणसाच्याच निष्काळजीपणाचाच प्रताप!

साने गुरुजींच्या शामची धम्माल शिकवणी

नाट्यरंग

प्रशांत दामलेंचे नाटक म्हणजे मनोरंजनाची परिपूर्ण मेजवानी असते; पण या नाटकात त्यांच्यासोबत 'तुला शिकवीन चांगलाच धडा' मालिकेत अधिपतीच्या रूपात लोकप्रिय झालेला ऋषिकेश शेलारही आहे. दोघांच्या जोडीला सुशील इनामदार यांची कोल्हापुरी शैलीतील गावरान फटकेबाजी हास्याची कारंजी फुलवते. गौरी थिएटर्सनिर्मित आणि प्रशांत दामले फॅन फाउंडेशन प्रकाशित हे नाटक द. मा. मिरासदार यांच्या 'व्यंकूची शिकवणी' या कथेवर आधारलेले असून, लेखन-दिग्दर्शन अद्वैत दादरकरने केले आहे.

आदर्श शिक्षक पुरस्कार विजेते महेश सानेगुरुजी यांची ही गोष्ट आहे. कोल्हापूरचे आमदार अनेकदा दहावीत नापास झालेला आपला मुलगा शामला शिकविण्याची गुरुजींना विनंती करतात. काही अटींवर गुरुजींची मुलगी त्याची शिकवणी घ्यायला होकार देते. रील्स बनवण्याचा नाद असलेल्या शामचे राहणीमान, बोलणे, वागणे, तंबाखू खाणे पाहून आता याला गुरुजी शिकवणार तरी कसे? असा प्रश्न पडतो. शामची शिकवणी सुरू होते आणि शामने टाकलेल्या पहिल्याच चेंडूत गुरुजी गारद होतात. त्यानंतर कोण कोणाला काय काय शिकवतो, त्याची धमाल म्हणजे हे नाटक.

मूळ कथेचा गाभा तसाच ठेवत, त्यावर लेखक म्हणून अद्वैत दादरकरने संहितेचा डोलारा उभारत त्याला साजेसे दिग्दर्शन केले आहे. 'तुझ्या चिमन्या हानल्या'सारखा पश्चिम महाराष्ट्रातील पॉप्युलर असलेला डायलॉग या नाटकामुळे सर्वदूर पोहोचणार असला तरी, काही शिवीसदृश शब्द खटकतात. नाटकाचा शेवट काय होणार हे अगोदरच समजते; पण गुरुजी, शाम आणि आमदारांची फटकेबाजी शेवटपर्यंत खिळवून ठेवते. विद्या आणि हेलन या व्यक्तिरेखा कथेत ट्विस्ट आणण्यासाठी आहेत. गुरुजींचा तोल जाऊ न देण्याचे भान दिग्दर्शकाने राखले आहे. गुरू ठाकूरची गीते, ज्येष्ठ संगीतकार अशोक पत्कींचे संगीत आणि दामलेंचे गायन श्रवणीय आहे. प्रदीप मुळ्ये यांनी उभारलेले शिक्षकाचे घर लक्ष वेधते. किशोर इंगळे यांनी प्रकाशयोजना, श्वेता पेंडसे यांनी वेशभूषा आणि प्रमोद खरटमल यांनी रंगभूषा चांगली केली आहे.

दामलेंनी हे नाटक स्वत:च्या खांद्यावर पेलले असले तरी नाटकात एंट्री झाल्यापासून ऋषिकेश त्यांचा भार हलका करतो. आपल्या करामती, गावरान स्टाइल, बोलीभाषा आणि पल्लेदार संवादांनी लक्षही वेधतो. एकामागोमाग एक गुरुजींना गुगली टाकत पुढे काय होईल, याची उत्सुकता कायम राखतो. दामले-ऋषिकेशची अफलातून केमिस्ट्री हे या नाटकाच्या यशाचे गमक आहे. या केमिस्ट्रीला इनामदारांच्या आमदारकीचा तडका देण्यात आला आहे. अनघा मगरे साकारत असलेली गुरुजींच्या मुलीची व्यक्तिरेखा कथेसाठी पूरक असली तरी काही ठिकाणी लाउड वाटते. चिन्मय माहूरकरने साकारलेले काका कामचलाऊ आहेत. हेलन बनलेल्या समृद्धी मोहरीरने गावठी तरुणीच्या भाषेचा हेल अचूक पकडला आहे.

ते सध्या काय करतात?

भारती आचरेकर, अभिनेत्री

वैभव जोशीमुळे कवितांवर जडलाय जीव

मी २०२१ पासून 'वागळे की दुनिया - नयी पिढी नए किस्से' ही मालिका करत आहे. खूप एपिसोड्स झालेत. या मालिकेत पुन्हा काम करताना खूप मजा येत आहे. मला चार वर्षांपूर्वी त्यांनी विचारले, तेव्हा नकार देऊ शकले नाही. लक्ष्मणजींनी छान लिहिले असल्याने तो फ्लेव्हर जाता कामा नये असे वाटत होते. मला सुमित राघवननेच कॉल केला आणि सांगितले की, 'वागले की दुनिया' पुन्हा सुरू करणार आहे, त्यात मुले मोठी झालेली दाखविणार आहेत. निर्माते कोण आहेत ते अगोदर सांग, असे मी म्हटले. कारण काही निर्माते मूळ संकल्पनेची मोडतोड करतात. तो फ्लेव्हर हरवल्यास काम करताना मजा येत नाही. जेडी आणि आतिश कपाडिया यांची नावे ऐकल्यावर गुणवत्तेमध्ये कुठेही तडजोड होणार नसल्याची खात्री पटली आणि होकार दिला. एका मराठी चित्रपटात मोठी भूमिका साकारत आहे. याखेरीज लवकरच बालाजी टेलिफिल्म्सच्या गाजलेल्या मालिकेत दिसेन.

आम्ही चारही बहिणींनी मम्मी गायिका माणिक वर्माची जन्मशताब्दी साजरी केली. जन्मशताब्दी साजरी करायचीच होती, पण मी कामात खूप अडकले होते. राणी वर्माने सर्व जबाबदारी खांद्यावर घेतली आणि १२ मे रोजी मम्मीवरील 'माणिक मोती' या पुस्तकाचे प्रकाशन झाले. आम्ही माणिक वर्मा प्रतिष्ठान सुरू केले, तेव्हा मम्मी आमच्यात नव्हती. त्यामुळे तिच्या स्मृती जागविणारे काहीतरी भव्यदिव्य करायचे होते. पुन्हा रसिकांच्या आठवणींना उजाळा मिळावा यासाठी अप्रतिम पुस्तक तयार केले. त्यात क्यूआर कोडही आहेत. त्यावरून मम्मीची गाणी आणि मुलाखतीही ऐकता येतील. प्रगत तंत्रज्ञानाचा सुरेख उपयोग केला आहे.

निर्माते अशोक हांडे यांच्या 'माणिक मोती'च्या माध्यमातून मम्मीची गाणी रसिकांसमोर आणण्याचे काम आणि प्रोफेशनली गाणे गात नसले तरी रियाज मात्र सुरू असतो. शूटिंगला दुपारी १२ वाजेशिवाय जात नसल्याने सकाळी उठून रियाज करते. आजची तरुणाईही मम्मीची गाणी गात असल्याचे शताब्दीच्या निमित्ताने जाणवले. मम्मीच्या गायनात जशी भावगीतातील शुद्धता होती, तशी इतर कोणाच्याही गायकीत होती असे मला वाटत नाही. भावगीत हा प्रकार आईने जितका प्रचलित केला तितका कोणत्याही गायिकेने केला नाही.

अलीकडे फार वाचन होत नाही; पण गीतकार वैभव जोशीमुळे कवितांचे वेड लागले आहे. पूर्वी कवितांचे वेड नव्हते. खूप कादंबऱ्या वाचल्या; पण कवितांच्या प्रेमात कधी पडले नव्हते. वैभवच्या कवितांनी मी भारावले आणि झपाटले. मला कविता आवडेल असे कधी वाटले नव्हते, पण हा एकमेव अवलिया आहे ज्याचे लेखन प्रचंड आवडते. नाटके, सिनेमे बघतेच; पण स्वयंपाक करायला आवडतो. मांसाहार आवडीने बनवते. कॉन्टिनेंटल वगैरे फार करायला आवडत नाही, पण कोणताही भारतीय खाद्यपदार्थ बनवते. अगदी पिठीपासून सर्व काही बनवते.

मोकळा वेळ मिळाला की चौघी बहिणी एकत्र येऊन पत्ते खेळतो. राखी पौर्णिमा येणार आहे. भाऊ नसल्याने आम्ही बहिणीच एकमेकींना राखी बांधतो. मी वाढदिवस तसेच मिस्टरांची डेथ ॲनिव्हर्सरी साजरी करीत नाही. त्याऐवजी वर्षभरात तीन-चार सेवा संस्थांना काही ना काही मदत करते. वाढदिवसावर पैसे खर्च करण्यापेक्षा समाजसेवेतून आत्मिक आनंद लाभतो.

पुस्तकाच्या जन्माची गोष्ट

रामदास भटकळ

सफर... नियतीच्या बैलाला

विजय तेंडुलकर यांच्या कथा आणि एकांकिका 'सत्यकथा', 'वसुधा'सारख्या अंकांतून प्रसिद्ध होऊ लागल्या. तेव्हापासून त्यांच्या लेखनातील वेगळेपणा लक्षात येऊ लागला. किंबहुना स्वतःचा वेगळा ठसा उमटवता येणे हा उच्च कलेचा महत्त्वाचा निकष मी मानू लागलो.

प्रकाशनकार्यात काहीशी वेगळी वाट सापडेपर्यंत मी 'मौज प्रकाशनगृहा'चे नेतृत्व मान्य करत होतो. तेंडुलकर हे 'सत्यकथे'चे लेखक आणि 'वसुधा'चे तर संपादकच. तेव्हा 'मौज'चे भागवत किंवा 'वसुधा'चे सराफ यांचा प्रकाशक म्हणून अधिकार मी मान्य करीत होतो. त्यानुसार 'मौज' प्रकाशनाने तेंडुलकरांचे लेखन सातत्याने प्रसिद्ध केले आणि त्यांना मान्यताही मिळत गेली. भागवत बंधूंना मी गुरुस्थानी मानत होतो तेव्हा त्यांच्याकडून लेखक हिसकावून घेण्याचा प्रश्नच नव्हता.

तरी नाटक आणि रंगभूमी हा माझा आवडीचा विषय असल्याने माझी आणि तेंडुलकरांची खास मैत्री होती. मी वसन्त कानेटकरांचा समर्थक आणि म्हणून तेंडुलकरांपासून परका अशी गैरसमजूत अनेकांची होती. प्रत्यक्षात आम्ही नेहमी भेटत असू आणि काही प्रमाणात 'मादी' या एकांकिकेच्या निमिताने श्रीराम लागू आणि विजया खोटे यांना एकत्र आणण्याचा घाट आम्ही घातला होता. त्यांच्या एका नाटकाचे प्रकाशन पुण्याचे नीलकंठ प्रकाशन करणार असे जाहीर झाले तेव्हा मी स्पष्टपणे तेंडुलकरांना सांगितले की, त्यांना आम्ही नेहमीच 'पॉप्युलर'चा लेखक मानत आलो. फक्त ते मौजेचे या समजुतीने मी त्यांना प्रकाशनासाठी विचारले नाही. त्यांनी 'नीलकंठ'चा प्रस्ताव का स्वीकारला हे जेव्हा सांगितले तेव्हा मी तेही मान्य केले. त्यांच्या उमेदीच्या दिवसांत चित्रशाळा प्रेसचे दामूअण्णा रानडे यांनी त्यांना साहाय्य केले होते. तेव्हा त्यांचे चिरंजीव प्रकाश रानडे यांच्यासोबत उभे राहणे हे त्यांना कर्तव्य वाटले. प्रकाश रानडे हे एक उत्तम रंगकर्मी होते आणि 'कृतज्ञता' हे एक जीवनातले महत्त्वाचे मूल्य मी मानतो. तेंडुलकरांमुळे नीलकंठ प्रकाशनाला रूप येऊ लागले.

तेंडुलकर गर्दीपेक्षा आमच्या दोघांच्याच भेटीत फुलतात हे माहीत असल्याने मी त्यांना घरी जेवायला बोलावले. साहजिकच सध्या काय लिहीत आहात हा प्रश्न ओठांवर होताच. त्यांनी दोन नवीन नाटके लिहिली होती. कोणती संस्था ती नाटके रंगभूमीवर आणणार आहेत, हा दुसरा प्रश्न होता. त्यांच्या नाटकांचे प्रयोग आविष्कार, रंगायनपासून 'ललितकलादर्श'सारख्या व्यावसायिकांनीही केले होते. ते म्हणाले, 'ते ठरवायचे आहे. कदाचित मी स्वतःच त्यांच्या वाचनाचे जाहीर कार्यक्रम करीन.'

या योजनेपाठी एक महत्त्वाचा विचार होता. संहिता लिहून झाली की, ती इतरांच्या ताब्यात जाते. कोणीही दिग्दर्शक, नट किंवा प्रेक्षकसुद्धा त्याचा वेगवेगळा अर्थ लावू शकतात. तेंडुलकरांनी गृहीत धरलेला अर्थच जर त्यांना पोचवायला हवा असेल तर ते वाचन स्वतः करणे आवश्यक होते.

मी त्यांना यातील अडचणी लक्षात आणून दिल्या. कुठेही वाचन ठरवले तरी दर प्रयोगात फार तर शे-दीडशे श्रोते मिळतील. किती ठिकाणी ते वाचन करणार? त्यातून त्यांचे वय झाले होते. त्यांची अँजिओप्लास्टी झाली होती. तेव्हा मला एकदम कल्पना सुचली की आपण ही नाटके फक्त ध्वनिफीत किंवा ऑडिओ बुक्स म्हणून प्रसिद्ध करूया. त्यांना ही कल्पना पसंत पडली. तांत्रिक बाजू सांभाळायला सत्यशील देशपांडे यांचा वाळकेश्वरला स्टुडिओ होता. तिथे या दोन्ही नाटकांचे ध्वनिमुद्रण निवांतपणे केले. खरोखर लेखक तेंडुलकर, दिग्दर्शक तेंडुलकर आणि वाचिक नटही ते स्वतः यामुळे या ध्वनिफितीत अत्यंत प्रभावी अनुभव मिळाला आणि 'पॉप्युलर'ने पहिल्या सर्वस्वी ऑडिओ पुस्तकाचे प्रकाशन केले.

अडचण विक्रीव्यवस्थेची होती. पुण्याच्या आलूरकरांनी ऑडिओ कॅसेटच्या विक्रीचा विक्रम केला होता; पण ते त्यांचे श्रेय होते. त्यांनी निरनिराळ्या प्रकारच्या शेकडो कॅसेट तयार केल्या होत्या. व. पु. काळे सांगायचे की, त्यांच्या छापील कथासंग्रहापेक्षा कित्येक पटींनी महाग अशा त्यांच्या कॅसेट्स दस पटींनी खपत असत; परंतु फक्त या दोन कॅसेट्ससाठी दुकानदार आमच्याकडे फिरकेनात आणि पुस्तक विक्रेत्यांकडे कॅसेटची विक्री करण्याची सोय नव्हती. तेव्हा तेंडुलकरांच्या चाहत्यांच्या आग्रहासाठी ही नाटके छापून घेणे आवश्यक होते. अशा रीतीने तेंडुलकर आमचे नाटककार झाले आणि ते मराठी साहित्यिकांच्या दृष्टीने, साहित्याच्या दृष्टीने चांगलेच झाले. नंतरच्या काळात त्यांची दुर्मीळ नाट्यसंहिता मिळवून त्यांची एकूण एक नाटके आणि एकांकिका आम्ही प्रकाशित करू शकलो.

बुढ्ढी के बाल... बाळाचा हट्ट, आईचे काही चालेना!

हे करू नको, ते करू नको... बाहेरचं खाऊ नको, उघड्यावरचं खाऊ नको... अशा एक ना अनेक पालकसूचना मुलांच्या कानावर उठताबसता आदळतात. पण अनेकदा मुलं त्यांना जे वाटतं ते करतात. त्यांना जे आवडतं तेच करतात. मिळालं नाही तर हट्ट धरतात. या छायाचित्रातील मुलानेही 'बुढ्ढी के बाल' हवेच असा हट्ट धरला आणि त्याच्या बालहट्टापुढे त्याच्या आईचेही काही चालले नाही.

छाया : दत्ता खेडेकर

मुलखावेगळी माणसे

दिनकर गांगल

वंदनाची स्वेच्छानिवृत्ती

सावंतवाडीची वंदना करंबेळकर अमेरिकेत बहिणीकडे चांगले सहा महिने राहण्यास गेली आहे. तेथे ती 'निरामय' संघटनेचा इतिहास लिहीत आहे. म्हणाली, "इतिहास म्हणजे पुस्तिकाच आहे; पण त्यातून आमच्या सामाजिक, आरोग्य आणि शिक्षण कार्याविषयीच्या नोंदी होऊन जाणार आहेत. मुख्य म्हणजे मी तेथूनही आता स्वेच्छानिवृत्ती घेण्याची शक्यता निर्माण झाली आहे. कारण मदतीला सुषमा आली आहे ना! तेथेच वाढली आहे, वकील झाली आहे. तिलाही सामाजिक कामाची ओढ आहे."

वंदनाची ही दुसऱ्यांदा स्वेच्छानिवृत्ती. प्रथम ती स्टेट बँकेतून वयाच्या अठ्ठेचाळीसाव्या वर्षी, वर्ष २००८ मध्ये निवृत्त झाली. त्यावेळी तिला पगारी नोकरी सोडून स्वेच्छेने काम करण्याची इच्छा होती. तिने बँकेत काम करीत असताना स्त्रियांचे पन्नास बचतगट निर्माण केले होते, ते अधिकतर समाजभावनेने. मैत्रीण अर्चना वझेची साथ होती. ती नेरूरच्या वसुंधरा केंद्रात व्यक्तिमत्त्व विकासासाठी मुलांचे प्रशिक्षणवर्ग घेई.

निवृत्त झाल्यावर तिने 'एमएसडब्ल्यू' हा समाजसेवा शास्त्राचा अभ्यासक्रम पूर्ण केला आणि सावंतवाडीचे उपनगर, कोलगावला डॉ. शालिनी सबनीस व परिवार यांचे निरामय विकास केंद्र आहे, त्याची पूर्णवेळ जबाबदारी स्वीकारली. आरोग्य व शिक्षण या विषयांत अभिनव कार्य सुरू केले. त्यांनी प्रथम वैद्यकीय शिबिरे घेतली, दहावी पास विद्यार्थिनींसाठी व्यक्तिमत्त्व घडवणारे महिनाभराचे निवासी वर्ग योजले. ते त्यांचे दिवस चैतन्याचे होते. शालिनी व त्यांची बहीण सुधा दोघी 'वीकेण्ड' साधून सावंतवाडीस जात. शालिनी आता हयात नाहीत; पण त्यांना अनघा सबनीस यांचे सहकार्य लाभत आहे. त्या प्राध्यापक व रिसर्च गाइड (आय.सी.टी.सी., माटुंगा). संस्थेचे अध्यक्षपद त्यांच्याकडे आहे.

'निरामय'चे उद्दिष्ट आता विद्यार्थ्यांना आणि महिलांना स्वयंपूर्ण होण्याच्या दृष्टीने अर्थसहाय्य करण्याचे आहे. तो निधी गेल्यावर्षी सोळा लाखांचा होता. त्यात बीजनिधी सबनीस यांचा असतो- अधिकच्या देणग्या स्थानिक कार्यकर्ते मिळवतात. 'निरामय'चे अर्थसाह्य दोन प्रकारांत असते. विद्यार्थ्यांना उच्च शिक्षणासाठी प्रत्येकी पन्नास हजार रुपयांची मदत आणि शाळांना शैक्षणिक साहित्य खरेदीसाठी प्रत्येकी दहा हजार रुपयांची देणगी. त्यांच्या या योजनेतून पन्नास विद्यार्थी शिक्षण घेऊन स्वयंपूर्ण झाले आहेत; एवढेच नव्हे, तर त्यांच्यापैकी काहीजण त्यांना साहाय्य मिळालेली रक्कम मूळनिधीत जमा करू लागले आहेत. शाळांनी त्यांना मिळणाऱ्या देणग्यांतून क्रीडा साहित्य जमा केले, प्रयोगशाळा निर्मिल्या, नकाशे खरेदी केली.

आरोग्य क्षेत्रामध्ये 'निरामय'चे रुग्ण साहित्य सेवा केंद्र खेड्यापाड्यांतील आजारी माणसांची महागड्या वैद्यकीय साधनांची गरज उत्तमरीत्या भागवत आहे. किंबहुना ही साधने केंद्रात मुक्कामाला कधी राहतच नाहीत !

वंदना हिची संवेदनाशील लेखिका, आशयपूर्ण मुलाखतकार म्हणून ख्याती आहे. तिने साहित्य अकादमीच्या पुरस्कार विजेत्या तेलुगू लेखिका व्होल्गा यांच्या तीन कथासंग्रहांचे अनुवाद केले आहेत. वंदना ही स्त्रिया व विद्यार्थी कल्याण क्षेत्रातील कार्यकर्ती म्हणून साऱ्या महाराष्ट्राशी जोडलेली असते.

पुस्तकं सांगतात गोष्ट

संतोष आंधळे

वैद्यकीय संस्थेची प्रेरक वाटचाल

सेठ गोरधनदास सुंदरदास मेडिकल कॉलेज १९२५ साली ४६ विद्यार्थ्यांसह स्थापन झाले, तर राजे सातवे स्मारक रुग्णालय (किंग एडवर्ड सातवे मेमोरियल हॉस्पिटल) १९२६ साली केवळ १०० खाटांसह स्थापन झाले. गेले शतक, मुंबईतच नाही तर भारतातील एक अग्रेसर वैद्यकीय महाविद्यालय व रुग्णालय अशी ख्याती असलेल्या या रुग्णालयात मुंबई महानगरपालिकेच्या साहाय्याने वंचित घटकांतील बहुतांश रुग्णांवर जवळजवळ मोफत उपचार केले जातात. डॉ. जीवराज मेहता

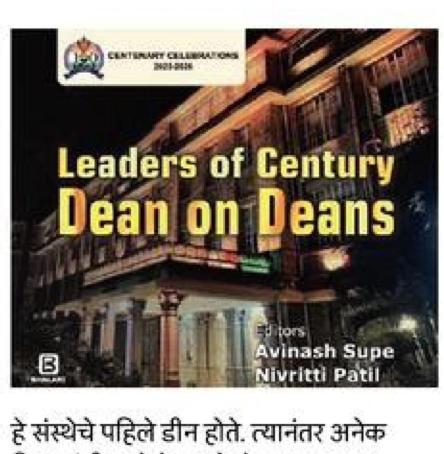

हे संस्थेचे पहिले डीन होते. त्यानंतर अनेक दिग्गजांनी याचे नेतृत्व केले.

हे प्रतिष्ठित रुग्णालय चालवण्यात अधिष्ठाता/ अधिष्ठात्री यांचे योगदान महत्त्वाचे असते. म्हणूनच केईएम हॉस्पिटल आणि सेठ जी. एस. मेडिकल कॉलेजच्या शतकपूर्तीनिमित्ताने "डीन ऑन डीन" हा विशेष ग्रंथ प्रकाशित करण्यात आला आहे. या ग्रंथात गेल्या १०० वर्षांतील १९ अधिष्ठाता/ अधिष्ठात्री यांच्या योगदानाची नोंद आहे. प्रत्येक डीनच्या कार्यकालावधीतील मोजक्या घडामोडींचा आढावा घेतला आहे. डॉ. अविनाश सुपे (माजी अधिष्ठाता) आणि डॉ. निवृत्ती पाटील (माजी विद्यार्थी व माकाऊ मेडिकल कॉलेजचे डीन) यांनी या पुस्तकाचे संपादन केले आहे. या पुस्तकाद्वारे गेल्या शतकातील मुंबईतीलच नाही तर आरोग्य क्षेत्रातील बदलांचा आढावा घेतला आहे.

या ग्रंथातली प्रत्येक डीनची कथा ही त्या काळातील आव्हानांची माहिती देते. काही डीनने साथीचे रोग, नैसर्गिक आपत्ती, दंगली, बॉम्बस्फोट त्याचबरोबर अन्य सामाजिक उलथापालथींच्या काळात दखलपात्र कार्य केले. काहींनी रुग्णालयाची वाढ आणि नवोपक्रमांचे काळ सांभाळले, नवीन विभाग स्थापन केले. आंतरराष्ट्रीय सहकार्य निर्माण केले. या संस्थेने सामाजिक, शैक्षणिक, तांत्रिक आणि प्रशासनिक आव्हानांना सामोरे जात आपली प्रतिष्ठा आणि गुणवत्ता कायम राखली त्यामागे त्या-त्यावेळच्या डीनचे अजोड योगदान होते. या सर्व अनुभवरूपी कथनाने हे पुस्तक वाचनीय झाले आहे.

अनेक घडामोडींची छायाचित्रे हे या पुस्तकाचे वैशिष्ट्य. १९२५ चे नकाशे, जुने रुग्णालय, त्याचा विकास आणि विस्तार, मुंबईवरील बॉम्बहल्ल्यानंतर राष्ट्रपती आणि पंतप्रधानांनी दिलेली भेट, कोविडचा कठीण काळ आदींशी संबंधित छायाचित्रांमुळे हा ग्रंथ जतन करावा असा झाला आहे. केईएम हॉस्पिटल आणि सेठ जी. एस. मेडिकल कॉलेजसारख्या संस्थांचा शतकभराचा प्रवास, नेतृत्व आणि बदलत्या आव्हानांचे दस्तऐवजीकरण पुढील पिढ्यांसाठी प्रेरणादायी ठरते. वैद्यकीय शिक्षण, संशोधन आणि रुग्णसेवा या क्षेत्रात सातत्याने बदल होतात. त्यांना सामोरे जाताना संस्थेने अंगीकारलेली ध्येय-धोरणे नव्या पिढीला सांगणे आवश्यक आहे. त्यामुळे "डीन ऑन डीन" हे पुस्तक केवळ ऐतिहासिक दस्तऐवज नाही तर संस्थेच्या शतकी प्रवासातील नेतृत्वाची, नव्या कल्पनांची आणि बदलत्या काळातील संघर्षाची प्रेरणादायी कहाणी आहे. भालानी पब्लिशर्स यांनी हे पुस्तक प्रसिद्ध केले आहे. ते विनामूल्य असून लवकरच ई-बुकच्या स्वरूपात ते सर्वांसाठी उपलब्ध होईल.

लोकमत सारांश
थोडक्यात... पण सखोल
epaper.lokmat.com | www.lokmat.com

इन्स्पायरिंग — हिमा दास, धावपटू

बूट घ्यायलाही पैसे नव्हते; चिखलात सराव केला...

आसाममधील नागांव जिल्ह्यात कांधुलिमारी या अत्यंत लहान गावात जन्म झाला. माझे आई आणि वडील दोघंही भातशेती करणारे शेतकरी होते. त्यांना आर्थिक परिस्थितीने त्यांचे स्वप्न पूर्ण करता आली नाहीत. तेव्हा आम्ही एकत्र कुटुंबात राहायचो. कधीच पुरेसे पैसे नसत.

जगण्यासाठी लागणाऱ्या साधनांचीही कमतरता होती. पण या सगळ्यात आई-वडिलांनी नेहमीच मला सांगितले की, 'जे आहे, त्यात सर्वोत्तम दे.'

लहानपणापासूनच मला खेळांमध्ये खूप रस. विशेषतः फुटबॉलमध्ये. वडिलही शाळेत खेळाडू होते, पण पैशाच्या अभावामुळे ते पुढे जाऊ शकले नाहीत. त्यामुळे ते मला शक्य तेवढे खेळायला मदत करत आले. काही दिवस तर माझ्याकडे बूट घ्यायलाही पैसे नव्हते, खेळण्यासाठी योग्य मैदान नव्हते म्हणून मी चिखल, शेतात सराव करत असे.

एकदा शाळेत शारीरिक शिक्षणाच्या शिक्षकांनी मला खेळताना पाहिले. ते माझ्या धावण्याच्या वेगाने खूप प्रभावित झाले. त्यांनी मला फुटबॉलऐवजी धावपटू होण्यास सांगितले. तसेच प्रशिक्षण देण्यासही सुरुवात केली. पुढे जिल्हास्तरीय ॲथलेटिक्स स्पर्धेत भाग घेतला. मला आधी थोडी भीती वाटली. माझ्या परिस्थितीमुळे मी इतरांपेक्षा मागे पडेल की काय, अशी शंकाही होती. पण सर्व शंका दूर झाल्या.

दोन प्रशिक्षकांनी माझी क्षमता ओळखली. त्यांनी मला आसाममधल्या त्यांच्या कॅम्पमध्ये सहभागी होण्यास सांगितले. तेथे सुरू झाला संघर्ष, खडतर प्रशिक्षण आणि खूप काटेकोर दिनचर्या. पहाटे उठायचं, काही तास ट्रेनिंग, पुन्हा संध्याकाळी ट्रेनिंग. मी १७ वर्षांची होते. हे संघर्षाचे दिवस कसे हाताळायचे हा प्रश्न होता. पण वडिलांनी मला सांगितले, 'हे छोटे छोटे संघर्षच तुला तुझ्या मोठ्या स्वप्नाकडे घेऊन जातील. एक दिवस तू देशासाठी खेळशील, तेव्हा हे सगळं सार्थ वाटेल.'

परिस्थिती कशीही असो या तीन गोष्टी तुमच्याकडे हव्याच

डोंगर चढून सर्वोच्च शिखरावर पोहोचायची जिद्द असते, तेव्हा तुम्ही कोण आहात, तुमची परिस्थिती कशी आहे, त्याने फरक पडत नाही. तुमच्याकडे फक्त या तीन गोष्टी पाहिजेत.

१) **निश्चय :** जो तुम्हाला तुमच्या ध्येयाकडे सतत खेचतो.

२) **प्रयत्न :** जे सतत चालू ठेवले, तर कोणतंही अशक्य काम शक्य होतं.

३) **स्वतःवरचा विश्वास :** जो तुम्हाला अंधारातही मार्ग दाखवतो.

हिमा दास ही भारतीय धावपटू असून २०१८ मध्ये वर्ल्ड अंडर-२० मध्ये तिने सुवर्ण जिंकले. ती राष्ट्रीय विक्रमधारक असून ढिंग एक्सप्रेस म्हणून प्रसिद्ध आहे.

-संकलन : महेश घोराळे

पर्सनल डेव्हलपमेंट

जपानी तत्त्वज्ञान सांगतं कसं केलं पाहिजे काम...

जपानी माणूस जात्याच उद्योगी असतो, असं आपण कितीदातरी ऐकलेलं असतं. त्यांच्या देशानं केलेली डोळे विस्फारून टाकणारी प्रगती त्याचा पुरावाही आहे म्हणा. पण कशी असते त्यांच्या कामाची पद्धत? बघू या कामाच्या पद्धतीत आमूलाग्र बदल घडवणारं त्यांचं तत्त्वज्ञान. या तत्त्वांचा स्वीकार केल्यास संपूर्ण जीवनात सकारात्मक बदल घडतो, असं म्हणतात.

इकीगाई (Ikigai) : जीवनाचं ध्येय शोधा
ज्या गोष्टीमुळे तुम्ही सकाळी उठता, तीच तुमची 'इकीगाई'
जे तुमचं आवडतं आहे व इतरांना उपयोगी पडेल, तेच ध्येय

ओमोइयारी (Omoiyari) : मनापासून सहवेदना दाखवा
तुमच्या कृतीतून दुसऱ्यांचे जीवन सुलभ करा
तुमचं काम आणि उत्पादने लोकांच्या मदतीला यावीत

वाबी-साबी (Wabi-Sabi) : उत्कृष्टतेचा ध्यास घ्या
तुमचे काम आणि बोलणे यात गोंधळ नको.
तक्रार करू नका. जे जसं आहे तसं स्वीकारा.

मोट्टैनाई (Mottainai) : विवेकी व शाश्वत कार्यशैली
आपली ऊर्जा आणि कौशल्य अनावश्यक खर्च करू नका
अनावश्यक प्रक्रिया टाळा

शिन-गी-ताई (Shin-Gi-Tai) : मन, शरीराचा समतोल
मन शांत ठेवण्यासाठी ध्यान करा. नवीन कौशल्य शिका
निरोगी राहण्यासाठी नियमित व्यायाम करा

काइझेन (Kaizen) : सातत्याने सुधारणा करा
दर आठवड्याला एखादे कौशल्य किंवा प्रक्रिया शिका
यश-अपयशाचं आत्मपरीक्षण करा

शुहारी (Shuhari) : शिका, सुधारणा करा, नवे काही करा
सर्वांत आधी नियम शिका
इतकं पारंगत व्हा की नियम अप्रासंगिक वाटू लागतील

शोषिन (Shoshin) : नित्य नवीन जिज्ञासा ठेवा
कितीही मूर्ख वाटतील असे प्रश्न विचारा
स्वतःच्या समजुतींना सतत आव्हान द्या

शोकुनिन (Shokunin) : हातोटीचं शुद्ध कौशल्य
आपल्या कामाची खोलवर समज विकसित करा
आपल्या कौशल्यावर अभिमान बाळगा

हो-रेन-सो (Ho-Ren-So) : पुन्हा पुन्हा संवाद करा
माहिती शेअर करा, विश्वास मिळवा
सल्लामसलत करा, निर्णय जलद घ्या

मुद्द्याची गोष्ट : चीन, पाकिस्तान आणि बांगलादेश यांचे हितसंबंध एकमेकांशी जोडलेले आहेत आणि याचा परिणाम या भागातील स्थिरतेवर होऊ शकतो, असे गंभीर भाष्य भारताचे सीडीएस जनरल अनिल चौहान यांनी नुकतेच केले. चुकीची माहिती पसरवणे, सायबर हल्ल्यांचा धोका आणि डिजिटल माध्यमांचा शस्त्रासारखा वापर यामुळे संघर्षाचे नवे मार्ग तयार होत आहेत. या पार्श्वभूमीवर भारताला एकाच वेळी तीनही सीमांवर अधिक सतर्क राहावे लागणार आहे.

शत्रूचं ड्रोन ५ लाखांचं, पाडायला लागते १० लाखांचं मिसाइल...

ब्रिगेडियर हेमंत महाजन
युद्ध सेवा मेडल

युद्ध म्हणजे केवळ शस्त्रांचा आणि सैनिकांचा संघर्ष नाही, तर ती एका देशाच्या सामर्थ्याची, रणनीतीची आणि नेतृत्वाची परीक्षा असते. युद्ध सजीव असते. त्यात प्रत्येक हालचालीमागे उद्दिष्टं असतात, आणि ती साध्य झाल्यानंतरच युद्धाचं यश मोजलं जातं. ही टी-२० मॅच नाही की ज्यात निकाल प्रेडिक्टेबल असतो. दोन्ही बाजूंनी सैन्य असतं, सेनापती असतात, आणि दोघंही जिंकण्याच्या निर्धारानेच रणभूमीत उतरतात.

युद्धात कोण जिंकलं हे ठरवताना फक्त किती नुकसान झालं किंवा किती संसाधनं वापरली यावर नव्हे, तर आपलं मूळ उद्दिष्ट साध्य झालं का, यावर निर्णय घेतला जातो. उदाहरणार्थ, जर एखादं दहशतवादी प्रशिक्षण केंद्र उद्ध्वस्त करणं हे लक्ष्य असेल आणि त्यातून पुढील काही वर्षांत दहशतवादी गट निष्क्रिय झाले, तर हे ध्येय यशस्वी झालं, असं मानलं जातं. याच संदर्भात भारताने अलीकडे राबवलेलं ऑपरेशन सिंदूर हे नमूद करण्यासारखं आहे. या मोहिमेद्वारे भारताने सुमारे २५० दहशतवादी नष्ट केले, जे भारताचं मुख्य उद्दिष्ट होतं. परिणामी, पाकिस्तानला सैनिकी दृष्टिकोनातून मोठं नुकसान सहन करावं लागलं आणि काही काळासाठी का होईना, दहशतवादी हालचालींना मोठा झटका बसला.

कोणत्याही युद्धात नुकसान होणं हे अपरिहार्य असतं. पण रणनीती ही अशी असावी की आपल्या तुलनेत शत्रूचं जास्त नुकसान व्हावं. समजा, भारताची चार विमाने पडली, तर पाकिस्तानची सहा-सात विमाने पाडणं हे यश मानलं जातं. भारताने हल्ला परतवलाच नाही, तर त्याही पुढे जाऊन पाकिस्तानचे विमानं, ड्रोन, रडार सिस्टीम यांवर निर्णायक आघात केले.

माहिती उघड करणे की गुप्त ठेवणे?

भारताची विमाने किती पडली, याबाबत पारदर्शकता का नाही, असा प्रश्न अनेकदा विचारला जातो. पण युद्धात प्रत्येक गोष्ट जाहीर केली तर शत्रू त्यातून आपली रणनीती, क्षमतांची मर्यादा यांचं विश्लेषण करू शकतो. त्यामुळे अशा संवेदनशील बाबी गुप्त ठेवणं हे एक आवश्यक धोरण आहे. आपल्या विमानांनी पाकिस्तानची कोणती शस्त्रं निष्प्रभ केली, हे जर त्यांना समजलं, तर ते त्या दिशेने सुधारणा करतील.

पाकिस्तान : चीनची प्रयोगशाळा

चीनकडून पाकिस्तानला सातत्याने अत्याधुनिक शस्त्रांचा पुरवठा होतो. पाकिस्तान हे चीनसाठी एक 'फिल्ड टेस्टिंग ग्राउंड' आहे.

स्वतः चीन भारताशी थेट संघर्ष टाळतो; पण पाकिस्तानला भारताविरुद्ध झुंजवतो. या संघर्षातून चीन आपली शस्त्रं प्रभावी ठरतात की नाही, हे तपासत असतो.

मात्र, यावेळी चीनच्या शस्त्रांनी अपेक्षित कामगिरी केली नाही, हे स्पष्ट झालं. त्याउलट, भारताची स्वदेशी 'मेक इन इंडिया' शस्त्रं - जसे की आकाशतीर, ड्रोन, मिसाइल्स - यांनी उल्लेखनीय कामगिरी केली.

राफेल आणि सुखोईसारख्या भारतीय वायुदलाच्या ताकदीने पाकिस्तानची पार धूळधाण केली.

शस्त्रांच्या योग्य वापराचे आर्थिक शहाणपण

युद्धात 'किंमत-परिणाम' तत्त्व फार महत्त्वाचं असतं. जर शत्रू ५ लाख रुपयांचे ड्रोन हल्ल्यासाठी पाठवतो, आणि आपण त्यांना १० लाखांचे मिसाइल्स वापरून पाडतो, तर हे आर्थिकदृष्ट्या शहाणपणाचं ठरत नाही. भारताची अँटी-एअरक्राफ्ट डिफेन्स सिस्टीम ही समतोल आणि परिणामकारक आहे. तिने शत्रूचे विविध हल्ले अचूकपणे रोखले.

युद्धातून धडे आणि पुढील तयारी

१ प्रत्येक युद्ध काही ना काही शिकवून जातं. मागील अनुभव हे दिशा दाखवू शकतात; पण नवीन युद्धात नव्या रणनीतींची गरज असते. कारण रणभूमी, शस्त्रसामग्री, सैन्य संरचना आणि भौगोलिक परिस्थिती सतत बदलत असते.

२ युद्ध हे फक्त लढाई नव्हे, तर राष्ट्राच्या इच्छाशक्तीचं आणि दूरदृष्टीचं परीक्षण असतं. भारताचं उद्दिष्ट ठाम होतं - दहशतवाद्यांना जबर झटका देणं - आणि हे उद्दिष्ट साध्य करण्यात भारत यशस्वी ठरला. आपल्या शस्त्र सज्जतेची आणि सैन्याच्या क्षमतेची कसोटी या युद्धात झाली आणि भारताने ताकद सिद्ध केली.

-शब्दांकन : नम्रता फडणीस

मनी मंत्रा

गृहकर्ज घेऊन तुम्ही असे होऊ शकता श्रीमंत

चंद्रकांत दडस
वरिष्ठ उपसंपादक

स्वतःचे घर असणे हे अनेकांचे स्वप्न असते. घरमालकीतून सुरक्षितता व दीर्घकालीन स्थैर्य मिळते. हे स्वप्न पूर्ण करण्यासाठी गृहकर्ज उपयुक्त ठरते; कारण ते आर्थिक मदत देते. घरखरेदीसाठी मोठ्या रकमेची गरज असते. ती रक्कम गृहकर्जाच्या मदतीने मिळू शकते. हे कर्ज बँक किंवा वित्त संस्था देते. गृहकर्ज घेण्याचे फायदे नेमके काय ते जाणून घेऊ...

१. घरखरेदी म्हणजे दीर्घकाळासाठी गुंतवणूक असते. घर घेतल्यावर त्याची किंमत हळूहळू वाढत जाते. त्यामुळे आपण पैसे गुंतवून संपत्ती तयार करू शकतो.

२. गृहकर्जासाठी विविध परतफेड पर्याय उपलब्ध असतात. उदाहरणार्थ, बांधकाम सुरू असताना प्री-ईएमआय भरता येतो. स्टेप-अप ईएमआयमध्ये सुरुवातीला हप्ता कमी, नंतर वाढतो; तर स्टेप-डाउन ईएमआयमध्ये सुरुवातीला हप्ता जास्त, नंतर कमी होतो.

३. भारतात बँका साधारणपणे ८० ते ९० टक्क्यांपर्यंत कर्ज रक्कम देतात, त्यामुळे डाउन पेमेंट कमी लागते. नोकरी करणाऱ्या किंवा स्वयंरोजगार करणाऱ्यांना यामुळे मदत होते.

४. फिक्स्ड आणि फ्लोटिंग व्याजदर याचा पर्याय असतो. कर्जाची मुदत ३० वर्षांपर्यंत असू शकते. दुसऱ्या बँकेत कर्ज ट्रान्स्फर करून कमी व्याजदर घेता येतो.

५. नियमितपणे हप्ते भरल्यास चांगला क्रेडिट स्कोअर तयार होतो. वेळेवर हप्ता भरल्याने आपली आर्थिक शिस्त दिसते. भविष्यात इतर कर्ज घ्यायचे असेल, तर फायदा होतो.

६. कर्जाचा काही भाग किंवा संपूर्ण रक्कम मुदतपूर्वी फेडण्याची सुविधा असते. यामुळे व्याज कमी होते.

७. गृहकर्जात व्याजावर दोन लाखांपर्यंत आणि मूळ रकमेवर १.५ लाखापर्यंत करसवलत मिळते.

संयुक्त कर्ज असल्यास दोघांनाही सवलत मिळते.

८. बँका कर्ज प्रक्रियेमध्ये आवश्यक मदत करतात. कागदपत्रे, कायदेशीर प्रक्रिया, घरतपासणी यांसाठी त्यांनी मदत होते. काही बँका घर शोधण्यातही मदत करतात.

९. गृहकर्जामुळे दीर्घकालीन सुरक्षितता मिळते. स्वतःचे घर असल्याने भाड्याच्या चिंतेपासून सुटका होते.

१०. भविष्याची आर्थिक तयारी होते. गरज पडल्यास भविष्यात हे घर गहाण ठेवून कर्ज मिळवता येते.

असं वाटतं.. आता जीव जातो की काय?

पवन देशपांडे
सहायक संपादक

आपली कार एका उंच ठिकाणी पोहोचली आणि तेथून ती थेट अनेक फूट खोल कोसळतेय... हा अनुभव कसा असू शकेल? आता जीव जातो आपला... पहिला विचार येईल... आता जीव जातो आपला... असा काहिसा अनुभव यास आयलँडमध्ये तुम्हाला घेता येतो. तेही अत्यंत सुरक्षितपणे.

अबु धाबीमधले यास आयलँड अशाच अनेक थरारक आणि रोमांचक अनुभव घेणाऱ्यांसाठी उभं राहिले आहे. फेरारी वर्ल्डच्या वर्ल्ड फास्टेस्ट रोलर कोस्टरपासून ते सी वर्ल्डमधील खोल समुद्रातल्या भीतीदायक शार्कपर्यंत आणि वॉर्नर ब्रदर्स वर्ल्डच्या आश्चर्यचकीत करणाऱ्या प्रत्यक्ष हॉलीवूड दुनियेत रमण्यासाठी यास आयलँड आता पर्यटकांसाठी आकर्षणाचे पर्यटन स्थळ बनले आहे. जिंदगी ना मिलेगी दोबारा या चित्रपटात हृतिक रोशन, फरहान अख्तर और अभय देओल हे एकमेकांना जसे टास्क देत साहसी पर्यटनाची मजा करतात, तशाच प्रकारचा अनुभव घेण्याची संधी मिराल डेस्टिनेशन्सने दिली.

फेरारी वर्ल्डच्या 'फॉर्म्युला रोसा' या वर्ल्ड फास्टेस्ट रोलर कोस्टरवर आम्ही जेव्हा स्वार झालो तेव्हाचा अनुभवही 'खतरनाक' असाच होता. त्यासाठी रांगेत आम्ही उभे होतो, तेव्हा एक वेगळीच उत्सुकता आणि भीती जाणवत होती. समोरच फेरारी एफ१ कारसारखी एक लाल ट्रेन उभी होती. त्यांनी खास संरक्षणात्मक गॉगल्स दिले. माझी सीट एकदम कडेची होती. सेफ्टी हार्नेस घट्ट बांधले गेले. ट्रेन लॉंचिंग पॉइंटवर होती. कितीही भीती वाटली तरी, मागे फिरायचा प्रश्नच नव्हता. अचानक त्या ट्रेनने ४.९ सेकंदात शून्यावरून थेट २४० किलोमीटर प्रतितास वेग गाठला! जोरदार धक्का बसला. चेहऱ्यावर हवा आदळत होती, पण गॉगल्समुळे डोळे सुरक्षित होते.

'ते' एक मिनीट आणि बत्तीस सेकंद...

ट्रेन १७० फुटांहून अधिक उंचीवर गेली आणि त्या उंचीवरून जेव्हा ती अचानक खाली आली तेव्हा अंगावर शहारा आला. संपूर्ण २.२ किलोमीटर लांबीचा ट्रॅक होता. वेगाने येणारी ती तीव्र वळणं, अचानक येणारे उतार आणि प्रचंड वेग पहिल्यांदा अनुभवयास येत होता. राइड फक्त एक मिनिट बत्तीस सेकंदांची होता, पण या क्षणांमध्ये वेळ थांबल्यासारखा वाटला. जेव्हा ट्रेन थांबली, तेव्हा माझा श्वास जणू थांबलेला होता. फेरारी वर्ल्डमध्ये अनेक अशा गोष्टींचा अनुभव घेता येतो.

येथे आपण शिरतो समुद्राच्या खोल गर्भात

१ यास आयलँडवरील सी वर्ल्डही असेच ठिकाण. तिथे पहिल्यांदा पाऊल टाकले, तेव्हा वाटले, जणू मी समुद्राच्या खोल गर्भात शिरलोय. समोरच प्रचंड डिजिटल महासागर – पूर्ण ३६० डिग्री! निळसर प्रकाश, चारही बाजूंनी फिरणारे हजारो समुद्री जीव आणि पाण्याचा सौम्य आवाज... हे काही साधं ॲक्वेरियम नाही तर महासागराच्या प्रत्येक रूपाला जवळून अनुभवण्याची संधी देणारे एक भव्य, जिवंत जग आहे.

२ **पोलर ओशियन, ट्रॉपिकल ओशियन, आर्क्टिक, एंडलेस ओशियन, रॉकी पॉइंट, अबु धाबी ओशियन या प्रत्येक झोनमध्ये एक नवीन वातावरण, नवीन प्राणी आहे. सर्वाधिक नजर खिळवून ठेवतो एंडलेस ओशियन विभाग. प्रचंड अॅक्रिलिक ग्लासमधून हजारो मासे, शार्क, मंता रे व इतर समुद्री जीव अगदी समोरून पोहताना दिसतात.**

३ डॉल्फिन्स आणि पेंग्विन्सना जवळून बघणे, त्यांच्या हालचाली टिपणे हे अनुभव अगदी मनाला भिडणारे होते. हजारो लहान-मोठे पर्यटक प्रत्येक विभाग आचंबित होऊन पाहताना दिसत होता.

हॉलीवूडच्या दुनियेत फिरून आल्याचा अनोखा अनुभव

त्यानंतर वॉर्नर ब्रदर्स वर्ल्ड पाऊल टाकले. समोर होते बग्ज बनी, डॅफी डक, टॉम अँड जेरी, स्कूबी डू, सुपरमॅन, बॅटमॅन... सगळे स्वागताला तयार होते. वाटलं, मी कार्टून नेटवर्क किंवा कॉमिक्सच्या पानांत शिरलोय! हे पार्क पूर्णपणे इनडोअर आहे – वातानुकूलित, हवामानाशी असलेलं कुठलंही बंधन नाही. त्यामुळे उन्हातान्हाची चिंता न करता दिवसाचा प्रत्येक क्षण इथं मनसोक्त घालवता येतो.

इथल्या प्रत्येक विभागात थरारक राइड्स आहेत. जस्टिस लीग नावाची राईड तुम्हाला थेट अवकाश सफर घडवते. इथे २९ पेक्षा जास्त राइड्स आणि आकर्षण केंद्र आहेत. प्रत्येक वयोगटासाठी शो आहेत. कार्टून, सुपरहीरो आणि हॉलिवूडचं त्रिकूट एकाच छताखाली पाहायला मिळते.

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 13-07-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH05 User: cci Time: 07-12-2025 23:11 Color:

'टोपी गैंग' के 2 चोर पुलिस ने किए काबू

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: साउथ वेस्ट डिस्ट्रिक्ट की AATS ने दुकानदारों को बातों में उलझाकर चोरी करने वाले 'टोपी गैंग' के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान नितिन कुमार और हिमांशु कुमार के रूप में हुई है। पुलिस ने इनके कब्जे से दो मोबाइल फोन, दो हजार रुपये और दो टोपी बरामद की हैं। जांच में पता चला है कि पकड़े गए आरोपी मूल रूप से कानपुर, यूपी के रहने वाले हैं और पहचान छिपाने के लिए टोपी पहनकर वारदात को अंजाम देते थे। DCP अमित गोयल के अनुसार चार जून को साउथ कैंपस थाना पुलिस को एक दुकानदार ने चोरी की शिकायत की। शिकायत में उसने बताया कि वह साउथ कैंपस इलाके में जनरल स्टोर चलाते हैं। उनकी दुकान पर दो युवक आए। एक ने उन्हें बातों में उलझाया और दूसरे ने मोबाइल फोन चोरी कर लिया। DCP ने बताया कि इस तरह की वारदात की अन्य शिकायतें भी आई थीं। AATS के इंस्पेक्टर रामकुमार की देखरेख में बनी पुलिस टीम ने काफी मशक्कत के बाद इन सभी को अलग-अलग जगहों से दबोचा।

बातों में उलझाकर दुकानदार को बनाते थे शिकार

मॉर्निंग वॉक पर निकले SI को मारी टक्कर

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: चाणक्यपुरी इलाके में दोस्त के साथ मॉर्निंग वॉक पर निकले सब इंस्पेक्टर को कार ड्राइवर ने जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में SI को गंभीर चोटें आईं। पहले उन्हें RML अस्पताल में भर्ती कराया गया। बाद में पैर के ऑपरेशन के लिए, चाणक्यपुरी के प्राइमस अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। वहीं पुलिस ने मौके से आरोपी कार चालक मनोज कुमार सिंह को गिरफ्तार कर लिया। घायल SI की हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि 59 वर्षीय SI वैजू परिवार के साथ अशोका पुलिस लाइन में रहते हैं। अभी उनकी ड्यूटी नई दिल्ली में है। 7 जुलाई की सुबह वह अपने साथी सीनू जैकब के साथ मॉर्निंग वॉक पर निकले थे। जब वह सुबह 6 बजे ब्रिटिश एंबेसी, शांतिपथ के पास पहुंचे, तभी एक तेज रफ्तार कार ने उन्हें जोरदार हिट कर दिया। उन्हें काफी गंभीर चोटें आईं। PCR कॉल के बाद उन्हें पहले RML में भर्ती कराया गया।

पुलिस ने मौके पर ही कार ड्राइवर को किया अरेस्ट

'ईजी मनी' के लिए इंटरनैशनल साइबर स्कैम का बन गए हिस्सा

शातिर तरीके

इन्वेस्टमेंट पर अच्छे रिटर्न का दावा करने वाले पांच साइबर ठग पकड़े

इनके पास से 5 मोबाइल फोन, 5 सिम, 3 चेकबुक, 2 एटीएम कार्ड बरामद

10% कमीशन के लालच में रेंट पर दे रहे थे बैंक अकाउंट, 5 अरेस्ट

एक महिला ने शिकायत दी थी कि उसे पार्ट टाइम जॉब का ऑफर देकर 11 लाख ठगे

Vishal.sharma3@timesofindia.com

■ **साइबर स्कैम** की यह खबर पढ़कर आप चौंक सकते हैं। कैसे 'ईजी मनी' कमाने को 'हायर स्टडी' कर रहे होनहार छात्र इंटरनेशनल साइबर फ्रॉड का हिस्सा बन रहे हैं। जी हां, इन्वेस्टमेंट पर अच्छे रिटर्न का दावा करने वाले एक सिंडीकेट के पांच साइबर ठग पकड़े हैं, जो BBA की पढ़ाई कर रहे हैं। जबकि इनका मास्टरमाइंड रशिया में MBBS की पढ़ाई कर रहा है। ये लोग रेंट पर अकाउंट उपलब्ध कराते थे। इन अकाउंट्स में स्कैम वाली रकम की हर एक ट्रांजेक्शन पर 5 से 10% कमिशन मिलता था। आरोपियों में मेरठ के न्यू मोहनपुरी निवासी कार्तिक सैनी जो कि बीकॉम की पढ़ाई कर रहा है। मेरठ निवासी वरुण कुमार बीबीए की पढ़ाई कर रहा है। मुजफ्फर नगर निवासी शारिम खान जो कि पढ़ाई के साथ साथ खतौली में मेडिकल स्टोर चलाता है। मुजफ्फर नगर निवासी हुमैद खान बीबीए की पढ़ाई कर रहा है। मुजफ्फर नगर निवासी सुहैल सैफी भी बीबीए की पढ़ाई कर रहा है। इनका मास्टरमाइंड समीर रशिया में MBBS कर रहा है। पुलिस ने इनके पास से 5 मोबाइल फोन, 5 सिम, 3 चेकबुक, 2 एटीएम कार्ड बरामद किए हैं।

हायर स्टडी कर रहे होनहार छात्र बन रहे हैं इनका शिकार

डीसीपी राजा बांठिया के मुताबिक शास्त्री नगर निवासी एक महिला ने शिकायत दी कि उसे पार्ट टाइम जॉब को लेकर टेलीग्राम पर रिव्यू टास्क का एक लिंक मिला। वह उनकी बातों में आ गई। लिंक पर क्लिक करने पर जो निर्देश मिले। वैसा ही वह करती गई। महिला का दावा है कि उससे 11 लाख रुपए ठग लिए। पुलिस ने मामला दर्ज किया। एसीपी हेमंत मिश्रा के सुपरविजन में इंस्पेक्टर रोहित, मनीष, कॉन्स्टेबल राजेंद्र और कुलदीप की टीम तफ्तीश में जुटे। जांच के दौरान 100 मोबाइल नंबर और IMEI की कॉल डिटेल रिकॉर्ड की छानबीन की। कई बैंक खातों में ट्रांजेक्शन की जांच के अलावा ई-कॉमर्स और UPI प्लेटफॉर्म जैसे PhonePe, Paytm, Rapido, Porter, Swiggy, Zomato, Bluedart जैसे ठिकानों पर पड़ताल की। कई छापे मारे। लेकिन आरोपी बार-बार अपना ठिकाना बदल रहे थे। टीम ने संदिग्ध मोबाइल नंबरों पर लगातार निगरानी रखी। मेरठ और मुजफ्फर नगर के इलाकों में लोकेशन का सुराग मिला। इसके बाद मेरठ में छापेमारी कर आरोपी कार्तिक सैनी को गिरफ्तार किया। पूछताछ में उसने अपने दोस्त वरुण के बारे में बताया। वरुण को भी मेरठ से गिरफ्तार कर लिया। बाकी आरोपियों को पकड़ने के लिए कोशिशें जारी थीं। इसके बाद 9 जुलाई को मुजफ्फर नगर से आरोपी शारिम खान, हुमैद खान और सुहैल सैफी नाम के आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया।

सिंडिकेट का मास्टरमाइंड रशिया में कर रहा है MBBS

पूछताछ में आरोपी कार्तिक सैनी ने खुलासा किया कि उसने खाते खोले थे। सभी खातों को नेट बैंकिंग आईडी, पासवर्ड, कॉर्पोरेट आईडी और खाते से जुड़ा सिम वरुण कुमार को देता था। इसके बदले 8,000 रुपये लेता था। आरोपी वरुण ने खुलासा किया कि उसने यश नाम के एक शख्स को हर एक लेनदेन पर 5% कमीशन के बदले खाते की डिटेल देता था। इसके बाद यश दिए गए बैंक खाते में ठगी की गई रकम ट्रांसफर करवाता था। वरुण और कार्तिक सैनी कैश लेकर यश को पैसे भेजता था। पुलिस का कहना है कि मामले में पीड़िता के कुल 2.75 लाख रुपए खाते में जमा किए गए थे, जिन्हें कार्तिक सैनी ने निकालने के बाद यश को भेज दिया था। आरोपी वरुण ने आगे खुलासा किया कि उसने यश को अपना और एक अन्य बैंक खाता भी दिया था। पुलिस ने जांच में पाया कि ये आरोपी इस रैकेट की पहली लेयर का हिस्सा है। इस रैकेट की दूसरी लेयर में आरोपी शारिम खान, हुमैद खान और सुहैल सैफी शामिल थे। आगे की पूछताछ में आरोपी शारिम खान और सुहैल सैफी ने खुलासा किया कि उन्होंने खाते खोले और हुमैद खान को बैंक खाते की सारी डिटेल उपलब्ध कराई। प्रत्येक खाते के लिए 5,000 रुपए मिले। पुलिस का कहना है कि पीड़ित के 2.80 लाख रुपये खाते में जमा हो गए थे। हुमैद खान के निर्देश पर उसने सुहैल सैफी के खाते में 1 लाख रुपये ट्रांसफर कर दिए थे। आरोपी हुमैद खान से पूछताछ में और भी चौंकाने वाला खुलासा हुआ। उसने बताया कि उसका एक दोस्त समीर मलिक है। जो रूस से एमबीबीएस कर रहा है। दावा है कि उसी ने ठगी वाली रकम ट्रांसफर करने के लिए बैंक खाते उपलब्ध कराने को कहा था। जिसके लिए समीर मलिक ने हुमैद खान को उन खातों में प्रत्येक लेनदेन पर 10% कमीशन देने का वादा किया था।

समीर मलिक अभी भी रूस में मौजूद है, वह वहीं एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा है। आरोपियों के पास से कुल पांच मोबाइल फोन, 5 सिम कार्ड, 3 चेक बुक और 2 एटीएम कार्ड बरामद किए गए हैं। इन मोबाइल फोन के डेटा की छानबीन की जा रही है। पुलिस का कहना है आरोपी हुमैद खान और वरुण कुमार बैंक अकाउंट्स उपलब्ध कराने वाले मैन मास्टरमाइंड हैं। आगे की जांच की जा रही है।

पुलिस का दावा, चंद पैसों के लालच में स्कैम का हिस्सा बन रहे छात्र

गैंगस्टर नीरज बवानिया को नहीं मिली अंतरिम ज़मानत

Prachi.Yadav@timesofindia.com

निराशा
- बीमार पत्नी की देखभाल के आधार पर कोर्ट से रखी थी मांग
- 3 दिन की कस्टडी परोल से चलाना होगा काम

■ **दिल्ली हाई** कोर्ट ने गैंगस्टर नीरज सहरावत उर्फ बवानिया को अंतरिम जमानत देने से इनकार कर दिया है, जिसने 'बीमार' पत्नी की देखभाल के आधार पर यह मांग रखी थी। कोर्ट ने कहा कि अपराध की गंभीरता और आवेदक के आपराधिक इतिहास को देखते हुए, उसके फरार होने की आशंका को खारिज नहीं किया जा सकता।

बवानिया की याचिका ठुकराते हुए जस्टिस संजीव नरूला ने कहा कि आवेदक के फरार होने की आशंका एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है और इस तरह, अंतरिम ज़मानत देने का मानदंड यहां पूरा नहीं होता। गैंगस्टर ने अपनी पत्नी की मेडिकल कंडिशन के आधार पर 6 हफ्तों के लिए अंतरिम जमानत मांगी थी। वह मंगोलपुरी थाने में हत्या और आपराधिक साजिश के अपराधों के लिए 25 अगस्त 2015 में दर्ज एक एफआईआर के सिलसिले में हिरासत में है। पुलिस ने आवेदक से जुड़े 28 मामलों का ब्यौरा कोर्ट के सामने रखा।

सहरावत की ओर से सीनियर एडवोकेट एन हरिहरन ने दलील दी थी कि आवेदक को पहले इस अदालत ने 30 जून, 2025 के आदेश के जरिए कस्टडी परोल दी थी। हालांकि, अस्पताल जाने के दौरान कई पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी ने मेडिकल ऑपरेशन को गंभीर रूप से बाधित किया। दूसरी ओर, पुलिस की ओर से सरकारी वकील तरंग श्रीवास्तव ने अंतरिम ज़मानत याचिका का कड़ा विरोध किया। तर्क दिया कि आवेदक का आपराधिक मामलों में लंबा इतिहास रहा है और वह लगातार गिरोहों के साथ गैंगवॉर में शामिल रहा है।

10 जुलाई को पारित आदेश में जस्टिस नरूला ने कहा कि जबकि स्टेटस रिपोर्ट दर्शाती है कि आवेदक को कुछ मामलों में बरी कर दिया गया है और अन्य मामलों में अभी भी सुनवाई चल रही है, अदालत उन मामलों की बड़ी संख्या को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती जिनमें उसे फंसाया गया है। इसके अलावा, मौजूदा एफआईआर में, आवेदक पर आईपीसी की धारा 302 के तहत मुकदमा चल रहा है, जो हत्या के आरोपों से जुड़ा एक बेहद गंभीर आरोप है।

हाई कोर्ट ने बवानिया की पत्नी की बीमारी की गंभीरता को लेकर भी संदेह जताया। कोर्ट ने कहा कि वह पुलिस के इस तर्क को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि एमआरआई रिपोर्ट मौजूद होने के बावजूद, परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा लगभग एक महीने तक उसे किसी ज्यादा बेहतर अस्पताल में शिफ्ट करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया और यह अब अर्जेंसी की दलील पर संदेह पैदा करता है।

कोर्ट ने हालांकि, मानवीय आधार पर आवेदक को 3 दिनों की कस्टडी परोल देने की इच्छा जताई ताकि न्याय और सार्वजनिक सुरक्षा के हितों से समझौता किए बिना वह अपनी पत्नी के ट्रांसफर और इलाज के लिए जरूरी वित्तीय और लॉजिस्टिक व्यवस्था कर सके। इस दौरान बवानिया पर पहले वाले नियम ही लागू होंगे।

स्पेशल स्टाफ टीम को मिला मेडल

■ NBT न्यूज, जनकपुरी: कई लूट, स्नैचिंग इत्यादि वारदात में शामिल रहे दो कुख्यात बदमाशों को मुठभेड़ में दबोचने वाली वेस्ट डिस्ट्रिक्ट के स्पेशल स्टाफ की टीम को असाधारण कार्य पुरस्कार मेडल दिया गया। पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा के द्वारा घोषित किए गए इस पुरस्कार को वेस्ट डिस्ट्रिक्ट हेडक्वॉर्टर में DCP विचित्र वीर ने चारों पुलिसकर्मी इंस्पेक्टर राजेश मौर्या, सब इंस्पेक्टर अनिल, हेड कॉन्स्टेबल दीपक और विजय की वर्दी पर मेडल लगाकर उन्हें पुरस्कृत किया। इस दौरान एडिशनल DCP वेस्ट सुकांत एस बल्लभ सहित अन्य पुलिसकर्मी भी मौजूद रहे। DCP ने बताया कि पुलिस टीम ने पंजाबी बाग इलाके में पिछले साल हुए मुठभेड़ में दो वॉन्टेड बदमाशों को ट्रैप किया था।

दो कुख्यात बदमाश को मुठभेड़ में दबोचा था

विडियो बनाकर वकील से कर रहे हैं ब्लैकमेलिंग

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली: शालीमार बाग इलाके में रहने वाले एक 54 साल के वकील का विडियो सोशल मीडिया पर डालने और उसे डिलीट करने के नाम पर साइबर ठगों ने करीब एक 1 लाख 71 हजार रुपये ठग लिए। यह साइबर ठग खुद को क्राइम ब्रांच का अधिकारी बता रहे थे। फिलहाल साइबर थाना पुलिस पीड़ित वकील की शिकायत पर ठगी, ब्लैकमेलिंग करने समेत अन्य धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच कर रही है।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि 54 वर्षीय वकील परिवार के साथ शालीमार बाग इलाके में रहते हैं और रोहिणी कोर्ट में प्रैक्टिस करते हैं। पुलिस को दिए बयान के मुताबिक उनके मोबाइल पर फेसबुक से विडियो कॉल आया। कॉल में एक लड़की आपत्तिजनक बातें कर रही थी। तब उन्होंने कॉल काट दिया। दोबारा आए कॉल में एक युवती आपत्तिजनक स्थिति में थी और अश्लील शब्दों का इस्तेमाल कर पीड़ित को उलझा लिया। उन्होंने फिर से फोन काट दिया। कुछ देर बाद उनके वट्सऐप पर एक मेसेज आया कि आपकी विडियो बना ली गई है। तुरंत 10 हजार रुपये भेजो वरना विडियो सोशल मीडिया पर डाल दी जाएगी। कुछ दिन बाद एक कॉल आया और कॉलर ने अपना नाम आलोक वर्मा बताते हुए खुद को क्राइम ब्रांच का एसपी बताया। उसने कहा कि उनके खिलाफ एक युवती ने कंप्लेन दी है। फिर उसने ने राहुल शर्मा को नंबर दिया और कंप्लेन के बारे में बातचीत करने को कहा। तब पीड़ित ने राहुल शर्मा को कॉल किया। राहुल ने उन्हें एक विडियो वट्सऐप पर भेजा। तब उन्हें याद आया कि उस रात जो कॉल आया था, उसका ही यह विडियो है। समाज में अपनी प्रतिष्ठा को देखते हुए उन्होंने राहुल से विडियो को सोशल मीडिया से हटाने का अनुरोध किया। तब राहुल ने कहा कि इसके लिए 51 हजार लगेंगे। पीड़ित ने 51 हजार दे दिए। राहुल ने इसके बाद ब्लैकमेल करके उनसे एक लाख 71 हजार ठग लिए। उनसे जब फिर से 50 हजार मांगे गए तब उन्हें ठगी का पता चला।

फेसबुक से लड़की ने किया था आपत्तिजनक विडियो कॉल

बढ़ा टेक्नॉलजी का इस्तेमाल तो दिल्ली में गिरा क्राइम का ग्राफ

Technology

Shanker.Singh@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली:** दिल्ली पुलिस ने शनिवार को 1 जनवरी से 30 जून तक का क्राइम डेटा जारी किया है। बीते दो साल की तुलना में 2025 के शुरुआती छह महीनों में स्ट्रीट क्राइम से लेकर गंभीर अपराध तक में कमी दिख रही है। पिछले साल इसी समय के मुकाबले अबकी बार लूट में 22.88 फीसदी कमी आई है। स्नैचिंग भी 25.97 फीसदी तक घटी है। सेंधमारी 2024 की तुलना में 25.40, घरों में चोरी 16.07 और गाड़ी चोरी 5.98 फीसदी कम हुई है। रेप-पॉक्सो के केस 10.38 फीसदी और छेड़छाड़ के 12.50 फीसदी केस 2024 के मुकाबले कम दर्ज हुए हैं। मर्डर के मामलों में 3.73 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

आंकड़ों के मुताबिक, गंभीर अपराध 2024 में 2,543 दर्ज हुए थे, अबकी बार 13.13 फीसदी गिरावट के साथ 2,209 मामले दर्ज हुए हैं। स्पेशल सीपी (क्राइम) देवेश चंद्र श्रीवास्तव बताते हैं कि टेक्नॉलजी के इस्तेमाल को बढ़ाया गया है। पुलिस ने क्रिमिनल्स का डेटा मजबूत किया है। आदतन अपराधियों की क्राइम कुंडली बनाई गई है। फॉरेंसिक साइंस लैब (FSL) की 30 गाड़ी होने का फायदा मिल रहा है। अपराधियों के फिंगर प्रिंट भी पुलिस के पास हैं। तेजी से केस सॉल्व हो रहे हैं और अपराधी पकड़े जा रहे हैं।

फरेंसिंक साइंस लैब की 30 गाड़ी होने का मिल रहा फायदा

महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध भी घटे हैं। रेप-पॉक्सो के केस 2024 के शुरुआती छह महीने में 1040 दर्ज हुए थे, जो अबकी बार 932 हैं। स्पेशल सीपी ने बताया कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए इस साल 'ऑपरेशन शिष्टाचार' लॉन्च किया गया। इसके काफी सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसी तरह महिलाओं का पिंक स्कूटर दस्ता भी पट्रोलिंग पर रहता है। पुलिस की तरफ से की प्रीवेंटिव एक्शन भी लिए गए हैं। इस वजह से महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में कमी देखने को मिल रही है।

पुलिस के आंकड़ों में कमी को शक की निगाह से देखा जाता है, लेकिन गाड़ी या अन्य चोरी की वारदात की एफआईआर ऑनलाइन होती है। इनका ग्राफ भी गिरा है। स्पेशल सीपी श्रीवास्तव कहते हैं कि जिला पुलिस भी 'सहायक' जैसे ऐप से लैस है। हर शनिवार को पुलिसवालों की कंप्यूटर और तकनीक की ट्रेनिंग हो रही है। पब्लिक के सहयोग से 2.25 लाख से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। स्पेशल सेल, क्राइम ब्रांच और जिलों के बीच सहयोग बेहतर हुआ है। इसका फायदा मिल रहा है। गैंगवॉर और ऑर्गनाइज्ड क्राइम दिल्ली में अपराध बढ़ने की बड़ी वजह रहे हैं। स्पेशल सीपी ने कहा कि गैंगवॉर और नशे पर जीरो टॉलरेंस पॉलिसी है।

टेक्नॉलजी के इस्तेमाल को बढ़ाया गया है। पुलिस ने क्रिमिनल्स का डेटा मजबूत किया है। आदतन अपराधियों की क्राइम कुंडली बनाई गई है। FSL की 30 गाड़ी होने का फायदा मिल रहा है। अपराधियों के फिंगर प्रिंट भी पुलिस के पास हैं। तेजी से केस सॉल्व हो रहे हैं और अपराधी पकड़े जा रहे हैं। महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध भी घटे हैं। रेप-पॉक्सो के केस 2024 के शुरुआती छह महीने में 1040 दर्ज हुए थे, जो अबकी बार 932 हैं। –स्पेशल सीपी (क्राइम) देवेश चंद्र श्रीवास्तव

मॉडर्न टेक्नॉलजी बन रही हैं पुलिस के लिए मददगार

सीसीटीवी कैमरे, क्राइम मैपिंग और डेटा एनालिटिक्स जैसे डिवाइसों से अपराध के हॉटस्पॉट की पहचान की गई। इससे जुर्म के पैटर्न को ट्रैक करने में आसानी हो रही है। फेशियल रिकॉग्निशन सिस्टम (FRS) से भी अपराधी पकड़े जा रहे हैं। सीसीटीवी कैमरों, सोशल मीडिया और अन्य सोर्स से मिली फुटेज का FRS से एनालिसिस करके पुलिस संदिग्धों की पहचान कर रही है। इससे उन्हें ट्रैक करने में भी मदद मिल रही है। इसी तरह ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकॉग्निशन (ANPR) कैमरे गाड़ियों की आवाजाही को ट्रैक करने, चोरी या संदिग्ध गाड़ियों की पहचान करने में मददगार साबित हो रही है।

9 ऑटो लिफ्टर गिरफ्तार, चोरी की 15 गाड़ियां हुई बरामद

■ NBT न्यूज, वेस्ट दिल्ली

वेस्ट डिस्ट्रिक्ट पुलिस ने गाड़ी चोरी करने वाले 9 बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से चोरी की 15 स्कूटी और बाइक बरामद हुई हैं। इनकी गिरफ्तारी से पुलिस ने 11 थानों के मामलों का खुलासा किया है। बरामद स्कूटी और बाइक तिलक नगर, जनकपुरी, कीर्ति नगर, केशवपुरम, उत्तम नगर, सागरपुर, मायापुरी, ख्याला, हरि नगर और सराय रोहिल्ला थाना इलाके से चुराई गई थीं।

डीसीपी वेस्ट विचित्र वीर ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान जुडी, जसप्रीत, अंकित शर्मा, रोहित उर्फ गोलू, गोली, मोहम्मद साहिल, भारत उर्फ करण, गुरमीत सिंह उर्फ मोंटी, कार्तिक और देव कुमार उर्फ देव के रूप में हुई है। इनको ख्याला, कीर्तिनगर, तिलक नगर, तिलक विहार, हरि नगर, राजौरी गार्डन, इंद्रपुरी थाना और पुलिस चौकी की टीम ने गिरफ्तार किया है।

तिलक नगर के SHO विनीत पांडे की देखरेख में चौकी इंचार्ज गजेंद्र की टीम ने CRPF कैंप के पास से एक ऑटो लिफ्टर को चोरी की बाइक के साथ पकड़ा। पूछताछ में दो स्कूटी और बरामद की गई हैं। दूसरे मामले में टीम ने चोरी की स्कूटी और बाइक के साथ अंकित शर्मा को गिरफ्तार किया। राजौरी गार्डन SHO एम. एस. कमाल की टीम ने वेस्ट गेट मॉल के पास से स्कूटी चोर को गिरफ्तार किया। हरि नगर SHO आशु गिरोत्रा, सब इंस्पेक्टर विक्रांत की टीम ने पट्रोलिंग के दौरान ऑटो लिफ्टर को गिरफ्तार किया। तिलक विहार चौकी इंचार्ज नरेश अहलावत की टीम ने नाइट पट्रोलिंग के दौरान स्कूटी चोर को गिरफ्तार किया।

PUBLIC NOTICE

We hereby inform the general public that Mr. Yuvraj Arora and Mr. Vivek Arora ("**Our Clients**"), have filed a Writ Petition bearing **CWP No. 15756 of 2025**, titled *"Yuvraj Arora and Another vs. Director, Town and Country Planning Department, Haryana & Others"*, before the **Hon'ble Punjab and Haryana High Court** against **Ramprastha Estates Pvt. Ltd., Ramprastha Developers Pvt. Ltd., Ramprastha Promoters and Developers Pvt. Ltd., and Signature Global Business Park Pvt. Ltd, and other government authorities.**

By way of **Order dated 05.03.2025**, the **Learned Haryana Real Estate Regulatory Authority** ("**HRERA**") in Execution Petition bearing no. E-5757-2024-6009-2023, filed by our Clients, directed the attachment of land parcels owned by above mentioned entities forming part of the **Ramprastha Group** bearing Khasra Nos. 117/2, 118/2, 119/1, 121, 107/1, 107/3/1, 107/3/3, 109/1, 110/1, 110/3/1, 110/3/3, 111/1, 112, 120/1, 381/236/1/2, 382/236/1, 384/237/2, 386/238/2, 82/3/2, 83/2/1, 398–399/87/2/1, 88/2/1, 89/2/1, and 89/2/3, situated in Village Gadauli Kalan, Sectors 37-C and 37-D, District Gurugram.

In violation of the aforesaid order passed by the Ld. HRERA, entities forming part of the Ramprastha Group as stated above have **sold attached** Khasra Nos. 117/2, 118/2, 119/1, and 121, situated in Village Gadauli Kalan, Sectors 37-C and 37-D, District Gurugram, to **Signature Global Business Park Pvt. Ltd**.

By way of **Order dated 07.07.2025**, in **CWP No. 15756 of 2025** the **Hon'ble Punjab and Haryana High Court** has ordered a ***status quo*** on the above mentioned parcels of land which read follows:

"In the meantime, status quo in respect of the land in question be maintained, as the execution application is already pending before the HRERA and the property in question has already been ordered to be attached by the executing court."

The public at large, including prospective buyers, investors, brokers, and developers, are hereby advised to exercise utmost caution and not to enter into any agreement, transaction, or arrangement or deal with the above-mentioned properties. Any such dealings shall be entirely at the risk and peril of the parties concerned and may be rendered ineffective in law, subject to the outcome in CWP No. 15756 of 2025 pending before the Hon'ble Punjab and Haryana High Court and/or any legal action taken by our Clients.

Issued in public interest. For further information, please call the Authorized Representative (**Mob: 9582327469**) appointed by our Clients.

Sd/-
Bahuguna Law Associates
Advocates for Mr. Yuvraj Arora and Mr. Vivek Arora
Date: 12/07/2025

नजफगढ़ रोड पर हुआ हादसा, स्कूटर जला

■ NBT न्यूज, बिंदापुर

बिंदापुर थाना इलाके में एक स्कूटी सवार गंभीर रूप से घायल हालत में मिला। उसे बेहोशी की हालत में एक प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी पहचान वैदेश्वरन के रूप में हुई है।

स्कूटी सवार अस्पताल में भर्ती

इस मामले की जानकारी देते हुए डीसीपी द्वारका अंकित सिंह ने बताया कि माता रूप रानी मग्गो हॉस्पिटल से देर रात करीब 1 बजे पुलिस को सूचना मिली थी। घायल शख्स मोहन गार्डन के राम पार्क इलाके का रहने वाला है और बयान देने की हालत में नहीं है। छानबीन में पता चला कि एक्सिडेंट मेट्रो पिलर नंबर 668 के पास हुआ है। मौके से पुलिस को एक स्कूटी जली हुई हालत में मिली है। जांच के लिए क्राइम टीम को भी बुलाया गया। पुलिस को वहां आधी रात में दो लोग मिले, लेकिन उन्होंने कोई जानकारी या स्टेटमेंट नहीं दिया। बिंदापुर थाने में मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस को मौके से एक गाड़ी की टूटी हुई नंबर प्लेट भी मिली है, जिसके आधार पर आगे की छानबीन की जा रही है।

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 13-07-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH10 User: cci Time: 07-12-2025 22:30 Color:

बरसन लागी बदरिया...

AI Image

सावन में जब मन के भीतर भावों के मेघ उमड़ते हैं तो आंखों से भी संवेदनाओं की धार बह निकलती है। ऐसे ही भीगे पलों में उत्तर भारत की मिट्टी से कजरी जैसे सावन के लोकगीत फूटते हैं। आजादी की लड़ाई में भी इन गीतों ने घर-घर देशप्रेम की लौ जलाए रखी। इन गीतों ने मन की तरलता को स्वर दिया और हजारों महिलाओं ने इन्हें अपनी पीड़ा और प्रतिरोध जताने का माध्यम बनाया। सावन की इन्हीं फुहारों में भीगते लोकगीतों के सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व के बारे में बता रहे हैं अनूप पाण्डेय

सावन में गाए जाने वाले गीत लोक आत्मा का वह स्वर हैं जिसमें महिलाओं की पीड़ा, कुदरत का संगीत और समाज की परंपराएं एक साथ गूंजती हैं। जैसे ही आषाढ़ का अंतिम छोर आता है, धरती की प्यास बूंदों से मिलने को व्याकुल हो उठती है। कहीं दूर बिजली चमकती है, बारिश होती है और पीपल की डाल पर झूला पड़ जाता है। उसी झूले से उतरते हैं सावन के गीत। बेशक आज बारिश की खबरें हमारे जीवन में ब्रेकिंग न्यूज की तरह आती हैं और इसके खतरे को यलो व रेड अलर्ट में मापा जाने लगता है। लेकिन पहले ऐसा नहीं था। हमारे लोक जीवन में बारिश सदियों से महोत्सव की तरह शामिल रही है। इसी महोत्सव के गीत 'कजरी' हैं। कजरी संगीत की ऐसी अद्भुत विधा है जिसे सुनने और गाने वाला अपने आप को भीगता हुआ महसूस करता है। यह पूरब की मिट्टी के विरह की सामूहिक अभिव्यक्ति है। कल्पना करें कि सावन में आसमान में काले-काले मेघ घिरे हों, रिमझिम फुहारें तन-मन को भिगोने को आतुर हों और किसी नवविवाहिता का पति परदेस में हो और वह राह की ओर टकटकी लगाए प्रियतम की बाट जोह रही हो। ऐसे ही प्रवास की पीड़ा और विरह की संगीतमय अनुभूति कजरी में मिलती है। लोक गायक मन्नू यादव बताते हैं कि यूपी, बिहार और मध्य प्रदेश में जिसे कजरी कहते हैं, वही राजस्थान और हरियाणा में हाड़ोती है, वही ब्रज में मल्हार है। इसी को छत्तीसगढ़ में भुजली के नाम से जानते हैं और उत्तराखंड में झूला या हिंडोला कहा जाता है। सावन के गीत हमारी कृषि-जीवी संस्कृति की अमर गाथा हैं। ये गीत श्रम के गीत हैं। बारिश के मौसम में महिलाएं इसे धान रोपते हुए भी गाती हैं।

गीत बने विरह, प्रेम और आंदोलन की आवाज़

जानी-मानी लोकगायिका मालिनी अवस्थी बताती हैं कि लोकगीतों की जो भी विधाएं हैं, वे संवाद की विधाएं हैं। कजरी की लोकप्रियता चरम पर रही है क्योंकि इसकी रागात्मकता बिलकुल पानी के प्रवाह की तरह है। पहले होता यह था कि मॉनसून के समय चारों तरफ पानी भर जाता था, लोगों का आना-जाना बिलकुल बंद हो जाता था। ऐसे में कुछ पुरुष जो कमाने के लिए बाहर जाना चाहते थे वे नहीं जा सकते थे और जिनके पति परदेस में थे वे लौट भी नहीं सकते थे। इसलिए कजरी के गीतों में श्रृंगार का संयोग भी है और वियोग की कसक भी। एक ओर ये गीत मिलन की स्मृतियों से भरे होते हैं, वहीं दूसरी ओर उनमें प्रिय के वियोग की अनकही पीड़ा भी झलकती है।

संयोग का उदाहरण देखें- **'पिया मेंहदी लिया दS मोतीझील से, जाके साइकिल से ने ना।'** वहीं, **'रेलिया बैरन पिया को लिए जाए रे'** यह वियोग का कितना बड़ा उदाहरण है। मालिनी अवस्थी बताती हैं कि यह संवाद की परंपरा है तो इसमें प्रतिरोध न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। मिर्जापुर के रहने वाले ब्रदी सिंह पटेल ने सामाजिक आंदोलनों की कई कजरियां लिखीं। दहेज प्रथा के विरोध में एक बहुत मशहूर गीत है:

लड़की चाही पढ़ी-लिखी
चाहें लड़िका हो को मूढ़ गवांर
लेन-देन की बात चली तो
मालिक बनते साढ़ू-सार

यह गीत बताता है कि लड़का चाहे गवांर क्यों न हो, लड़की पढ़ी-लिखी चाहिए और जब दहेज की बात चलती है तो लड़के के मामा और मौसा मालिक बन जाते हैं।

देशभक्ति और आजादी को लेकर तो न जाने कितने गीत बने हैं जो लोग आज भी गाते हैं:

केतने वीर झूले
भारत में झुलनवा
झुलाए बेइमान झूलना...

एक तरफ सावन में झूला लगा होता है और वहीं दूसरी तरफ महिलाएं क्रांति गीत गा रही हैं कि जाने कितने वीर फांसी के झूले पर झूल गए।

भोजपुरी लोक संस्कृति के जानकार प्रफेसर राम नारायण तिवारी बताते हैं कि 1875 में बनारस के आसपास का इलका क्रांतिकारियों के गढ़ बन गया था। बताया जाता है कि उस दौरान बनारस के राजचेत सिंह जब अंग्रेजों से हार गए तो इस इलाके में अंग्रेजों बगावत का कमान क्रांतिकारी दाताराम नागर अपने हाथों में लिया। लेकिन कुछ दिनों में बाद अंग्रेजों ने उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया। यह खबर जब उनकी प्रेमिका और तवायफ सुंदर बाई को मिली तो उन्होंने जो कजरी रची वह अमर हो गई :

सबकर नइया जाले शहर हो बनासर रामा
अहे रामा नागर नइया जाले कालेपनिया ये हरी।

सुंदर बाई मिर्जापुर के घाट पर बैठकर रोते हुए गाती थीं कि गंगा में तो सबकी नाव शहर बनारस की ओर जा रही है लेकिन वह नाव जिसमें दाताराम नागर हैं वह कालापानी को जा रही है।

मन्नू यादव बताते हैं कि हमारे यहां एक गायक थे जो जेपी आंदोलन के दौरान कजरी गाते थे:

जेल में जनता जन्मी, जैसे कुंवर जैसे कुआर कन्हाई
सहनाई जयप्रकाश की बजी...

जलियांवाला बाग का बदला लेने के लिए जब वीर उधम सिंह ने लंदन जाकर जनरल डायर को गोली मार दी, इसका भी जिक्र कजरी में आता है:

लंदन में जाकर उधम सिंह ललकारा नाहर
भारत का राज दुलारा नाहर
डायर को जा मारा नाहर ना...

इन विषयों पर रची गई अनेक कजरियों में बलिदानियों की गाथा के साथ-साथ महात्मा गांधी के सिद्धांतों को भी रेखांकित किया गया। ऐसी ही एक कजरी में भाभी अपनी ननद से चरखा कातने को कहती है और कहती है कि इस चरखे से हमारी सारी परेशानियां दूर हो जाएंगी:

चरखा कातो, मानो गांधी जी की बतियां
विपतिया कटि जइहें ननदी...

“ सावन के लोकगीतों में सामाजिक आंदोलनों से लेकर आज़ादी के संघर्ष तक की गूंज मिलती है। आम धारणा है कि कजरी सिर्फ विरह की अभिव्यक्ति है लेकिन ऐसा नहीं है। इसमें संयोग पक्ष के भी बेहद सुंदर गीत मिलते हैं। जब प्रकृति अपने सुंदरतम रूप में होती है तो प्रेमी युगल चाहे दूर हो या पास, दोनों के मन में एक बेचैनी उतर आती है। यह धरती के श्रृंगार का भी गीत है।

-मालिनी अवस्थी, मशहूर लोक गायिका

“ सावन की कजरी उत्तर भारत की स्त्री चेतना की सबसे पुरानी और प्रखर आवाज है। कजरी किसी दरबारी संगीत से नहीं उपजी है, यह हमारे गीतों में कृषिजीवी संस्कृति की अमर गाथा है। इसकी लय जीवन की लय से बंधी है। बाद में जब बड़े-बड़े उस्तादों ने इसे अपने व्याकरण से संवारा तो इसे सेमी-क्लासिकल का दर्जा मिला।

-मन्नू यादव, बिरहा लोक गायक

“ कजरी जीवन की समग्रता की अभिव्यक्ति है। सावन के इन गीतों में छंदों का बंधन इतना सहज और ढीला होता है कि इसे कोई भी गा सकता है। हमारा देश कृषि प्रधान है, इसलिए कजरी भारतीयता की आत्मा की सच्ची अभिव्यक्ति बन जाती है। इसे संरक्षित करने की कोशिश होनी ही चाहिए।

-प्रो. राम नारायण तिवारी, भोजपुरी आलोचक

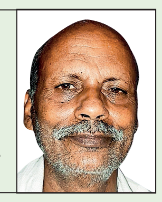

अम्मा मेरे बाबा को भेजो री...

स्त्री विमर्श के जितने भी पक्ष हो सकते हैं वे सब कजरी में उतर आए हैं। राम नारायण तिवारी बताते हैं कि एक मशहूर कजरी में महिलाएं भगवान कृष्ण से चुटकी लेते हुए कहती हैं:

कृष्ण तबे चली हमर इयारी
जब तुम बनब सुंदर नारी ना
कृष्ण बने मनिहारी, पहिन के सारी, ऐ हरी

महिलाएं कहती हैं- हमारी यारी तभी निभेगी जब तुम स्त्री का रूप धारण करोगे। फिर कृष्ण साड़ी पहन मनिहारी बन जाते हैं।

कजरी ने खेतों के मेढ़ से निकल कर सोमी क्लासिकल का दर्जा हासिल किया और कजरी से सुर बॉलिवुड में भी गुंजे। 1949 की फिल्म 'एक थी लड़की' का गीत 'घिर घिर के आई बदरिया' जो कजरी का शानदार उदाहरण है। वहीं फिल्म 'शतरंज के खिलाड़ी' (1977) में पंडित रविशंकर का संगीत एक पारंपरिक कजरी पर आधारित गीत **'झूला किन डारो रे अमरैयां...'** को उठाता है, जिसे क्लासिक और फिल्म संगीत के सेतु के रूप में देखा जा सकता है। इसके अलावा भारतेन्दु हरिश्चंद्र की लिखी कई कजरियों को मशहूर गायिका गिरिजा देवी ने गाया। भारतेन्दु ने ब्रज, भोजपुरी और यहां तक कि संस्कृत में भी कजरी रची है। कजरी का दायरा इसलिए भी बड़ा हुआ क्योंकि इसे कई बड़े साहित्यकारों और कलाकारों ने अपनाया। उस्ताद बिस्मिल्ला खां की शहनाई पर जब कजरी बजती थी तो उसकी मिठास और बढ़ जाती थी। राम नारायण तिवारी बताते हैं कि कजरी में सगुण भक्ति की भाव-भक्ति भी है और निर्गुण दर्शन की गहराई भी।

तोर देहिया इ माटी के मकान बा
काहे पर गुमान बा ना

(तुम्हारा शरीर तो माटी का मकान है फिर भी तुम्हें इस पर गुमान है क्यों है?)

गांव की गली-गली में झूले पड़ते हैं और बेटियों की वापसी का इंतजार होता है। लेकिन हर घर की खुशकिस्मती एक-सी नहीं होती। कुछ परिवारों की आर्थिक विवशताएं और सामाजिक संकोच बेटियों को ससुराल में ही रोके रहते हैं। इसी पीड़ा को अमीर खुसरो की अमर कजरी अभिव्यक्त करती है:

अम्मा मेरे बाबा को भेजो री- कि सावन आया
बेटी तेरा बाबा तो बूढ़ा री- कि सावन आया
अम्मा मेरे भाई को भेजो री- कि सावन आया
बेटी तेरा भाई तो बाला री- कि सावन आया

बेटी मां विनती करती है कि कोई तो उसे लेने आए- पिता, भाई, कोई भी। लेकिन मां कहती है कि मैं किसे भेजूं, पिता तुम्हारे बुजुर्ग हैं और भाई अभी बहुत छोटा है। एक ओर जहां बेटियां मायके लौटने को आतुर हैं तो वहीं एक गीत ऐसा भी है जिसमें नवविवाहिता मायके के बुलावे को ठुकरा देती है:

भइया मोरे अइले अलवइया हो
सावनवा में ना जइबे ननदी
सोने की थारी में जेवना परोसो
चाहे भइया खाएं चाहें जाएं रे
सावनवा में ना जइबे ननदी

वह कहती है कि भइया आए हैं बुलावा लेकर पर मैं इस सावन में नहीं जाउंगी। भइया को सोने की थाली में भोजन परोसा है, चाहे खाएं या बगैर खाएं चले जाएं लेकिन मैं नहीं जाउंगी।

कुदरत के आभार का गीत

'भोजली' गीतों की परंपरा छत्तीसगढ़ और पूर्वी मध्य भारत के ग्रामीण अंचलों से जुड़ी है जो सावन-भादो की हरियाली में महिलाओं की सामूहिक आस्था और प्रकृति-प्रेम का साक्ष्य हैं। भोजली एक अनुष्ठान है जिसमें महिलाएं छोटे मिट्टी के बर्तनों में जौ, गेहूं या धान बोती हैं और उन्हें पुत्रवत स्नेह देकर गीतों में अपनी पीड़ा, प्रार्थना और प्रीति पिरोती हैं। इन गीतों में बारिश, धरती, नारी मन और लोक परंपराओं का सुंदर संगम होता है। भोजली विसर्जन के साथ ही एक और ऋतुचक्र की कथा दर्ज हो जाती है।

मरुभूमि में बारिश के सुर

राजस्थानी लोक संस्कृति की जानकार आशा शर्मा बताती हैं कि राजस्थान तो मरुभूमि है, ऐसे में यहां एक पानी की बूंद भी बहुत महत्व रखती है। बारिश का मौसम राजस्थान के लिए महोत्सव है। राजस्थान में बारिश के लोक गीतों में लहरिया साड़ी की डिमांड खूब देखने को मिलती है। इन गीतों में सास, ननद और जेठानी के बीच की ठिठोली का भी जिक्र मिलता है। लोक गायक मन्नू यादव बताते हैं कि हरियाणा और राजस्थान का जो अहिरवाल क्षेत्र है वहां सावन के हाड़ोती लोक गीतों की परंपरा है।

विचार विंडो

वायरस पर चलाए जा रहे 'ऐंटि-बायोटिकास्त्र'!

प्रवीण कुमार झा

नॉर्वे (या किसी विकसित देश) में अगर आपको खांसी-जुकाम है तो आप अपने फैमिली डॉक्टर को फोन करेंगे। वह आपको कोई दवा नहीं बताएंगे। आपसे दो हफ्ते बाद मिलने की तारीख देंगे। आप खीजकर रह जाएंगे। दो हफ्ते बाद आप ठीक हो चुके होंगे और खुद ही अपॉइंटमेंट कैंसल कर देंगे। वायरल बीमारियां अपने-आप ठीक हो जाती हैं -घरेलू इलाज से, ठंड में कपड़े पहनने से, गर्म पानी पीने से। यह तो हम सब जानते हैं लेकिन हमें ऐंटिबायोटिक फांकने की तलब हो गई है। 'टैक्सिम-सिप्लॉक्स' के पत्ते और डोज ऐसे बनवाते हैं, जैसे पान में कत्था लगवा रहे हों। फलां ऐंटिबायोटिक मुझे एक दिन में फिट कर देगी। साथ में गुटखे के पाउच की तरह विटामिन फांक लूंगा तो कमजोरी भी न होगी। वॉट्सऐप पर अपने डॉक्टर दोस्त से ऐंटिबायोटिक लिखवाना, इंटरनेट पर इलाज ढूंढना- हर तीसरा शख्स बीमारी का एक्सपर्ट बनकर घूम रहा है।

लेकिन ताज्जुब की बात है, नॉर्वे जहां तापमान -25 डिग्री तक जाता है, वहां सर्दी-जुकाम न के बराबर होते हैं। आपका बदन कुल्फी बन जाएगा, पर आप खांसेंगे नहीं। मुझे तो हल्की-सी ठंडी हवा बहने से जुकाम होता था। यहां क्यों नहीं होता? इसकी एक वजह हो सकती है कि यहां वायरस ही नहीं होते। लेकिन तलाश की तो इसकी पुख्ता वजह मिली। यहां चाहे बर्फ गिर रही हो या बरसात, बच्चों को स्कूल वाले बाहर खेलने के लिए ले ही जाते हैं। उन्हें जितना भी सर्दी-जुकाम होना है, जीवन की शुरुआत में खूब होता है। बीमार पड़ने पर 3 दिन किंडरगार्टन नहीं आने देते। चौथे दिन से फिर वही प्रक्रिया शुरू। एक साल तक बिना ऐंटिबायोटिक खाए बीमार होकर ठीक होने के बाद बच्चा अजीब अक्खड़ बन जाता है। सर्दी-जुकाम हमेशा के लिये छू-मंतर हो जाता है। जब बच्चों को नहीं होता तो बड़ों को भी नहीं होता। वायरस होते तो हैं पर शरीर के तोरण-द्वार को भेद नहीं पाते। धीरे-धीरे वायरस भी हिम्मत हार जाते हैं। कभी-कभी लगता है, यह दवा-विहीन जीवन हमें पिछली सदी में धकेल रहा है। पर क्या बुरा है?

बिना ऐंटिबायोटिक का इस्तेमाल किए इस देश (या दूसरे कई देश जैसे ऑस्ट्रेलिया) की औसत आयु 80 साल से ऊपर है। हम ऐंटिबायोटिक खा-खाकर 60-65 साल पर अटके हैं। भारत में कई युवा अस्पताल में मरते हैं, यहां क्यों नहीं मरते? कहीं हमारी इम्यूनिटी ऐंटिबायोटिक खाकर खत्म तो नहीं हो रही? भारत में 'सुपर-बग' यानी महान कीड़े पाए जाते हैं जिनके सामने सारे ऐंटिबायोटिक बेकार है। हमने अपने सारे ऐंटिबायोटिकास्त्र यों ही वायरसों पर बरबाद कर दिए। जब असल बैक्टीरिया आए तो तरकश खाली।

“ बिना ऐंटिबायोटिक का इस्तेमाल किए नॉर्वे (या दूसरे कई देश जैसे ऑस्ट्रेलिया) की औसत आयु 80 साल से ऊपर है। हम ऐंटिबायोटिक खा-खाकर 60-65 साल पर अटके हैं।'

वैसे मेरा तर्क बेकार है कि ऐंटिबायोटिक खाने से उम्र घटती है। ग्रीस दुनिया के सबसे ज्यादा ऐंटिबायोटिक खाने वाले देशों में है, फ्रांस भी। लेकिन इन देशों में भी औसतन लोग 80 साल से ऊपर जीते हैं। बस यहां अपनी मर्जी से ऐंटिबायोटिक नहीं खा सकते। 'ओवर द काउंटर' यानी सीधे दुकान से नहीं खरीद सकते। डॉक्टर लिखेंगे तो खा सकते हैं।

ग्रीस की बात आई तो वहां के इकारा द्वीप में 100 साल जीने वाले कई लोग हैं। ऐसा ही कुछ लोग पाकिस्तान की हुंजा घाटी या जापान के ओकिनावा द्वीप के बारे में भी कहते हैं। इकारा में लोग खूब सिगरेट पीते हैं, शराब भी। फिर भी 100 साल कैसे जीते हैं? वहां सभी लगभग शाकाहारी हैं और खुद ही फसल उगाते हैं, खुद ही खाते हैं। ऐसे भोजन को 'ऑर्गैनिक फूड' भी कहा जाता है। इसमें कई ऐंटिऑक्सिडेंट होते हैं, जो मरने नहीं देते। बाकी वहां बैल-वैल शायद नहीं है। सब खेत खुद ही खोद डालते हैं, यही उनका व्यायाम है। ऐसा ही कुछ अमेरिका के अमिश प्रजातियों में भी देखा जाता है। ऐंटिबायोटिक या दवाओं की बड़ी कंपनियां भी इन विकसित देशों में ही हैं। अगर हम बीमार न हों, उन दवाओं का इस्तेमाल न करें तो सारी कंपनियां डूब जाएं। भारत के लिए पेनिसिलिन एक इतिहास है। एम्पिसिलिन और एमॉक्सिसिलिन भी आधे लोगों पर बेअसर है। नॉर्वे अब तक इन्हीं घिसी-पिटी दवाओं से चल रहा है। मैं जब भारतीय अस्पताल में था तो एक 30 साल की संभ्रांत महिला पिछले 15 बरसों से यूरिन में जलन के लिये बदल-बदल कर ऐंटिबायोटिक खा रही थी। जब उनकी यह जांच की गई कि इन पर कौन-सी ऐंटिबायोटिक असर करेगी तो पता लगा बस एक! उस दवा की एक डोज की कीमत 1200 रुपये। यह ब्रह्मास्त्र है। दवा न दो तो हल नहीं। दवा दो तो अब आगे कुछ बरसों बाद वह भी बेअसर हो जाएगी। आप सोचिए कि क्या फैसला लिया गया होगा? ब्रह्मास्त्र सिर्फ यूरिन के इंफेक्शन में छोड़ दिया गया, वह भी 30 साल की उम्र में। नॉर्वे या यूरोप में ऐसा फैसला लेने पर कमिटी बैठ जाती। भारत में यह सुबह के 5 मिनट के राउंड में तय हो गया। कोई बात-विचार नहीं। हम यों ही दुनिया के सबसे बड़े दवा-मार्केट में एक नहीं हैं। यहां दवा चना-जोर-गरम की तरह घूमते-फिरते बांट दी जाती है।

लोग कहते हैं कि गंगा में डुबकी लगाने से सारी बीमारियां मिट जाती हैं। मुझे वैज्ञानिक रूप से आंध्र के पटानचेरू में ऐसी नदी मिल गई है और वह भी अपनी पढ़ाई के सिलसिले में नॉर्वे की एक डॉक्यूमेंट्री देखते हुए। मैं 'सुपर-बग' से जुड़ा एक लेख लिख रहा था तो यह डॉक्यूमेंट्री मिली। नॉर्वे ही नहीं, लगभग पूरी दुनिया की ऐंटिबायोटिक दवाओं का बड़ा हिस्सा भारत से आता है। हैदराबाद से कुछ दूर मेडक और पटानचेरु का इलाका है, जहां दुनियाभर की ऐंटिबायोटिक दवा फैक्ट्रियां है। कंपनियां अपना कचरा यहां नाले में डाल देती हैं जो नदी में चला जाता है। हर दिन इतनी ऐंटिबायोटिक दवा बहती है जिससे 90 हजार लोगों का इलाज हो सकता है। यहां का पानी पी लें तो किसी दवा की जरूरत नहीं, पर अमृत नहीं जनाब! अमृत क्या, जहर है जहर! यहां के आसपास खेत बंजर हो गए। नदी का पानी पीला पड़ गया है। यहां के बच्चे इतना ऐंटिबायोटिक पी चुके हैं कि उन पर कोई दवाई असर नहीं करती। उनके अंदर 'सुपर-बग' आ गया है जिसे हम 'ऐंटिबायोटिक रेजिस्टेंस' कहते हैं। बच्चे ही नहीं, बड़े भी। पहले मनमोहन सिंह सरकार के सामने बात उठाई गई, पर बड़ी-बड़ी दवा कंपनियों के सामने घुटने टेक दिए। इन कंपनियों से तेलंगाना का 30% GDP आता है। मैं कंपनियों के नाम नहीं लूंगा, इनकी दवाइयों से अमेरिका और यूरोप के लोगों की जान बचती है। अब इस ऐंटिबायोटिक-नदी से कुछ बच्चों की जान पर खतरा भी है। जब यह डॉक्यूमेंट्री यहां बैठे देख रहा था तो अजीब-सी बेचैनी हो गई। जैसे ये हमारी गरीबी और बेबसी का चित्रण कर घड़ियाली आंसू बहा रहे हों और इनके साथ मैं भी। नॉर्वे सरकार ने फैसला लिया कि जब तक ये दवा कंपनियां अपने कचरे के निकास का रास्ता बेहतर नहीं बनाती, वहां से दवा लेना बंद कर देगी।

(फेसबुक पेज से साभार)

पुस्तक अंश

स्पीकर सर, विधायिका को जनता ने चुन लिया है

NBT के पाठकों का फ़ैसला आ चुका है, विधायक का सही स्त्रीलिंग विधायिका! अब दिल्ली विधानसभा स्पीकर से है अगला क़दम उठाने की उम्मीद

■ नमिता जोशी

दिल्ली विधानसभा स्पीकर विजेंद्र गुप्ता ने जब हमसे कहा था कि 'आप लोग विधायक शब्द का एक अच्छा स्त्रीलिंग विकल्प ढूंढ दो, मैं उसे कमिटी के सामने पेश कर दूंगा', तब हमें भी पहली बार लगा कि भाषा को लेकर हमारी उलझन सिर्फ हमारी नहीं है। विजेंद्र ने न सिर्फ बराबरी की भाषा मुहिम को सराहा, बल्कि माना कि विधायक शब्द का कोई स्पष्ट स्त्रीलिंग न होना खुद उनके लिए भी एक असहज अनुभव है। उन्होंने बताया था कि महिला विधायकों के लिए जब संबोधन देना होता है तो अक्सर रुककर सोचना पड़ता है। शब्द नहीं मिलने पर कई बार आपको खुद बुरा लगता है और यही असहजता उन्होंने सार्वजनिक रूप से स्वीकार की थी - यह हमारे लिए बहुत बड़ी बात थी।

तो विजेंद्र जी, अब हम आपके सामने वह जवाब लेकर आए हैं जिसे हमने पाठकों के भरोसे ढूंढा है। विधायक का स्त्रीलिंग क्या हो? इस सवाल पर हमने दो बार मतदान कराया। पहले चरण में हमने पाठकों को तीन विकल्प दिए थे: विधायिनी, विधायिकी और कुछ और। सबसे ज्यादा वोट 'कुछ और' वाले विकल्प को मिले और दूसरे नंबर पर रहा विधायिकी। लेकिन एक हैरान करने वाली बात सामने आई - बहुत सारे पाठकों ने कुछ और वाले विकल्प में अपने-अपने सुझाव में बार-बार एक ही शब्द लिखा : विधायिका।

अब तक विधायिका शब्द विधानमंडल यानी 'legislature' के लिए इस्तेमाल होता रहा है, इसलिए हमने शुरुआत में इसे विकल्प में नहीं रखा था। लेकिन पाठकों की ज़िद के आगे हमें झुकना पड़ा। दूसरे चरण की वोटिंग में हमने विधायिका को भी एक विकल्प बनाया। और नतीजा बिल्कुल साफ आया - लगभग 83 प्रतिशत पाठकों ने विधायिका को ही चुना।

विधायक के स्त्रीलिंग पर 83% पाठकों ने चुना 'विधायिका'

गुप्ता जी, हमारी यह अपील अब आपके पास है - पाठकों ने जिस शब्द को सबसे उपयुक्त माना है, अब आप उसे विधानसभा की कमिटी के सामने रखें। एनबीटी की यह मुहिम सिर्फ भाषिक बदलाव की नहीं है, यह पहचान और सम्मान की मांग है। जब महिलाएं विधायक बन रही हैं, तो उन्हें एक स्पष्ट और बराबरी वाला संबोधन मिलना ही चाहिए।

विधायिका शब्द अब सिर्फ एक पाठकीय पसंद नहीं है, यह लोकतांत्रिक सहमति से निकला सुझाव है। और जैसे आपने खुद कहा था – 'आप ढूंढ दो, मैं विचार करूंगा' - तो लीजिए, हमने ढूंढ लिया है।

प्रबंधक का स्त्रीलिंग क्यों जरूरी है?

जब महिला नेतृत्व दिखता है, तो भाषा क्यों पीछे रह जाए?

■ नमिता जोशी

'बराबरी की भाषा' मुहिम में अब बारी है 'प्रबंधक' शब्द की। यानी वह व्यक्ति जो किसी संगठन, दुकान, रेस्तरां या दफ्तर को चलाता है – decision लेता है, टीम को संभालता है और कामकाज का दायरा तय करता है। मगर ज़रा सोचिए, जब ये भूमिका एक महिला निभा रही हो, तो क्या हम उसे आज भी 'प्रबंधक' ही कहें? क्या भाषा में उसका लिंग (gender) ग़ायब ही रहेगा?

आज भी आम बोलचाल में हम 'महिला प्रबंधक' या 'लेडी मैनेजर' कहकर काम चला लेते हैं। लेकिन भाषा में बराबरी का मतलब सिर्फ़ 'महिला' जोड़ देना नहीं होता, बल्कि एक ऐसा शब्द खोजना होता है जो महिला की पहचान को उसी गरिमा, स्पष्टता और सहजता से दर्शाए जैसे पुल्लिंग शब्द करता है।

अगर हम 'अध्यक्ष-अध्यक्षा', 'शिक्षक-शिक्षिका', 'लेखक-लेखिका' जैसे जोड़े बना सकते हैं, तो 'प्रबंधक' का स्त्रीलिंग क्यों नहीं हो सकता? जब एक महिला टीम की बॉस हो तो वह 'प्रबंधिका', 'प्रबंधिनी' या कोई और अनुकूल शब्द भी हो सकता है - लेकिन होना चाहिए।

क्योंकि जब भाषा किसी महिला के नेतृत्व को साफ़-साफ़ पहचान ही नहीं देती, तो वह नेतृत्व भी ग़ायब हो जाता है। और हम जानते हैं - जो ग़ायब होता है, वह अक्सर महत्वहीन समझा जाता है। इसलिए अब वक्त है कि प्रबंधन की दुनिया में भी भाषा बराबरी करे और एक ऐसा शब्द सामने लाएं, जो महिला प्रबंधक को उसका पूरा भाषाई सम्मान दे सके। हमने हिंदी व्याकरण के जानकारों से विमर्श करके प्रबंधक के तीन विकल्प आपके सामने पेश किए हैं।

इस हफ़्ते का शब्द

एनबीटी के इस मंच पर आप बताइए, क्या हो प्रबंधक का स्त्रीलिंग?

- **A** प्रबंधिका
- **B** प्रबंधिनी
- **C** प्रबंधकारिणी
- **D** या कुछ और?

आइए, सोचिए, सुझाव दीजिए या वोट दीजिए, प्रबंधक का स्त्रीलिंग क्या हो सकता है?

आप सुझाव दें कि इस शब्द का स्त्रीलिंग क्या होना चाहिए। हमें ई-मेल करें **nbtreader@timesofindia.com** पर **शनिवार शाम 5 बजे** तक। सब्जेक्ट में लिखें Barabarikibhasha

इस QR कोड को स्कैन करके लेख के अंत में वोट डालें।

आर.एन.आई. नं. DELHIN/2004/13707© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद तथा प्लॉट नंबर 407। फोन : 43505400-04, फैक्सः 43505363, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु.प्रति कापी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु.; रविवार : नेपाली 6 रु.
स्थानीय सम्पादक* (दिल्ली) : राजेश मित्तल (*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 13-07-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH13 User: cci Time: 07-12-2025 23:04 Color:

फटाफट खबरें

अवैध धर्मांतरण बर्दाश्त नहीं: योगी

योगी यात्रा में शामिल हुए।

■ भाषा, लखनऊ: उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि प्रदेश सरकार अवैध धर्मांतरण के खिलाफ पूरी सख्ती से कार्रवाई कर रही है और ऐसी गतिविधियों को किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने यहां अपने आवास पर श्री गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी वर्ष पर समर्पित श्री तेग बहादुर संदेश यात्रा के दौरान कहा कि कुछ ताकतें योजनाबद्ध तरीके से देश के स्वरूप को बदलने की कोशिश कर रही हैं।

मोदी ने कहा, हर भारतीय गदगद है

■ भाषा, नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मराठा मिलिट्री लैंडस्केप्स' को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किए जाने की शनिवार को सराहना की और कहा कि इससे हर भारतीय प्रसन्न है। मराठा शासकों की किलेबंदी प्रणाली का प्रतिनिधित्व करने वाले 'मराठा मिलिट्री लैंडस्केप्स' को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शुक्रवार को शामिल किया गया।

राहुल पर विवादित पोस्ट, गिरफ्तार

■ भाषा, सोनभद्र: कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के बारे में आपत्तिजनक पोस्ट करने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को बताया कि जिले के अनपरा बाजार में रहने वाले आरोपी अजय कुमार चौरसिया (27) को शुक्रवार शाम गिरफ्तार किया गया। आरोपी ने अपने वट्सऐप स्टेटस पर अभद्र टिप्पणी के साथ राहुल गांधी की आपत्तिजनक तस्वीर पोस्ट की थी।

चीफ जस्टिस गवई ने मुकदमों में देरी पर ध्यान दिलाया

न्याय प्रणाली को तत्काल सुधार की ज़रूरत: CJI

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

भारत के चीफ जस्टिस बी.आर. गवई ने शनिवार को कहा कि भारतीय न्याय प्रणाली अद्वितीय चुनौतियों का सामना कर रही है और मुकदमों में देरी कभी-कभी दशकों तक खिंच जाती है। हैदराबाद के पास स्थित नालसार लॉ विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी न्याय प्राणाली को तत्काल सुधार की जरूरत है।

चीफ जस्टिस ने कहा, हमने ऐसे मामले देखे हैं जहां कोई व्यक्ति वर्षों तक विचाराधीन कैदी के रूप में जेल में रहा और बाद में निर्दोष पाया गया। हमारे सबसे अच्छे प्रतिभाशाली युवा इन समस्याओं को सुलझाने में मदद कर सकते हैं। गवई ने अमेरिका के वरिष्ठ जिला जज जेड एस. रैकॉफ की किताब

File

भारत के चीफ जस्टिस बी.आर. गवई

से एक टिप्पणी का हवाला देते हुए कहा कि हालांकि मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि हमारी न्याय प्रणाली को तत्काल सुधार की आवश्यकता है, फिर भी मुझे यह सावधानीपूर्वक आशा है कि मेरे नागरिक साथी इस चुनौती का सामना करेंगे।

विदेश में मास्टर डिग्री हासिल करने के दबाव पर सीजेआई ने कहा, सिर्फ एक विदेशी डिग्री आपकी योग्यता पर मुहर नहीं है। यह फैसला बिना सोचे-समझे या अपने साथियों के दबाव में न लें। इसके बाद क्या होगा? वर्षों का कर्ज, चिंता, आर्थिक बोझ तले करियर के फैसले। चीफ जस्टिस ने ग्रैजुशन के छात्रों को सलाह दी कि वे अपने जीवन में ऐसे मार्गदर्शकों की तलाश करें जो ईमानदारी और नैतिकता सिखाएं, न कि केवल प्रभावशाली पदों की शक्ति से आकर्षित हों। समारोह में तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस पी.एस. नरसिम्हा और तेलंगाना हाईकोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सुजॉय पॉल भी उपस्थित थे।

पूर्व CJI चंद्रचूड़ और खेहर ने की 'एक साथ चुनाव' की वकालत, मगर आयोग की

Rajesh.Choudhary
@timesofindia.com

■ नई दिल्ली: 'वन नेशन, वन इलेक्शन' यानी एक साथ चुनाव की योजना पर विचार कर रही संसदीय समिति के समक्ष सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़ और जे.एस. खेहर ने सुझाव और आपत्तियां रखीं। दोनों ने प्रस्तावित संविधान (129वां संशोधन) विधेयक 2024 को मूल संविधान संरचना के खिलाफ न मानते हुए इसकी वैधता को स्वीकार किया, लेकिन कुछ प्रावधानों को लेकर गंभीर संवैधानिक चिंताएं भी जताईं।

उन्होंने निर्वाचन आयोग को दी जा रही असाधारण शक्तियों की समीक्षा करने और आपातकाल या असमय विघटन जैसी स्थितियों को स्पष्ट रूप से विधेयक में समाहित करने की सिफारिश की। पूर्व चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ ने समिति के सामने कहा कि एक साथ चुनाव संविधान के मूल ढांचे का उल्लंघन नहीं करता। उन्होंने 1950 और 60 के दशक का हवाला देते हुए कहा कि तब संसद और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जाते थे। उन्होंने स्पष्ट किया

File

पूर्व CJI डी.वाई. चंद्रचूड़

ये हैं मूल बातें

- समानांतर चुनावों का विचार संविधान की मूल संरचना का उल्लंघन नहीं करता।
- निर्वाचन आयोग को दी गई शक्तियों की समीक्षा और सीमा तय होनी चाहिए।

कि लोकतंत्र और संघीय ढांचा भले ही संविधान की मूल विशेषताएं हों, लेकिन इससे यह बाध्यता नहीं बनती कि चुनाव अलग-अलग समय पर ही कराए जाएं। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि जिन विधानसभाओं का कार्यकाल लोकसभा से पहले शुरू होगा, वे अपनी पूर्ण अवधि पूरी करेंगी, जबकि बाकी को समायोजित किया जा सकता है ताकि आगे चलकर लोकसभा और विधानसभा के कार्यकाल एक साथ चल सकें।

'आयोग को ज्यादा अधिकार देना खतरनाक'

चंद्रचूड़ ने चुनाव आयोग को दिए जाने वाले अधिकारों पर गंभीर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग को संविधान के भाग XV में संशोधन की अनुमति देना और उसे चुनाव स्थगित करने का अधिकार देना खतरनाक मिसाल बन सकता है। आयोग को इस प्रकार की शक्ति देना कि वह किसी भी विधानसभा का चुनाव स्थगित कर सके या राष्ट्रपति को रिपोर्ट भेजकर किसी कार्यकाल को घटा सके, संविधान की भावना के खिलाफ है। चंद्रचूड़ ने चेताया कि यह प्रस्ताव यदि बिना पर्याप्त सुरक्षा उपायों के पारित हुआ तो यह निर्वाचन आयोग को असीमित और जवाबदेही से परे शक्ति सौंप देगा। इसके समाधान के रूप में उन्होंने तीन स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था का सुझाव भी दिया है।

खेहर बोले, मतदाताओं को बताया जाए कि...

File

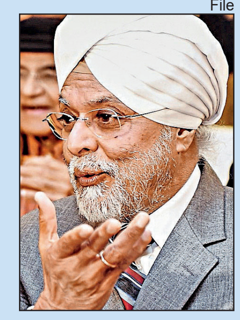

पूर्व चीफ जस्टिस **जेएस खेहर** ने भी विधेयक की वैधता को स्वीकार करते हुए कहा कि प्रस्तावित अनुच्छेद 82A केवल एक 'निर्धारित तिथि' तय करता है, जो कि नई लोकसभा की पहली बैठक होगी। यह किसी संवैधानिक उल्लंघन का कारण नहीं बनता। हालांकि उन्होंने यह भी जोड़ा कि जब किसी विधानसभा का कार्यकाल छोटा किया जाए, तो मतदाताओं को यह स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए कि वे कम अवधि के लिए प्रतिनिधि चुन रहे हैं।

थरूर ने कांग्रेस छोड़ी तो क्या होगा असर?

Hemwati.Rajaura
@timesofindia.com

n नई दिल्ली: 2026 में प्रस्तावित केरल विधानसभा चुनाव की तैयारी अभी से जोर पकड़ रही है। सत्तारूढ़ लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (LDF) और विपक्षी यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (UDF) आमने-सामने हैं, जबकि BJP का बढ़ता वोट शेयर इस बार कितना असरदार होगा, यह देखना है। ऐसे में शशि थरूर का रुख कांग्रेस के लिए चिंता का कारण बनता जा रहा है। अगर थरूर कांग्रेस छोड़ते हैं, तो इसका असर कितना होगा, यह देखने की बात है।

'थरूर के पार्टी छोड़ने का सीमित असर': केरल के त्रिवेंद्रम से वरिष्ठ पत्रकार टीजे श्रीलाल के मुताबिक, चार बार के सांसद, लोकप्रिय बुद्धिजीवी और वैश्विक छवि के नेता डॉ. शशि थरूर लंबे समय से कांग्रेस के भीतर 'दूसरी लाइन' के नेतृत्व में माने जाते रहे हैं। थरूर बड़े नेता हैं, लेकिन विधानसभा चुनावों में केरल में उनका असर सीमित ही है।

उन्होंने कहा कि हाल के नीलांबुर उपचुनाव में थरूर के कैंपेन न करने के बावजूद कांग्रेस ने लेफ्ट के उम्मीदवार

File

तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर

को हरा दिया। उन्होंने कहा कि केरल कांग्रेस के नेता शशि थरूर पर खुलकर अटैक नहीं कर रहे हैं क्योंकि वे उन्हें लोगों की सिम्पैथी नहीं मिलने देना चाहते। वे ऐसा दिखाना चाहते हैं कि थरूर खुद बीजेपी की तरफ जा रहे हैं, न कि पार्टी उन्हें नजरंदाज कर रही है।

थरूर लोकसभा चुनाव में 16 हजार वोटों के मार्जिन से ही जीते हैं। बीजेपी यहां दूसरे और लेफ्ट तीसरे स्थान पर रही लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि त्रिवेंद्रम की सात विधानसभा सीटों में छह पर लेफ्ट और एक पर कांग्रेस का कब्जा है।

बीजेपी का बढ़ रहा वोट शेयर: CPM के महासचिव एम.ए. बेबी ने कुछ दिनों पहले कहा था कि केरल में BJP का विस्तार केवल कांग्रेस की कीमत पर ही नहीं हो रहा है, बल्कि वह CPM के प्रभाव वाले इलाकों में भी अपनी पकड़ मजबूत कर रही है। भले ही अभी केरल की 140 सदस्यों की विधानसभा में BJP का कोई विधायक न हो, लेकिन वोट शेयर बढ़ रहा है। 2019 से 2024 के लोकसभा चुनावों के बीच BJP का वोट शेयर केरल में 13% से बढ़कर 16.68% हो गया और पार्टी ने त्रिशूर सीट पर ऐतिहासिक जीत दर्ज की। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी 140 विधानसभा क्षेत्रों में से केवल एक में ही पहले स्थान पर रही थी, लेकिन 2024 में वह 11 विधानसभा क्षेत्रों में सबसे आगे रही। 2019 में बीजेपी का वोट शेयर छह लोकसभा सीटों पर 10% से भी कम था, जैसे कि कन्नूर (6.5%), वडकारा (7.5%), वायनाड (7.21%), मल्लपुरम (7.96%), अलाथूर (8.81%) और इडुक्की (8.55%)। इससे पहले साल 2014 स्थिति और खराब थी, जब 11 सीटों पर 10% से कम वोट मिले थे।

LDF Vs UDF कौन कहां खड़ा है?

LDF की अगुआई में मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने अब तक के कार्यकाल में विकास और स्थिरता का नैरेटिव बनाए रखा है। हालांकि, महंगाई, बेरोज़गारी और महिला सुरक्षा जैसे मुद्दे विपक्ष को हथियार दे रहे हैं। यूडीएफ, खासकर कांग्रेस, फिलहाल अंदरूनी खींचतान और नेतृत्व संकट से जूझ रही है। शशि थरूर जैसे नेता की नाराजगी कार्यकर्ताओं में भी असमंजस पैदा करती है। इस बार सीपीएम एझावा समुदाय को भी लुभाने की कोशिश कर रही है। इस समुदाय का कुछ हिस्सा बीजेपी की तरफ शिफ्ट होता दिखा। एझावा केरल में सबसे बड़ा हिंदू समुदाय है और राज्य की लगभग 23% आबादी है। 2021 विधानसभा में LDF 91 सीट (45.43%), UDF 44 सीट (39.47%), एनडीए 0 सीट (12.41 %) हासिल कर पाई।

'विकसित केरलम' अब BJP का मूल मकसद होगा: शाह

■ भाषा, तिरुवनंतपुरम

PTI

केरल में शाह ने पार्टी के प्रदेश कार्यालय का उद्घाटन किया।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि बीजेपी के लिए केरल में मुख्यमंत्री होने से ज्यादा जरूरी यह सुनिश्चित करना है कि राज्य में पार्टी कार्यालय 'विकसित केरलम' का केंद्र बने। शाह ने बीजेपी के नए प्रदेश कमेटी कार्यालय का उद्घाटन करने के बाद पुथरीकंदम मैदान में वार्ड स्तरीय नेतृत्व बैठक में पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों की विशाल सभा को संबोधित करते हुए यह बात कही।

शाह ने पार्टी के 'विकसित केरलम' मिशन का 'लोगो' और 'मोटो' भी जारी किया। उन्होंने कहा कि 'विकसित भारत' का मार्ग 'विकसित केरलम' से होकर ही जाता है। इसलिए, अब से बीजेपी का मूल उद्देश्य 'विकसित केरलम' होगा।

शाह ने इस साल होने वाले स्थानीय निकाय चुनावों और अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी के अभियान की शुरुआत करने से पहले यहां बीजेपी की प्रदेश कमिटी के नए कार्यालय 'मरारजी भवन' का उद्घाटन किया। शाह ने बीजेपी की प्रदेश इकाई के पूर्व अध्यक्ष दिवंगत केजी मरार की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। केजी मरार की प्रतिमा को नए भवन के केंद्रीय कक्ष में स्थापित किया गया है। इस दौरान शाह के साथ बीजेपी के प्रदेश इकाई के अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर और केरल इकाई के अन्य वरिष्ठ नेता भी मौजूद थे।

'LDF और UDF की सरकारों ने तुष्टीकरण की राजनीति की': शाह ने शनिवार को सत्तारूढ़ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी नीत वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (LDF) और विपक्षी कांग्रेस नीत संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (UDF) दोनों पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि दोनों मोर्चे की सरकारों ने केवल भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया, तुष्टीकरण की राजनीति की और केरल को PFI के लिए पनाहगाह बना दिया।

I.N.D.I.A. गठबंधन की 6 घंटे बैठक, सीट बंटवारे पर चर्चा

■ पीटीआई, पटना

बिहार में I.N.D.I.A. गठबंधन के घटक दलों ने शनिवार को यहां एक लंबी बैठक की। इसमें अन्य मुद्दों के अलावा इस वर्ष के अंत में होने वाले राज्य विधानसभा चुनाव के लिए सीट बंटवारे पर चर्चा हुई। राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव के आवास पर यह बैठक करीब छह घंटे तक चली। पूर्व उपमुख्यमंत्री ने कहा, 'हां, सीट बंटवारे पर बातचीत शुरू हो गई है। लेकिन मैं अभी और विवरण नहीं दे सकता। विचार-विमर्श एक आंतरिक मामला है और जब चीजें अंतिम रूप ले लेंगी, तो हम इसे सार्वजनिक कर देंगे।'

तेजस्वी के I.N.D.I.A. गठबंधन के मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार होने की संभावना है। आरजेडी नेता ने यह भी आरोप लगाया कि जेडीयू अध्यक्ष नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) सरकार 'नकलची' है जो युवा आयोग

तेजस्वी के आवास पर गठबंधन के नेताओं की बैठक हुई।

के गठन और वृद्धावस्था पेंशन बढ़ाने जैसे उनके विचारों को चुरा रही है। तेजस्वी ने कहा, 'मुझे यकीन है कि 'माई बहिन सम्मान योजना' भी जल्द ही उनके द्वारा नकल कर ली जाएगी।' उन्होंने वादा किया है कि उनकी पार्टी के सत्ता में आने पर वह राज्य की महिलाओं को 2,500 रुपये मासिक भत्ता देंगे।

बैठक के बाद सहनी ने पत्रकारों से बातचीत की और कहा, 'हां, सीट बंटवारे पर बातचीत शुरू हो गई है। हम अभी इस बारे में विस्तृत जानकारी साझा नहीं कर सकते। लेकिन यह कहना चाहूंगा कि अन्य मुद्दे भी थे, जैसे समन्वय समिति का गठन करना और यह सुनिश्चित करने की रणनीति कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान कोई गड़बड़ी न हो। सहनी ने कहा, 'हम एसआईआर के बिल्कुल खिलाफ हैं। लेकिन जब तक उच्चतम न्यायालय अंतिम फैसला नहीं सुना देता, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि इस कवायद के दौरान सभी निर्देशों का पालन किया जाए।'

चिराग को जान से मारने की धमकी, FIR दर्ज

■ भाषा, पटना: केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान को एक इंस्टाग्राम यूजर से जान से मारने की धमकी मिली है। यह जानकारी उनकी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने शनिवार को दी।

चिराग पासवान

पार्टी ने अपने 'एक्स' हैंडल पर बताया कि इस बारे में मुख्य प्रवक्ता राजेश भट्ट ने पटना के साइबर पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई है। भट्ट ने अपनी शिकायत में 'टाइगर मेराज इदरीसी' नामक एक व्यक्ति की पोस्ट का हवाला दिया, जिसने हाजीपुर के सांसद चिराग को बम से उड़ाने की धमकी दी है। थाना प्रभारी (एसएचओ) ने शिकायत मामले में जांच का आदेश दिया है। भट्ट ने आरोप लगाया है कि यूजर ने आपराधिक प्रवृत्ति दिखायी है और ऐसा लग रहा है कि वह हमारे नेता की बढ़ती लोकप्रियता से परेशान है। आरोपी आरजेडी का एक समर्थक है।

बिना पर्ची, बिना खर्ची हो रही भर्ती: पीएम मोदी

■ NBT रिपोर्ट: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को 16वें रोजगार मेले के तहत देशभर के 47 स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम में विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए 51,000 से ज्यादा युवाओं को सरकारी नियुक्ति पत्र सौंपे। इस मौके पर उन्होंने कहा कि रोजगार मेला युवाओं को आत्मनिर्भर और राष्ट्रनिर्माण का सशक्त भागीदार बना रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज 51,000 से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। लाखों युवा पहले ही सरकारी नौकरी पा चुके हैं। ये युवा आज भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के अभियान के सैनिक बन गए हैं। उन्होंने रोजगार मेले को 'बिना पर्ची, बिना खर्ची' वाला भर्ती अभियान बताया और कहा कि केंद्र सरकार ने नौकरियों की प्रक्रिया को पारदर्शी और तेज बनाया है। अब किसी सिफारिश की जरूरत नहीं, सिर्फ आपकी योग्यता ही आपकी पहचान है। रोजगार मेला योजना की शुरुआत से अब तक 10 लाख से ज्यादा युवाओं को सरकारी नौकरियां मिल चुकी हैं। इसमें रेलवे,

51,000 युवाओं को बांटे नियुक्ति पत्र

PTI

पीएम ने वर्चुअली नियुक्ति पत्र दिए।

स्वास्थ्य, डाक, बैंकिंग, गृह मंत्रालय और शिक्षा जैसे प्रमुख विभाग शामिल हैं।

पहली प्राइवेट नौकरी पर मिलेंगे 15,000 रुपये: नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत सरकार का जोर प्राइवेट सेक्टर में रोजगार के नए अवसरों के निर्माण पर भी है। हाल ही में सरकार ने एक नई स्कीम को मंजूरी दी है, रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन योजना। इस योजना के तहत सरकार प्राइवेट सेक्टर में पहली बार रोजगार पाने वाले युवा को 15 हजार रुपए देगी, यानी पहली नौकरी की पहली सैलरी में सरकार अपना योगदान देगी। इसके लिए सरकार ने करीब 1 लाख करोड़ रुपए का बजट बनाया है, इस योजना से लगभग 3.5 करोड़ रोजगार के निर्माण में मदद मिलेगी।

यमन में फांसी की सज़ा का सामना कर रही नर्स की मदद करें पीएम: वेणुगोपाल

■ NBT रिपोर्ट: कांग्रेस महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने शनिवार को केरल में जन्मी नर्स निमिषा प्रिया को यमन में फांसी से बचाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हस्तक्षेप करने की मांग की। कांग्रेस महासचिव के. सी. वेणुगोपाल ने पत्र में लिखा कि मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इस मामले को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ लेते हुए तत्काल हस्तक्षेप करें और यमन के अधिकारियों से संपर्क कर सभी संभव राजनयिक उपाय कराएं और निमिषा की मौत की सजा रद्द कराएं। निमिषा पर यमन में स्थानीय व्यापारी तलाल अब्दो महदी को नशीले इंजेक्शन से मारने का आरोप है।

पहचान के लिए अपील

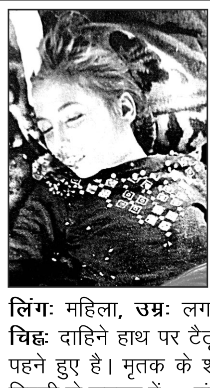

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक महिला जिसका **नाम: अज्ञात, पुत्री:** अज्ञात, **निवासी:** अज्ञात, जो कि दिनांक 08.07.2025 को रिंग रोड माल के पास काली माता मन्दिर के पीछे दीपाली चौक डिवाईडर के बीच दिल्ली क्षेत्र में मृत पायी गयी। इस सन्दर्भ में **DD No.: 90A, Dated 08.07.2025, पुलिस स्टेशन मंगोलपुरी, बाहरी जिला, दिल्ली—110083,** में रिपोर्ट दर्ज है। नीचे मृत महिला की पहचान दी गई है:

लिंग: महिला, **उम्र:** लगभग 22 वर्ष, **कद:** 5'2'', **रंग:** गेंहुआ, **पहचान चिह्न:** दाहिने हाथ पर टैटू के निशान, **पहनावा:** काला कुर्ता, काली जींस पहने हुए है। मृतक के शव को पहचान के लिए संजय गांधी अस्पताल, दिल्ली के शवगृह में 72 घंटे के लिए सुरक्षित रखा गया है।

अगर किसी को इस मृत महिला के बारे में कोई जानकारी मिले तो कृपया नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

थाना अध्यक्ष
पुलिस स्टेशन मंगोलपुरी,
बाहरी जिला, दिल्ली—110083
फोन: 9999590020

DP/9192/OD/2025

बिहार सरकार
उद्योग विभाग

invest BIHAR
A land of immense opportunities
BIADA
BIHAR INDUSTRIAL AREA DEVELOPMENT AUTHORITY

बिहार टेक्सटाइल एवं लेदर पॉलिसी

प्रोत्साहन की नीतियां दमदार
बढ़ता उद्योग, बढ़ता रोजगार
औद्योगिक उड़ान के लिए
बिहार है तैयार

पूंजीगत अनुदान
प्लांट एवं मशीनरी लागत का **30%**
अधिकतम **30 करोड़** रुपये तक

अथवा

ब्याज दर में छूट
(10~12%)% अथवा
वास्तविक ब्याज दर पर छूट
एफसीआई का **50%** अथवा
अधिकतम **20 करोड़**

रोजगार सृजन
कर्मचारी के **ईपीएफ** और **ईएसआई** भुगतान का **300%** की प्रतिपूर्ति
5000 रुपये / माह/ कर्मचारी तक का अनुदान

विद्युत शुल्क
पर **2 रुपये** प्रति यूनिट की छूट

कर संबंधी प्रोत्साहन
100% SGST की प्रतिपूर्ति
स्टाम्प ड्यूटी, पंजीकरण शुल्क और भूमि सम्परिवर्तन शुल्क पर **100% छूट**

माल भाड़ा प्रतिपूर्ति
प्रतिवर्ष **10 लाख** रुपये तक

पेटेन्ट अनुदान
10 लाख रुपये तक

#BIHARHAITAIYAR

PR No.- 008485 (Industry)D. 2025-26

1800 345 6214

IndustriesBihar BiharIndustriesDept https://state.bihar.gov.in/industries

अपराध संक्षेप

पिस्टल लेकर घूम रहा बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। बाहरी जिला स्पेशल स्टाफ ने पिस्टल लेकर घूम रहे बदमाश को गिरफ्तार किया है। बदमाश की पहचान मंगोलपुरी निवासी विकास के रूप में हुई है। इस पर पहले से ही 24 आपराधिक मामले दर्ज हैं। वह राजपार्क थाने का घोषित बदमाश है। जिला पुलिस उपायुक्त सचिन शर्मा के कार्यालय से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, 10 जुलाई को राज पार्क थाना पुलिस इलाके के सुनसान जगहों की तलाशी ले रही थी। फेज-1 औद्योगिक क्षेत्र मंगोलपुरी के पास निरीक्षण के दौरान पुलिस को एक संदिग्ध दिखा। ब्यूरो

लूटपाट में तीन बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली कैंट थाना पुलिस ने माल वाहक वाहन के चालक से लूटपाट करने वाले तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। बदमाशों के कब्जे से पुलिस ने वारदात में इस्तेमाल स्विफ्ट कार बरामद की है। बदमाशों की पहचान फतेहपुर बेरी निवासी राहुल उर्फ रॉबर्ट, नेब सराय निवासी अन्नू और उसके भाई शिवा के रूप में हुई है। राहुल फतेहपुर बेरी थाने का घोषित बदमाश है और उस पर चोरी, झपटमारी, लूटपाट और शस्त्र अधिनियम के 17 मामले, वहीं शिवा पर चार और अन्नू पर एक मामला दर्ज है। ब्यूरो

यात्री के बैग से मिले चार कारतूस

नई दिल्ली। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के टर्मिनल-3 पर सुरक्षा जांच के दौरान यात्री के बैग से चार कारतूस बरामद हुए हैं। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू की है। आईजीआई एयरपोर्ट थाने में दर्ज प्राथमिकी के मुताबिक घटना नौ जुलाई की शाम की है। यात्री सुरजीत सिंह के बैग की एक्स-रे मशीन पर जांच की गई। जांच के दौरान बैग में संदिग्ध वस्तु दिखी। तलाशी के दौरान बैग से चार कारतूस बरामद हुए। यात्री दिल्ली से हांगकांग जाने के लिए एयरपोर्ट पर आए थे। अधिकारियों ने कारतूस मिलने पर दस्तावेज दिखाने को कहा, लेकिन वह कोई दस्तावेज नहीं दिखा पाए। ब्यूरो

डरा रहा पैदल यात्रियों की मौत का आंकड़ा

पिछले साल के शुरुआती छह महीनों की तरह इस साल भी जून तक 286 पैदल यात्रियों ने जान गंवाई

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली में पैदल यात्रियों की मौत के आंकड़े डरा रहे हैं। पिछले साल के शुरुआती छह महीनों की तरह इस साल भी जून तक 286 पैदल यात्रियों ने अपनी जान सड़क हादसों में गंवाई है। इस अवधि में सड़क हादसों में तो 11.57 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। दोपहिया सवारों की मौत का आंकड़ा भी घटा है।

सड़क दुर्घटनाओं में 11.57 फीसदी की कमी आई

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की ओर से दिए गए डाटा को देखें तो 2024 में एक जनवरी से लेकर 30 जून तक 285 गंभीर सड़क हादसे हुए जबकि 2025 में इस अवधि में 283 दुर्घटनाएं हुईं। वर्ष 2024 के शुरुआती छह महीनों में 297 सड़क दुर्घटनाओं में 305 दोपहिया वाहन सवारों की मौत हुई थी। इस वर्ष 241 सड़क हादसों में 252 लोगों की जान गई। सड़क दुर्घटनाओं में कार व साइकिल सवारों की मौत में भी कमी आई है। वर्ष 2024 के शुरुआती छह महीनों में 27 हादसो में 29 कार सवारों की जबकि इस अवधि में इस साल 19 लोगों की जान गई। 2024 में 26 साइकिल सवारों ने जबकि इस साल 19 साइकिल सवारों की मौत हुई है।

हर रोज करीब चार लोगों की होती है मौत

- आंकड़ों के अनुसार, पिछले वर्ष के शुरुआती छह महीने के मुकाबले इस वर्ष के शुरुआती छह महीनों में सड़क दुर्घटनाओं में 11.57 फीसदी की कमी दर्ज की गई है। वर्ष 2024 के शुरुआती छह महीनों में हुई 764 सड़क दुर्घटनाओं में 778 लोगों की मौत हुई थी। वहीं इस वर्ष के शुरुआती छह महीनों में हुई 665 सड़क दुर्घटनाओं में सिर्फ 688 लोगों की मौत हुई है। इस वर्ष के शुरुआती छह महीनों के आंकड़े देखें तो राष्ट्रीय राजधानी में हर रोज करीब 4 लोगों की मौत हुई है, जबकि वर्ष 2024 में हर रोज करीब पांच लोगों की मौत होती थी।

नरेला सर्किल में हो रहीं सबसे ज्यादा मौतें

राजधानी में बाहरी दिल्ली का नरेला सर्किल ऐसा है, जहां सड़क दुर्घटनाओं में सबसे ज्यादा मौतें होती हैं। ये सिलसिला इस वर्ष भी जारी है। वर्ष 2024 में नरेला सर्किल में हुई 65 सड़क दुर्घटनाओं में सबसे ज्यादा 66 मौतें हुई थीं। वहीं इस वर्ष भी नरेला सर्किल में सबसे ज्यादा मौतें हुई हैं। इस वर्ष 55 सड़क दुर्घटनाओं में 58 लोगों की मौत हुई है।

- *वर्ष 2024 (एक जनवरी से लेकर 30 जून तक)*

सर्किल	घातक सड़क दुर्घटनाएं	
	दुर्घटनाएं	मौत
नरेला	65	66
मॉडल टाउन	38	39
तिलक नगर	33	34
नांगलोई	30	30
समयपुर बादली	28	29

- *वर्ष 2025 (एक जनवरी से लेकर 30 जून तक)*

	दुर्घटनाएं	मौत
नरेला	55	58
समयपुर बादली	36	39
द्वारका	27	29
अशोक विहार	27	27
कोतवाली	25	27

वर्ष	सड़क दुर्घटनाएं	मौत
2024	764	778
2025	665	688

वर्ष 2024 के मुकाबले आपराधिक वारदात 27.28 फीसदी हुईं कम

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने दावा किया है कि वर्ष 2024 के शुरुआती छह महीने के मुकाबले वर्ष 2025 के शुरुआती छह महीने में कुल आपराधिक वारदातों में 27.28 फीसदी की कमी आई है। वर्ष 2025 के शुरुआती छह महीनों के अपराध को वर्ष 2023 के शुरुआती छह महीनों से तुलना करके देखें तो आपराधिक वारदातों में 8.38 फीसदी की कमी आई है।

हालांकि वर्ष 2025 में वर्ष 2024 व वर्ष 2023 के मुकाबले गंभीर अपराध में क्रमशः 27.54 फीसदी और 8.29 फीसदी की कमी आई है। वर्ष 2025 के शुरुआती छह महीनों में वर्ष 2024 व वर्ष 2023 के मुकाबले अपहरण के मामलों में सबसे ज्यादा गिरावट क्रमशः 52.99 और 35.29 दर्ज की गई है। दिल्ली पुलिस के प्रवक्ता अतिरिक्त पुलिस आयुक्त संजय त्यागी के कार्यालय की ओर से शनिवार को जारी आंकड़ों में पिछले वर्ष के मुकाबले इस वर्ष सिर्फ आपराधिक वारदातों में 4.89 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। बाकी सभी अपराधों में आंकड़ों में कमी दिखाई गई है। वर्ष 2024 के मुकाबले वर्ष 2025 के शुरुआती छह महीनों में हत्या के मामलों में 7.06 फीसदी, रॉबरी की वारदातों में 19.37 फीसदी, दुष्कर्म व पॉक्सो के मामलों में 9.86, वाहन चोरी की वारदातों में 9.55 और छेड़छाड़ की घटनाओं में 29.03 की कमी दर्ज गई है। इसी तरह वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2025 के शुरुआती छह महीनों में हत्या के मामलों में 3.73 फीसदी की बढ़ोतरी, रॉबरी की वारदातों में 22.88 फीसदी की कमी और छेड़छाड़ की घटनाओं में 10.85 फीसदी की कमी दर्ज की गई है। ब्यूरो

रूस से एमबीबीएस कर रहा छात्र चला रहा था ठगी का कारोबार

पांच जालसाज गिरफ्तार, आरोपियों ने दिल्ली की महिला से 11 लाख की ठगी की थी

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। उत्तरी जिला साइबर सेल ने ऑनलाइन कार्य पूरा करने पर अच्छा रिटर्न देने का झांसा देकर ठगी करने वाले गैंग का खुलासा किया है। पुलिस ने गैंग के पांच बदमाशों को मेरठ और मुजफ्फर नगर से गिरफ्तार किया है।

आरोपियों ने दिल्ली की एक महिला से 11 लाख की ठगी की थी। आरोपी टेलीग्राम के जरिये लोगों से संपर्क कर उन्हें लुभावने ऑफर देते थे। इनके कब्जे से पांच मोबाइल, पांच सिम, तीन चेक बुक और दो एटीएम कार्ड बरामद किए गए हैं। आरोपियों की पहचान न्यू मोहन पुरी कॉलोनी मेरठ निवासी कार्तिक सैनी, फूल बाग कॉलोनी मेरठ निवासी वरुण कुमार, खतौली, मुजफ्फर नगर निवासी शारिम खान, हुमैद खान और सुहैल सैफी के रूप में हुई है।

कार्तिक सैनी बीकॉम, वरुण हुमैद खान और सुहैल सैफी बीबीए की पढ़ाई कर रहा है, जबकि शारिम खान मेडिकल स्टोर चलाता है।

लेन-देन पर 10 फीसदी देने का किया था वादा

आरोपी हुमैद खान ने पूछताछ में बताया कि उसका दोस्त समीर मलिक रूस से एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा है। उसने ही उसे ठगी की रकम ट्रांसफर करने के लिए बैंक खाते उपलब्ध कराने के लिए कहा था। साथ ही प्रत्येक लेन-देन पर 10 फीसदी देने का वादा किया था। वहीं कार्तिक ने बताया कि उसने खाते खोले और सभी नेट बैंकिंग आईडी, पासवर्ड, कॉर्पोरेट आईडी और खाते से जुड़ी सिम वरुण कुमार को मुहैया करवाई। इसके एवज में उसे आठ हजार रुपये मिले। वरुण कुमार ने पूछताछ में खुलासा किया कि उसने प्रत्येक लेन-देन पर पांच फीसदी कमीशन के लिए यश को खाते का विवरण दिया। यश दिए गए बैंक खाते में ठगी की गई राशि ट्रांसफर करवाता था और वरुण कुमार कार्तिक सैनी से नकदी लेकर यश को पैसे भेजता था। जांच में पता चला कि पीड़िता के 2.75 लाख रुपये खाते में जमा किए गए थे, जिसे कार्तिक सैनी ने निकालकर यश को भेजे थे।

आरोपी हुमैद खान ने पूछताछ में बताया कि उसका दोस्त समीर मलिक रूस से एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा है। उसने ही उसे ठगी की रकम ट्रांसफर करने के लिए बैंक खाते उपलब्ध कराने के लिए कहा था।

उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त राजा बांठिया ने बताया कि जिले के साइबर सेल को नेशनल क्राइम पोर्टल के जरिये शास्त्री नगर की रहने वाली जे शर्मा की शिकायत मिली। पुलिस ने पीड़िता का बयान दर्ज किया, जिसमें उन्होंने बताया कि उसे टेलीग्राम पर पेड टास्क का प्रचार करने वाला एक लिंक मिला, जिसमें टास्क करने पर मुनाफा देने की बात कही गई थी। उनके हामी भरने के बाद जालसाज ने टेलीग्राम पर टास्क भेजा और निर्देश पर उन्होंने कई ट्रांजेक्शन के जरिये 11 लाख रुपये उनके खाते में ट्रांसफर कर दिए।

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। निरीक्षक मनीष कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने करीब 100 संदिग्ध मोबाइल नंबरों की कॉल डिटेल रिकॉर्ड की जांच की। साथ ही उन बैंक खातों की जांच की, जिसमें पीड़िता से पैसे लेकर ट्रांसफर किए गए थे।

ई-कॉमर्स और यूपीआई प्लेटफॉर्म जैसे फोनपे, पेटीएम, रैपिडो, पोर्टर, स्विगी, जोमैटो, ब्लूडार्ट आदि से जानकारी लेने के बाद पुलिस ने छापे मारे, लेकिन आरोपी बार-बार अपना ठिकाना बदल रहे थे। पुलिस ने संदिग्ध मोबाइल नंबरों पर निगरानी रखा, जिसमें आरोपियों की लोकेशन मेरठ और मुजफ्फर नगर में पाई गई। पुलिस ने 25 जून को मेरठ में छापेमारी कर आरोपी कार्तिक सैनी को गिरफ्तार कर लिया।

उससे पूछताछ करने के बाद पुलिस ने आरोपी वरुण कुमार को उसी दिन मेरठ से गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद पुलिस ने 7 जुलाई को मुजफ्फर नगर में छापा मारकर आरोपी शारिम खान को गिरफ्तार किया। उसकी निशानदेही पर दो सहयोगी आरोपी हुमैद खान और सुहैल सैफी को भी 9 जुलाई को मुजफ्फर नगर से गिरफ्तार कर लिया गया।

सदर बाजार में कॉस्मेटिक की दुकान में लगी आग

दो दमकलकर्मी घायल, दमकल की 27 गाड़ियों ने तीन घंटे में आग पर पाया काबू

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। सदर बाजार इलाके में शनिवार दोपहर तीन मंजिला इमारत की पहली मंजिल पर कॉस्मेटिक की दुकान में आग लग गई। घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के फायर स्टेशनों से दमकल की 27 गाड़ियों को मौके पर भेजा गया।

दमकल कर्मियों ने तीन घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आग बुझाने के दौरान दो दमकलकर्मी घायल हो गए, जिन्हें पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। एक को प्राथमिक इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई, जबकि दूसरे का इलाज चल रहा है। पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रही है। दमकल विभाग के अनुसार शनिवार दोपहर 3:49 बजे सदर बाजार की मटके वाली गली में एक दुकान में आग लगने की जानकारी मिली थी।

सदर बाजार इलाके में तीन मंजिला इमारत में लगी आग को बुझाते दमकलकर्मी। अमर उजाला

घटनास्थल पर पहुंचे दमकल विभाग के डिप्टी चीफ डॉ संजय तोमर ने बताया कि आग 100 गज में बनी तीन मंजिला इमारत की पहली मंजिल पर स्थित दुकान में लगी थी। आग लगते ही इमारत में मौजूद सभी लोग बाहर आ गए थे। आग बुझाने के दौरान फायर ऑपरेटर योगेन्द्र झुलस गए।

पुलिस ने दो नाबालिग समेत तीन आरोपियों को पकड़ा

नई दिल्ली। दक्षिण-पूर्व जिला पुलिस ने हत्या के प्रयास के मामले को 24 घंटे के भीतर सुलझाने का दावा करते हुए दो नाबालिग समेत तीन आरोपियों को पकड़ा है। आरोपियों के कब्जे से अपराध में प्रयुक्त चाकू बरामद किया गया है।

कालकाजी थाना पुलिस ने हत्या के प्रयास के मामले को 24 घंटे में सुलझाया

दक्षिण-पूर्व जिले की अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त ऐश्वर्या शर्मा ने बताया कि कालकाजी थाना पुलिस को 11 जुलाई को रात 10.57 बजे पीसीआर कॉल मिली कि 429 बस स्टैंड डीडीए फ्लैट्स, कालकाजी के पास चाकू से हमला किया गया है। कॉल करने वाले भूमिहीन कैंप, गोविंद पुरी निवासी साहिल ने बताया कि वह ई-रिक्शा चलाता है। रात लगभग 10.30 बजे जब वह 429 बस स्टैंड डीडीए फ्लैट्स, कालकाजी में मुस्तफ बैटरी शॉप पर आया तो वहां उसके परिचित राहुल, गणपत और कृष्णा पहले से ही मौजूद थे। उन्होंने उस पर चाकू से हमला कर दिया। उसे मेडिकल परीक्षण के लिए ले जाया गया। मामला दर्जकर कालकाजी थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर सुरेंद्र सिंह, एटीओ इंस्पेक्टर अजय मिश्रा, एसआई सुशील रावत व एएसआई कपिल देव की टीम ने घटनास्थल पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली, इसके बाद पुलिस ने आरोपियों को पकड़ लिया। आरोपियों की पहचान गली नंबर 1, तुगलकाबाद एक्सटेंशन निवासी कृष्णा उर्फ बहरा (19) और दो नाबालिग के रूप में हुई। ब्यूरो

रंगदारी नहीं देने पर महिला पर चलाई गोली, बेटी को लगी

भलस्वा डेयरी इलाके की घटना, पुलिस ने दो नाबालिगों को पकड़ा

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। भलस्वा डेयरी इलाके में जेल में बंद सरगना के इशारे पर बदमाशों ने रंगदारी नहीं देने वाली महिला पर गोली चला दी। गोली महिला की बेटी के हाथ पर लगी। पुलिस ने जांच करते हुए वारदात में शामिल दो नाबालिगों को पकड़ा है।

पुलिस भागे हुए एक आरोपी की तलाश कर रही है। इनके कब्जे से वारदात में इस्तेमाल पिस्टल और कारतूस बरामद किया है। दोनों आरोपी 15 और 17 साल के हैं। 17 साल का नाबालिग हत्या और डकैती मामले में पहले भी पकड़ा जा चुका है। बाहरी-उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त हरेश्वर वी स्वामी ने बताया कि 10 जुलाई की रात करीब 10:40 बजे भलस्वा डेरी थाना पुलिस को मुकुंदपुर में गोलीबारी की घटना की सूचना मिली।

घटनास्थल पर पहुंची पुलिस को शिकायतकर्ता हीरा देवी ने बताया कि दो नाबालिग उनके घर आए और 30 हजार रुपये प्रति माह की रंगदारी देने के लिए कहा। रंगदारी देने से इंकार करने पर बदमाशों ने गोली चला दी। वह गोली से बच गई, लेकिन एक गोली उसकी बेटी निशा के हाथ पर लगी। पुलिस ने घायल बेटी को अस्पताल में भर्ती कराया।

पीड़िता के बयान पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। पुलिस ने नामजद नाबालिगों की तलाश शुरू की और सूचना पर दोनों को इलाके से पकड़ लिया। बाहरी उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त कार्यालय से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक पूछताछ के दौरान पता चला कि 17 साल का नाबालिग पहले भी हत्या और डकैती के मामलों में शामिल रहा है। उसने बताया कि सितंबर 2024 में विवेक और शिवचंदन के साथ मिलकर अमित की हत्या कर दी थी। इस मामले में पकड़ा गया था।

उसने बताया कि जेल मे बंद शिवचंदन ने विवेक को फोन कर महिला से रंगदारी मांगने के लिए कहा था और रंगदारी नहीं देने पर गोली मारने का निर्देश दिया था। विवेक ने 17 साल के आरोपी को घटना को अंजाम देने के लिए कहा। 10 जुलाई को उसने दूसरे नाबालिग के साथ मिलकर घटना को अंजाम दिया।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से स्कूटी सवार घायल

नई दिल्ली। बिंदापुर इलाके में शुक्रवार देर रात तेज रफ्तार कार की टक्कर से स्कूटी सवार युवक घायल हो गया। स्कूटी कार में फंसने से आग लग गई। किसी तरह स्कूटी को हटाकर कार चालक मौके से भाग गया। घायल युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल युवक की पहचान गुरुग्राम निवासी वैदश्वरन के रूप में हुई है। घटना से जुड़ा एक कथित वीडियो भी सामने आया है, जिसमें दिख रहा है कि स्कूटी सवार टक्कर लगने के बाद हवा में उछलता हुआ सड़क पर गिर गया है। उसकी स्कूटी कार के अगले हिस्से में फंस गई है। जिला पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है। ब्यूरो

फर्जी पासपोर्ट के जरिये पहुंचा अमेरिका

नई दिल्ली। फर्जी पासपोर्ट के जरिये गुजरात निवासी यात्री को अमेरिका भेजने का मामला सामने आया है। इसका खुलासा उस समय हुआ जब यात्री अमेरिका से निर्वासित होने के बाद आईजीआई एयरपोर्ट पहुंचा।

धोखाधड़ी कर यात्रा करने के आरोपी में आईजीआई एयरपोर्ट थाना पुलिस ने यात्री के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस यात्री से पूछताछ कर फर्जी पासपोर्ट मुहैया करने वाले एजेंट की तलाश में जुट गई है। आईजीआई एयरपोर्ट में दर्ज प्राथमिकी के मुताबिक 9 जुलाई अमेरिका से गुजरात के मेहसाणा का रहने वाला यात्री महेशभाई पोपटभाई पटेल एयरपोर्ट पहुंचा। एयरपोर्ट पर तैनात इमिग्रेशन विभाग के अधिकारियों ने उसके दस्तावेज की जांच की, जिसमें पता चला कि फर्जी पासपोर्ट के जरिए वह 2023 में कनाडा होते हुए अमेरिका गया था। एजेंटों ने फर्जी दस्तावेज के जरिये उसे अमेरिका में अवैध रूप से प्रवेश करवाया।

इस बात की जानकारी मिलने के बाद अमेरिका से उसे निर्वासित कर दिया गया। अधिकारियों ने उसके दस्तावेज की जांच की। उसके पासपोर्ट में काफी छेड़छाड़ किए गए थे। पूछताछ में यात्री ने बताया कि वह एजेंट के जरिए पासपोर्ट का इंतजाम किया था। उन्होंने ही उसके अमेरिका जाने की व्यवस्था की थी। ब्यूरो

गोलीबारी की सूचना से हड़कंप

दक्षिण-पूर्व जिला पुलिस ने कहा कोई सबूत नहीं मिला

नई दिल्ली। कालकाजी के मुख्य बाजार के पास दो युवकों पर गोलीबारी की घटना से दिल्ली पुलिस में हड़कंप मच गया। सूचना के बाद वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे।

सूचना देने वाले ने ये भी बताया कि गोली लगने से दोनों युवक घायल हो गए हैं। हालांकि इस सूचना को झूठा करार दे दिया गया। जिला पुलिस ने कहा कि शनिवार शाम तक कालकाजी मुख्य बाजार के पास गोलीबारी के कोई सबूत नहीं मिले हैं। दक्षिण-पूर्व जिला पुलिस उपायुक्त हेमंत तिवारी ने बताया कि शुक्रवार रात करीब सवा 11 बजे पीसीआर को कॉल मिली। कॉल करने वाले ने दावा किया कि देशबंधु कॉलेज के पास स्थित टी-पॉइंट के निकट देव मलिक और निर्भय भाटी को गोली लगी है। उन्होंने बताया कि घायलों को सफदरजंग अस्पताल ले जाया गया। मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार, वहां उनका इलाज किया गया। पुलिस उपायुक्त ने बताया कि बाद में दोनों युवकों ने बयान देने से इंकार कर दिया और कहा कि अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद पुलिस थाने में बयान देंगे। उपायुक्त ने बताया कि स्थानीय जांच से पता चला है कि इलाके में गोलीबारी की कोई घटना नहीं हुई और कथित घटनास्थल पर इस्तेमाल किया हुआ कोई कारतूस नहीं मिला। सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है। ब्यूरो

दुकानदारों को बातों में उलझाकर करते थे चोरी, दो गिरफ्तार

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। दक्षिण पश्चिम जिला पुलिस ने दुकानदारों को बातों में उलझाकर चोरी करने वाले टोपी गैंग के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार बदमाशों की पहचान मूलरूप से कानपुर निवासी नितिन कुमार और हिमांशु कुमार के रूप में हुई है।

दोनों पहचान छिपाने के लिए टोपी पहनकर वारदात को अंजाम देते थे। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से दो मोबाइल फोन, दो हजार रुपये और दो टोपी बरामद की हैं। जिला पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने बताया कि 4 जून को साउथ कैंपस थाना में एक दुकानदार ने चोरी की शिकायत की थी। उसकी दुकान पर आए दो युवकों ने बातों में उलझा कर मोबाइल फोन चोरी कर लिया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि इस तरह की वारदात की अन्य शिकायतें भी आई थी। मामले की जांच जिले की सेंधमारी निरोधक दस्ते को सौंपी गई। पुलिस ने करीब 120 सीसीटीवी कैमरों से प्राप्त फुटेज की जांच की। जिसमें दो बदमाश टोपी पहनकर वारदात को अंजाम देते दिखे। बाद में मिले एक फुटेज में बदमाशों का चेहरा दिखा। पुलिस ने निगरानी बढ़ाकर 11 जुलाई को इलाके से दोनों बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया।

दक्षिण दिल्ली में दुकानों को बनाते थे निशाना

दक्षिण पश्चिम डीसीपी की ओर से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक आरोपियों का बहनोई चोरी करने वाले टोपी गैंग चलाता है। आर्थिक तंगी के कारण वह गैंग से जुड़ गए। वह कानपुर से दिल्ली आकर यहां किराये के मकान लेते थे और फिर दक्षिण दिल्ली के दुकानों को निशाना बनाते थे। वारदात को अंजाम देने के दौरान पहचान छिपाने के लिए काले रंगी की टोपी पहनते थे। पुलिस अधिकारी ने बताया कि गिरोह के सरगना की पहचान कर ली गई है और उसकी गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है।

कार्रवाई — पश्चिम जिला पुलिस ने की कार्रवाई, 11 स्कूटी और 4 बाइकें बरामद

वाहन चोरों के खिलाफ विशेष अभियान चलाकर नौ पकड़े

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। पश्चिम जिला पुलिस ने वाहन चोरों के खिलाफ विशेष अभियान चलाकर नौ बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से पुलिस ने 11 स्कूटी और चार बाइक बरामद की है। पुलिस ने इनकी गिरफ्तारी से 15 मामले सुलझाने का दावा किया है।

बदमाशों की पहचान धर्मेंद्र जूडी, जयप्रीत, अंकित शर्मा, रोहित, मोहम्मद साहिल, भारत, गुरमीत सिंह, कार्तिक और देव कुमार के रूप में हुई है। पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि जिले में बढ़ते वाहन चोरी की वारदातों को देखते हुए सभी थाना पुलिस को वाहन चोरों के धर पकड़ के निर्देश दिए गए थे।

9 जुलाई को ख्याला थाना पुलिस ने सूचना पर गश्त के दौरान रघुवीर नगर से पंजाबी बाग निवासी धर्मेंद्र उर्फ जूडी को चोरी की स्कूटी पर घूमते हुए पकड़ा। कीर्ति नगर थाना पुलिस को 8 जुलाई को एक स्कूटी की चोरी की शिकायत मिली। सीसीटीवी कैमरे की जांच में पुलिस को स्कूटी चोर के बाएं हाथ में एक टैटू दिखाई दिया। मुखबिरों के जरिये उसकी पहचान कर पुलिस ने तिलक नगर निवासी जसप्रीत को उसके ठिकाने से गिरफ्तार कर लिया। इसी तरह 10 जुलाई को पुलिस ने गश्त के दौरान चोरी की स्कूटी से घूम रहे अंकित शर्मा को गिरफ्तार कर लिया।

इसी तरह तिलक नगर थाना पुलिस ने गश्त के दौरान सूचना पर सीआरपीएफ कैंप के पास बदमाश को देर रात 12.15 बजे पकड़ लिया। पूछताछ में इसकी पहचान तिलक नगर निवासी रोहित के रूप में हुई।

10 जुलाई की रात इलाके में गश्त करने के दौरान हरिनगर थाना पुलिस ने बाइक सवार एक संदिग्ध को रुकने का इशारा किया, लेकिन वह भागने लगा, पुलिस ने पीछा कर दबोच लिया। जांच में पता चला कि बाइक सागरपुर इलाके से चुराई गई है। बदमाश की पहचान राणाजी एंक्लेव निवासी साहिल के रूप में हुई। वहीं पुलिस टीम ने गश्त के दौरान एक स्कूटी सवार को भी पकड़ा। स्कूटी मायापुरी इलाके से चुराई गई थी। वाहन चोर की पहचान पंजाबी बाग निवासी भरत के रूप में हुई।

ख्याला थाना पुलिस ने चोरी की स्कूटी से घूम रहे संत नगर एक्सटेंशन निवासी गुरमीत को गिरफ्तार कर लिया। राजौरी गार्डन थाना पुलिस ने 10 जुलाई को गश्त के दौरान चोरी की स्कूटी से घूम रहे रघुवीर नगर निवासी कार्तिक को गिरफ्तार कर लिया। 10 जुलाई की देर रात इंद्रपुरी थाना पुलिस ने स्कूटी चोरी करने वाले बदमाश अंबेडकर गेट निवासी देव कुमार को गिरफ्तार किया।

सभी बदमाशों पर दर्ज हैं आपराधिक मामले

पुलिस अधिकारी ने बताया कि सभी बदमाशों पर पहले से आपराधिक मामले दर्ज हैं, साथ ही कई बदमाश हाल ही में जेल से रिहा हुए हैं। पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार गिरफ्तार धर्मेंद्र जूडी पर 13 आपराधिक मामले दर्ज हैं और वह 2 जुलाई को जमानत पर रिहा हुआ है। जयप्रीत पर 7 आपराधिक मामले वहीं अंकित शर्मा पर 5, रोहित पर 23, साहिल पर 4, भरत पर 3, गुरमीत सिंह पर आठ मामले और वह 18 जून को जमानत पर रिहा हुआ है। वहीं कार्तिक पर 7, देव कुमार पर 16 आपराधिक मामले दर्ज हैं।

अभियान

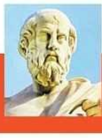

अच्छे आदमी के साथ बुरा नहीं हो सकता,
न इस जीवन में, न मरने के बाद।
- प्लेटो, महान दार्शनिक

amarujala.com
अमर उजाला

Hindi@mithelesh
▪ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

मेरे पास एक नदी थी, एक पेड़ था,
एक छोटा पहाड़ था, मैं खिलौनों की
दुकानों से वाकिफ नहीं था...

वो जो गीली चद्दर झटक कर ले आती थी,
ऐसी बारिशें कहां से लाऊं...

शहरों ने मिलकर जिस नदी को नोचा था,
उसने एक मासूम से गांव पर सारा गुस्सा
निकाल दिया ...

पेस ने जीता पहला एटीपी खिताब

झरोखा
13 जुलाई

आज के ही दिन 1998 में भारतीय टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस ने हॉल ऑफ फेम टेनिस चैंपियनशिप में अपना पहला एटीपी खिताब जीता था। उनके द्वारा हासिल की गई यह उपलब्धि काफी महत्वपूर्ण थी, क्योंकि यह किसी भारतीय खिलाड़ी द्वारा एटीपी टूर पर जीता गया पहला एकल खिताब था। टूर्नामेंट के फाइनल में लिएंडर पेस ने डेविड प्रिनोसिल को हराया था। यह जीत भारतीय टेनिस के लिए एक बड़ी बात थी। इससे पहले किसी भी भारतीय खिलाड़ी ने एटीपी टूर पर एकल खिताब नहीं जीता था। लिएंडर पेस ने इसके बाद कई और खिताब जीते।

इस जीत के बाद, पेस को 'इंडियन एक्सप्रेस' के रूप में जाना जाने लगा और उन्होंने महेश भूपति के साथ मिलकर भारतीय टेनिस को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। पेस ने 1990 में विंबलडन जूनियर खिताब जीता और कुछ समय के लिए दुनिया के नंबर एक जूनियर खिलाड़ी भी रहे। 2001 में पेस को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक, पद्म श्री और 2014 में पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया। 2020 के बाद उन्होंने पेशेवर प्रतियोगिताओं से संन्यास ले लिया।

▪ विनीत शर्मा, झज्जर

मानसून हो या बेमौसम बारिश, सड़कों से लेकर सीवरेज व्यवस्था तक के सरकारी दावों की पोल खुल जाती है। लेकिन इसके लिए शासन-प्रशासन के साथ हम भी जिम्मेदार हैं। इसके समाधान के लिए हमें मिलकर कोशिशें करनी होंगी।

हमें साझा प्रयास करने होंगे

सिस्टम फेल या नागरिक बेपरवाह?

चिट्ठी 1

जैसे ही बरसात का मौसम दस्तक देता है, देश की स्मार्ट सिटी से लेकर छोटे कस्बों तक की सीवरेज व्यवस्था की असलियत उजागर हो जाती है। थोड़ी सी बारिश होते ही सड़कों पर पानी भर जाता है, नालियां उफान मारने लगती हैं और शहर तालाब में तब्दील हो जाता है। ऐसे में सारा दोष प्रशासन पर डाल दिया जाता है, लेकिन क्या हम यह भूल जाते हैं कि हर व्यवस्था केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं होती? जहां हम सरकार की नीति और क्रियान्वयन पर सवाल उठते हैं, वहीं आम नागरिक की आदतें और लापरवाही भी इस दुर्दशा की बड़ी वजह हैं।

इन नालों और सीवर लाइनों को जाम करने में आम आदमी का बड़ा हाथ होता है। घरों और दुकानों का कचरा, निर्माण स्थलों का मलबा और सबसे ज्यादा- प्लास्टिक और पॉलीथिन- बेरोकटोक नालियों में फेंक दिया जाता है। सरकार द्वारा बार-बार पॉलीथिन पर प्रतिबंध लगाए जाने के बावजूद लोग खुलेआम नियमों की धज्जियां उड़ाते हैं। यही प्लास्टिक कचरा बरसात के समय सीवर की रफ्तार रोक देता है और शहरों को जलमग्न कर देता है। हमें यह समझना होगा कि हर समस्या का समाधान केवल सरकारी मशीनरी के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। जब तक नागरिक खुद जागरूक नहीं होंगे, तब तक हालात नहीं बदलेंगे। प्रशासन के पास सीमित संसाधन हैं और सीमित जनशक्ति भी, लेकिन यदि हम स्वयं थोड़ी सजगता दिखाएं- जैसे कचरा नालियों में न फेंकना, पॉलीथिन का उपयोग बंद करना, और अपने आस-पास की सफाई में भागीदारी निभाना, तो इन गंभीर स्थितियों से बचा जा सकता है। जब नागरिक अपनी भूमिका को ईमानदारी से निभाएंगे, तभी वास्तव में स्मार्ट सिटी का सपना साकार हो सकेगा।

▪ मुनीष भाटिया, कुरुक्षेत्र

भविष्य को लेकर उदासीन क्यों?

चिट्ठी 2

शिक्षा मनुष्य के विकास के लिए अति आवश्यक है। शिक्षाविहीन मनुष्य का जीवन अंधकारमय होता है, इसलिए सभी को शिक्षित करना जिम्मेदारों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है।

सरकारी प्राथमिक या उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों की संख्या कम होने के कारण दो विद्यालय के बच्चों को किसी एक प्राथमिक या उच्च प्राथमिक विद्यालय में भेजकर एक विद्यालय बंद किया जा रहा है। ऐसे में कुछ समय बाद जिस विद्यालय में बच्चों को भेजा गया है, वह भी बंद करने की स्थिति में हो जाएगा, क्योंकि जिन बच्चों के लिए विद्यालय दूर पड़ेगा वे कुछ समय बाद वहां पढ़ने नहीं जाएंगे। इस तरह एक दिन ऐसा आएगा, जब सभी विद्यालय बंद हो जाएंगे। इसका परिणाम यह होगा कि गरीबों के बच्चे शिक्षा से वंचित हो जाएंगे, इसलिए जिम्मेदारों की महती जिम्मेदारी बनती है कि सरकारी विभागों से विचार-विमर्श कर ऐसी व्यवस्था बनने की कोशिश करें कि किसी भी विद्यालय को बंद करने की नौबत न आए।

देश के नागरिकों की स्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि बढ़ती महंगाई और स्कूल फीस के कारण सभी लोग अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाने में सक्षम नहीं हैं। अगर जिम्मेदारों द्वारा सही ढंग से विचार-विमर्श कर कुछ इस तरह की व्यवस्था बनाई जाए कि गरीब माता-पिता भी अपने बच्चे को मजदूरी कराने के बजाय स्कूल भेजें। सरकार और ग्राम पंचायत मिलकर ऐसी व्यवस्था को अंजाम तक पहुंचाएं, जिससे किसी भी प्राथमिक या उच्च प्राथमिक विद्यालय को बंद नहीं करना पड़े। इसलिए सरकारी विद्यालयों की समय-समय पर जांच भी अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

▪ शंभू नाथ 'सार्थक', लखनऊ

सहयोगी बनें कांवड़िये

चिट्ठी 3

जैसे ही सावन का पवित्र माह आता है, पूरा भारत शिवमय हो जाता है और एक बड़ा हिस्सा भगवामय हो जाता है। बहुत बड़ी संख्या में शिवभक्त कांवड़ लेने के लिए हरिद्वार की ओर प्रस्थान करते हैं। लगभग दो सप्ताह तक हरिद्वार से यूपी, दिल्ली, हरियाणा सहित कई प्रदेशों तक कांवड़ियों की एक लंबी कतार दिखाई देती है। शिव भक्तों की आस्था का यह सैलाब निरंतर बढ़ता जा रहा है।

शासन व प्रशासन बड़ी श्रद्धा से शिवभक्तों के लिए व्यवस्था में लगता है। समाज के सेवाभावी बंधु जगह-जगह पर शिवभक्तों के लिए भोजन, दवा एवं विश्राम आदि की व्यवस्था करते हैं। ऐसे में कांवड़ उठाने वाले शिवभक्तों की भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि शासन-प्रशासन और समाज द्वारा की जा रही व्यवस्था में सहयोगी बनें। कई बार देखने में आता है कि शिवभक्त कांवड़ लेकर मध्य मार्ग में चलते हैं, जिससे दुर्घटना होने की स्थिति बन जाती है। कई बार तो ऐसी भी घटनाएं देखने में आई है कि वाहनों द्वारा अनजाने में शिवभक्तों से टकराव हो जाने पर शिवभक्त एक दम उग्र रूप ले लेते हैं और सामाजिक संघर्ष की स्थिति बन जाती है। संबंधित प्रदेशों के मुख्यमंत्री, साधु संत और समाज के प्रतिष्ठित बंधुओं तथा न्यूज एंकरों को शिवभक्तों से व्यवस्था में सहयोगी बनने का विनम्र निवेदन करना चाहिए, जिससे आस्था के इस महाकुंभ में सभी शिवभक्त सकुशल अपने गंतव्य तक पहुंच सकें। आइए, सावन के इस महापर्व में हम सब भी सहयोगी बनें।

▪ ललित शंकर, हरिद्वार

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं
मेरठ से डॉ. सुधाकर आशावादी, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, फिरोजाबाद से शैलेंद्र कुमार चतुर्वेदी, जालंधर से राजेश कुमार चौहान, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, श्रीनगर गढ़वाल से लक्ष्मण पुंडीर, मेरठ से डॉ नरेन्द्र टोंक, दिल्ली से ओपी सोनिक, बरेली से बीसी उपाध्याय, झाबुआ से अरविन्द रावल, शाजापुर से मनमोहन राजावत, इंदौर से अमृतलाल मारू 'रवि'।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

विस्फोट से बने 'टेलीफोन' के खंभे

ज्वालामुखी विस्फोट और पानी के मिलने से बनी अजीबोगरीब आकृति देखी है? कैलिफोर्निया के क्रॉली झील पर ऐसे हजारों स्तंभ बने हुए हैं।

दुनिया में कई ऐसी अजीबोगरीब जगहें और समुद्र तट हैं, जो अपनी विविधता की वजह से लोगों के आकर्षण का केंद्र हैं। कैलिफोर्निया के मोनो काउंटी में क्रॉली झील एक ऐसी ही जगह है, जिसके किनारे पर हजारों की संख्या में रहस्यमयी स्तंभ मौजूद हैं। इनको 'क्रॉली लेक कॉलम्स' के नाम से जाना जाता है। इनकी बनावट अजीबोगरीब है, जिन्हें देखकर लोग हैरान रह जाते हैं। स्थानीय लोग इन स्तंभों को कुदरत का चमत्कार मानते हैं।

ये कॉलम्स कैसे बने, कब बने यह एक रहस्य है। ऐसा भी कहा जाता है कि ये स्तंभ 760,000 साल पहले एक बड़े ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान बनी राख और झील के पानी की परस्पर क्रिया से बने हैं। इन स्तंभों को लेकर शोध करने वाले नूह रैडोल्फ का कहना है कि क्रॉली झील के पूर्व में 2 से 3 वर्ग मील क्षेत्र में 5,000 से अधिक स्तंभ मौजूद हैं, जिनके आकार में विविधता है। कई स्तंभ तो भूरे रंग के हैं, जो टेलीफोन के खंभों की तरह सीधे हैं। कुछ स्तंभ लाल-नारंगी रंग के हैं, कुछ मुड़े हुए हैं या सभी एक ही कोण पर झुके हुए हैं। स्तंभ आकार में षट्कोणीय हैं, लेकिन वे पंचकोणीय या वर्गाकार भी हो सकते हैं। ये स्तंभ 20 फीट तक ऊंचे हैं, जो मेहराबों से जुड़े हुए हैं। अक्सर इनकी तुलना एक प्राचीन मूरिश मंदिर के खंडहरों से की जाती है।

इनको देखकर लगता है कि यह इन्सानों द्वारा बनाई गई संरचना है, लेकिन असल में इन्सानों का इसमें दूर-दूर तक कोई हाथ नहीं है। इन अद्भुत कॉलम को खुद प्रकृति ने बनाया है। क्रॉली लेक में बने ये कॉलम बिल्कुल सटीक हैं। वैज्ञानिक मानते हैं कि ये ज्वालामुखी की राख से कई सालों पहले बने होंगे।

▪ राजेंद्र दास, पटना

एक फ्रेम में तीन दिग्गज

साल 1964 में बनी फिल्म 'गजल' के गाने 'रंग और नूर की बारात किसे पेश करूं' की रिकॉर्डिंग के दौरान संगीतकार मदन मोहन, गायक मोहम्मद रफी और गीतकार साहिर लुधियानवी।

▪ रोहन गर्ग, दिल्ली

छायानट

राज कपूर के गैराज में अनिल कपूर

अस्सी और नब्बे के दशक के कई ऐसे बॉलीवुड स्टार्स हैं, जो आज भी बॉलीवुड पर छाए हुए हैं। सालों बाद वे स्टार्स आज भी दर्शकों की पसंद बने हुए हैं। सुपरस्टार अनिल कपूर भी इसी लिस्ट में शामिल हैं, जो डेब्यू के करीब 45 साल बाद भी लगातार फिल्में कर रहे हैं, लेकिन अनिल कपूर की शुरुआती जिंदगी काफी संघर्षपूर्ण रही है। फिल्मी दुनिया में अपनी जगह बनाने के लिए अनिल जब परिवार के साथ मुंबई आए थे, तब उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं थी। उस समय राज कपूर ने उनकी फैमिली को रहने के लिए अपना गैराज दिया था।

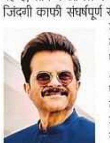

हालांकि बाद में अनिल पूरे परिवार के साथ किराए पर दूसरी जगह रहने लगे। अनिल कपूर के पिता सुरेंद्र कपूर की लगन के चलते उनके परिवार को एक अच्छी जिंदगी मिल पाई। उनके पिता सुरेंद्र कपूर फिल्म निर्माता थे, इस वजह से अनिल का रुझान शुरू से ही फिल्मों की तरफ रहा। अनिल 1979 में डायरेक्टर उमेश मेहरा की फिल्म 'हमारे-तुम्हारे' में सपोर्टिंग रोल में नजर आ चुके थे। बतौर लीड एक्टर उनकी डेब्यू फिल्म तेलुगु की 'वामसा वृक्षम' थी।

▪ सुमन नेगी, अल्मोड़ा

विश्व नगर की सूची से खिसकती मुंबई

किसी शहर को 'विश्व नगर' कहलाने के लिए शहर का विशाल आकार, ऐतिहासिक गहराई, समृद्ध सांस्कृतिक जीवन, सराहनीय सामाजिक विविधता और आर्थिक शक्ति होना आवश्यक है। मुंबई में ये सारे गुण थे, लेकिन अब मुंबई में संकीर्णता बढ़ती जा रही है।

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

वर्ष 2006 में मैंने 'टाइम आउट मुंबई' (अब प्रकाशन बंद) में एक कॉलम लिखा था, जिसमें यह बताया गया था कि किसी शहर को 'विश्व नगर' कहलाने के लिए किन मानदंडों को पूरा करना चाहिए। मैंने तर्क दिया कि इसके लिए किसी शहर का विशाल आकार, ऐतिहासिक गहराई, समृद्ध सांस्कृतिक जीवन, सराहनीय सामाजिक (भाषाई और धार्मिक सहित) विविधता और आर्थिक शक्ति होना आवश्यक है। मेरा निष्कर्ष था कि केवल तीन शहर ही इस श्रेणी में आते हैं- लंदन, न्यूयॉर्क और मुंबई।
हाल में यह लेख मुझे तब याद आया, जब मैंने न्यूयॉर्क के मेयर पद के लिए जोहरान ममदानी के अभियान के बारे में पढ़ा। ईसाई बहुल लंदन में पहले ही एक मुस्लिम मेयर है; क्या न्यूयॉर्क, जो अब तक ईसाई और यहूदी (और नास्तिक) के रूप में जाना जाता है, जल्द ही एक मुस्लिम मेयर पा सकता है? इस प्रश्न पर विचार करते हुए, मुझे अहसास हुआ कि हमारा तीसरा विश्व नगर, मुंबई, इस दौड़ में पहले ही आगे निकल चुका है, क्योंकि यहां छह मुस्लिम मेयर रह चुके हैं, पहला 1934 में और अंतिम 1963 में।

यह कॉलम मुंबई के उन मुस्लिम मेयरों में से एक पर केंद्रित है, जिनके लिए यह पद उनका एकमात्र या सबसे महत्वपूर्ण गौरव नहीं था। उनका नाम यूसुफ मेहरअली था और उनके बारे में अब लिखने का एक कारण यह है कि उनकी मृत्यु इस महीने पचहत्तर साल पहले हुई थी। 1903 में बॉम्बे में जन्मे मेहरअली ने भरदा हाई स्कूल और एल्फिंस्टन कॉलेज में पढ़ाई की, जहां उन्होंने एक बहसकर्ता के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की। उन्होंने कानून की डिग्री भी ली, लेकिन अपने राजनीतिक विचारों के कारण उन्हें वकालत का लाइसेंस नहीं मिला। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में खुद को झोंक दिया था। 1928 में उन्होंने गोरे साइमन कमीशन के विरोध में सक्रिय भूमिका निभाई और दो साल बाद नमक सत्याग्रह में जेल गए।

1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य गांधी के नेतृत्व वाली मूल पार्टी को समानतावादी दिशा देना था। मेहरअली उसके सबसे मुखर नेताओं में से एक थे, जिनकी विशेष रुचि श्रमिकों के अधिकारों और एशिया एवं अफ्रीका के अन्य हिस्सों में औपनिवेशिक विरोधी आंदोलनों में थी। 1930 के दशक में उन्होंने भारत भर में जमीनी समाजवाद के सिद्धांत को बढ़ावा देने के लिए अथक यात्रा की। साथ ही यूरोप और अमेरिका का दौरा किया, ताकि वहां के लोकतांत्रिक समाजवादियों के साथ संबंध स्थापित कर सकें। अप्रैल 1942 में यूसुफ मेहरअली बॉम्बे के मेयर चुने गए। उसी वर्ष अगस्त में गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया। मेयर के रूप में, मेहरअली का कर्तव्य था कि जब गांधी एआईसीसी अधिवेशन में भाग लेने के लिए ट्रेन से बॉम्बे आएं तो औपचारिक रूप से उनका स्वागत करें।

कई लोग मानते हैं कि 'भारत छोड़ो' का नारा यूसुफ मेहरअली ने दिया था। संभव है कि यह श्रेय गलत हो, लेकिन 1928 में 'साइमन वापस जाओ' जैसा गूंजता हुआ नारा सच में मेहरअली ने ही दिया था। उल्लेखनीय है कि मधु दंडवते की 1986 में प्रकाशित जीवनी में यह दावा नहीं किया गया। उसमें केवल यह लिखा गया कि 'महात्मा गांधी के आशीर्वाद से मेहरअली के पद्मा पब्लिकेशंस ने 1942 के अगस्त क्रांति की पूर्व संध्या पर 'भारत छोड़ो' शीर्षक से एक पुस्तिका प्रकाशित की।'

मैंने खुद यूसुफ मेहरअली के बारे में पहली बार 1980 के दशक की शुरुआत में सुना था, जब मेरा एक दोस्त उनके नाम पर बने शहरी अध्ययन केंद्र में काम करता था। कुछ साल बाद, मैंने न्यूयॉर्क से अमेरिकी पत्रकार और इतिहासकार बर्ट्रम डी. वोल्फ के निबंधों का एक संग्रह खरीदा। इस किताब का नाम था 'स्ट्रेंज कम्युनिस्ट्स आई हैव नोन' और इसमें मेहरअली पर एक निबंध था, जिसका दिलचस्प शीर्षक था : 'गांधी बनाम लेनिन।' वोल्फ और मेहरअली 1930 के दशक के मध्य में पहली बार अमेरिका गए और दोस्त बन गए। मेहरअली से मिलने से पहले, वोल्फ जिन वामपंथियों से सबसे ज्यादा परिचित थे, वे अमेरिकी कम्युनिस्ट थे, जो लेनिन और स्टालिन के प्रति अंधभक्ति की कसम खाते थे और कट्टरता से मानते थे कि अच्छे उद्देश्यों के लिए सबसे अनैतिक तरीकों का इस्तेमाल करना भी उचित है। वोल्फ मेहरअली के समाजवाद से प्रभावित हुए।

वोल्फ ने एक सुंदर घटना का वर्णन किया है कि कैसे वह यूसुफ मेहरअली को केप कॉड के छोर पर ले गए, जहां अटलांटिक महासागर और मैसाचुसेट्स की खाड़ी का संगम होता है। मेहरअली कार से उतरे, अपनी चप्पलें पीछे छोड़ दीं और पानी में उतर गए। जब मेहरअली सड़क पर लौटे, वोल्फ ने याद किया, "उनके चेहरे पर खुशी की वह चमक थी, जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। उन्होंने मुझसे कहा कि हम भारतीय हर संगम को एक पवित्र जगह मानते हैं।"

मेहरअली की पहली अमेरिका यात्रा के समय वोल्फ ने उन्हें ब्रिटिश उपनिवेशवाद की भयावहता के खिलाफ न्यायोचित आक्रोश से भरा हुआ पाया। हालांकि, 1946 में जब उन्होंने दूसरी यात्रा की और यह स्पष्ट हो गया था कि भारत जल्द ही स्वतंत्र होगा, मेहरअली ने अपने अमेरिकी मित्र से ब्रिटिश शासकों की अच्छी बातों का उल्लेख किया। वोल्फ इस बदलाव से चकित रह गए। उन्होंने मेहरअली से पूछा कि वह 'ब्रिटिश भावना' की प्रशंसा कैसे कर सकते हैं, जबकि उसी ने उन्हें वर्षों तक जेल में रखा। मेहरअली ने उत्तर दिया : "जब वे हमें दबाते थे, तब भी उन्हें इसके लिए असहजता होती थी, इसलिए गांधी ने हमें सिखाया कि हमें अंग्रेजों के बुरे कार्यों से घृणा करनी चाहिए, पर अंग्रेजों से नहीं और न ही उनके या अपने लिए सुधार की आशा छोड़नी चाहिए।"
मधु दंडवते की जीवनी की भूमिका में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में मेहरअली के सहयोगी अच्युत पटवर्धन ने उन्हें 'एक महान मानवतावादी' कहा। किताब में अन्यत्र, दंडवते ने समाजवादी-नारीवादी कमला देवी चट्टोपाध्याय का उद्धरण दिया, जिन्होंने जुलाई 1950 में यूसुफ मेहरअली की मृत्यु के बाद लिखा : "निर्भय फिर भी कोमल, साहसी फिर भी विचारशील; किसी भी बलिदान के लिए तत्पर, फिर भी प्रेम और स्नेह से परिपूर्ण, मेहरअली पुरुषों में अद्वितीय थे। उन्होंने राजनीति और धर्म की सीमाओं को पार करते हुए समर्पित मित्र और वफादार साथी बनाए।"

यही निःस्वार्थता या दूसरों के कल्याण और खुशी के प्रति यह पूर्ण समर्पण, मेहरअली को अपनी स्वास्थ्य उपेक्षा की ओर ले गया, जिससे उनकी अकाल मृत्यु हुई। अपने अंतिम समय में उन्हें बॉम्बे के एक प्रसिद्ध क्लिनिक में ले जाया गया, लेकिन जब इलाज से कोई राहत नहीं मिली, तो मेहरअली ने जयप्रकाश नारायण से कहा कि उन्हें घर वापस ले जाया जाए ताकि वह वहीं मर सकें, क्योंकि 'वह उन डॉक्टरों के अच्छे नाम को खराब नहीं करना चाहते थे जिन्होंने उनका इलाज किया। दंडवते लिखते हैं, "अपने जीवन के अंतिम क्षण में भी यूसुफ की चिंता दूसरों के लिए थी।" उनकी मृत्यु ने राजनीतिक परिदृश्य के विभिन्न हिस्सों के लोगों को एक साथ ला दिया, जिसमें रूढ़िवादी कांग्रेसी और कट्टर समाजवादी एक साथ उनके अंतिम यात्रा में चले। मुंबई में एक ऐसा मेयर होना, जिसका जन्म मुस्लिम परिवार में हुआ हो, कभी सामान्य और शहर की पहचान हुआ करता था। दुख की बात है कि पिछले दशकों में जहां लंदन और न्यूयॉर्क धार्मिक और भाषाई विविधता के लिए अधिक खुले हुए हैं, वहीं मुंबई अधिक संकीर्ण और सांप्रदायिक होती गई है। यह कल्पना करना कठिन है कि कब और कैसे मुंबई फिर से यूसुफ मेहरअली जैसे समाजवादी, विद्वान, देशभक्त और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण रखने वाले मेयर का चुनाव कर पाएगी, जिसने सच में अपने शहर, अपने देश और दुनिया को गौरवान्वित किया।

यहां मौन ने रचा क्वांटम युग

रेत के लाल पत्थरों से बना और उत्तरी सागर के जर्मनी तट से लगभग 50 किलोमीटर दूर एक छोटा-सा द्वीप है- हेल्गोलैंड। यह द्वीप, जो क्षेत्रफल में मुश्किल से एक वर्ग किलोमीटर का है, इतिहास के पन्नों में कभी एक नौसैनिक किले के रूप में अंकित था। आगे चलकर यह पर्यटकों के लिए एक विश्राम स्थल बन गया। इसका सबसे अनमोल परिचय उस मौन रात से जुड़ा है, जब यहां एक युवा वैज्ञानिक की श्वासों में विचारों की क्रांति ने जन्म लिया, जिसने भौतिकी के संसार में एक नई दुनिया की नींव रखी।

डॉ. मोनिका राज

खुला आकाश

हेल्गोलैंड कभी नौसैनिक किले के रूप में अंकित था। इसका सबसे अनमोल परिचय उस मौन रात से जुड़ा है, जब यहां एक युवा वैज्ञानिक की श्वासों में विचारों की क्रांति ने जन्म लिया, जिसने भौतिकी के संसार में एक नई दुनिया की नींव रखी।

जून 1925 की वह रात, जब गोटिंजेन में परागकणों से पीड़ित 23 वर्षीय वर्नर हाइजनबर्ग राहत की तलाश में हेल्गोलैंड पहुंचे थे। उनका उद्देश्य केवल शुद्ध वायु में सांस लेना नहीं था, बल्कि उस एकांत और मौन में स्वयं से संवाद करना भी था, जहां विचार अव्यवधान में जन्म ले सकें। द्वीप की चट्टानों पर चलते हुए हाइजनबर्ग ने एक ऐसा बौद्धिक विस्फोट अनुभव किया, जिसने अणु की परिकल्पना को ही पुनर्परिभाषित कर दिया।

अब तक के भौतिक शास्त्र में यह माना जाता था कि इलेक्ट्रॉन किसी ग्रह की भांति नाभिक के चारों ओर चक्कर लगाता है, परंतु हाइजनबर्ग ने इस विचार को त्याग दिया। उन्होंने केवल उन तथ्यों को महत्व दिया जो प्रत्यक्ष परीक्षणों से प्रमाणित हो सकते थे, जैसे प्रकाश के अवशोषण और उत्सर्जन की आवृत्तियां और तीव्रताएं। इन आंकड़ों की गणना के लिए उन्होंने जो तरीका अपनाया, वह गणितीय दृष्टि से क्रांतिकारी था। उन्होंने इन संख्याओं को एक विशेष रूप में संजोया, जिसे 'मैट्रिक्स' अर्थात् 'आव्यूह' कहा जाता है। जब उन्होंने इन आव्यूहों को गुणा किया, तब उन्होंने पाया कि क्रमानुक्रम का उलट जाना गणितीय अर्थ में महत्त्वपूर्ण है- स्थिति और संवेग एक-दूसरे के सापेक्ष न होकर, उनके गुणनक्रम में भी भिन्न थे। यही वह सूत्र था, जिससे हाइड्रोजन के वर्णक्रम की गणना हूबहू की जा सकती थी। यह एक भौतिकीय क्रांति थी- हाइजनबर्ग ने क्वांटम यांत्रिकी की पहली पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की थी, जिसे बाद में 'मैट्रिक्स मैकेनिक्स' के नाम से जाना गया।
आज भले ही हेल्गोलैंड के तटों पर युद्धपोतों की धमक न हो, लेकिन यह द्वीप अब भी गूंजता है, उस एक रचनात्मक रात की स्मृति से, जिसने संपूर्ण विज्ञान की दिशा मोड़ दी। हेल्गोलैंड अब तोपों और बंदूकों की जगह एक ऐसी जगह के रूप में जाना जाता है, जहां एक रात की मौन प्रेरणा ने शाश्वत विज्ञान को दिशा दी। यह द्वीप आज भी गवाही देता है कि तथ्य के मौन में कितनी बड़ी गर्जना छिपी होती है और कभी-कभी, सागर के किनारे की एकांत चट्टानें भी ब्रह्मांड के रहस्यों की कुंजी बन सकती हैं।

विमानन सुरक्षा फर्म के सीईओ ने कहा-रिपोर्ट रहस्यमयी

मार्क डी मार्टिन ने कहा- रिपोर्ट में कई ऐसे बिंदु हैं, जो आपस में मेल नहीं खाते

नई दिल्ली। विमानन सुरक्षा एवं परामर्श फर्म मार्टिन कंसल्टिंग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) व विमानन सुरक्षा विशेषज्ञ मार्क डी मार्टिन ने शनिवार को कहा कि अहमदाबाद विमान हादसे पर एएआईबी की रिपोर्ट कई मायनों में रहस्यमयी है। इसमें कई ऐसे बिंदु हैं, जो आपस में मेल नहीं खाते। उन्होंने तर्क दिया कि विमान में रैम एयर टर्बाइन (आरएटी) केवल इंजन फेल होने की स्थिति में ही लगाया गया था।

मार्टिन ने कहा, पहले भी ऐसी खबरें आई हैं कि ईंधन स्विच कई बार ट्रिप हो गए और कटऑफ स्थिति में वापस आ गए। दुखद बात यह है कि दुनिया की ज्यादातर रखरखाव, मरम्मत और ओवरहाल (एमआरओ) कंपनियां एएआईबी को गंभीरता से नहीं लेतीं। एयरवर्थनेस डायरेक्टिव (एडी) और सर्विस बुलेटिन (एसबी) को ही गंभीरता से लेते हैं। उन्होंने आगे कहा, हम अभी जांच के शुरुआती चरण में हैं और पूरी रिपोर्ट आने में अभी 90 दिन बाकी हैं। उन्होंने एअर इंडिया-171 दुर्घटना की जांच में कोई कसर नहीं छोड़ी जाने की अपील की। साथ ही प्रारंभिक रिपोर्ट को वैश्विक कोरम में ले जाने का आग्रह किया, ताकि अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा नियामक भी ड्रीमलाइनर की दुर्घटना के कारणों को समझ सकें। मार्टिन ने कहा कि पूरी रिपोर्ट आने का इंतजार करना चाहिए, लेकिन उन्होंने शुरुआती रिपोर्ट के कुछ पहलुओं पर सवाल उठाए, जिनमें पायलट की गलती का संकेत दिया गया था। उन्होंने कहा कि यह असंभव है कि कोई भी पायलट, खासकर टेकऑफ के दौरान, थ्रस्ट लेवल के पीछे लगे स्विच में दखलंदाजी या छेड़छाड़ करना चाहेगा। ज्यादा से ज्यादा आप कॉकपिट के फ्रंट पैनल में लगे लैंडिंग गियर को ऊपर उठाने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, या फ्लैप को ऊपर उठाएंगे। उन्होंने कहा, यह जरूरी है कि इस जांच को अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (आईसीएओ), सीएए कनाडा और अन्य सुरक्षा निरीक्षण नियामकों को शामिल करते हुए वैश्विक स्तर पर भी शामिल किया जाए, जो अपने क्षेत्राधिकार में 787 विमान संचालन का प्रबंधन और देखरेख करते हैं। एजेंसी

विमान हादसे को मानवीय चूक मान लेना जल्दबाजी : कैप्टन ढल्ला

नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) के पूर्व उड़ान संचालन निरीक्षक कैप्टन प्रशांत ढल्ला ने कहा कि एअर इंडिया विमान हादसे को मानवीय चूक मान लेना जल्दबाजी होगी। उन्होंने कहा कि एएआईबी की प्रारंभिक रिपोर्ट में कहा गया कि रैम एयर टर्बाइन (रैट) बाहर था। इसलिए इस घटना में मानवीय चूक का अनुमान लगाना जल्दबाजी होगी, भले ही यह संभावना हो। ढल्ला ने कहा, हमने मानवीय कारकों के तहत चौंका देने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। ऐसी स्थिति हो सकती है जहां, पायलट अनजाने में कुछ गलती कर सकते हैं। यह एक संभावना है कि विमान में कोई इलेक्ट्रिकल समस्या हो सकती है। उस स्थिति में पायलटों ने सोचा होगा कि इंजन में कोई तकनीकी समस्या है। इसके बाद पायलटों ने इंजन चालू या बंद करने की कोशिश की होगी। रिपोर्ट में दिए गए निष्कर्षों से इसकी पुष्टि हो सकती है, जिसमें उल्लेख है कि रैम एयर टर्बाइन ने हाइड्रोलिक पावर की आपूर्ति शुरू की थी।

विमान दुर्घटना की पहली रिपोर्ट

मैकेनिकल व इलेक्ट्रिकल खराबी के कारण भी ईंधन स्विच की स्थिति में हो सकता है बदलाव : एफपीआई

अमर उजाला ब्यूरो

मुंबई। एएआईबी की रिपोर्ट पर विशेषज्ञों ने कहा कि विमान में मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल खराबी के कारण भी विमान में ईंधन भरने वाले स्विच की स्थिति में बदलाव हो सकता है। विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि ईंधन स्विच की स्थिति में बदलाव के कारणों का पता आगे की जांच के दौरान ही चलेगा।

फेडरेशन ऑफ इंडियन पायलट्स (एफपीआई) के अध्यक्ष और एअर इंडिया के पूर्व पायलट कैप्टन सीएस रंधावा ने कहा, ईंधन स्विच की स्थिति केवल मानवीय हस्तक्षेप से ही बदली जा सकती है। ईंधन स्विच स्प्रिंग-लोडेड होते हैं और इनमें लॉक लगा होता है। अगर इन्हें रन स्थिति में लाना है, तो पहले इससे बाहर निकालना होगा और फिर उस स्थिति में लाना होगा। रंधावा के मुताबिक, ईंधन स्विच आमतौर पर तब इस्तेमाल किए जाते हैं, जब दोनों इंजनों में आग लग गई हो या पायलटों ने स्विच को दोबारा लगा दिया हो। प्रारंभिक रिपोर्ट से यह स्पष्ट नहीं है कि स्विच की स्थिति क्यों बदली गई। जब ईंधन स्विच को बंद करना होता है तो उड़ान भर रहा पायलट कहेगा, ईंधन नियंत्रण स्विच बाएं, पुष्टि करें। दूसरे पायलट की ओर से पुष्टि किए जाने के बाद पायलट मॉनिटरिंग स्विच बंद कर देगा। इस मामले में पहला पायलट विमान की कमान संभाल रहा था और कप्तान पायलट मॉनिटरिंग कर रहा था। क्या ईंधन स्विच का हस्तांतरण पायलट और पहले सह पायलट के बीच हुआ था? रिपोर्ट से यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है।

न्यूज डायरी

चिराग पासवान को मिली जान से मारने की धमकी, जांच शुरू

पटना। केंद्रीय मंत्री और लोजपा (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान को सोशल मीडिया में जान से मारने की धमकी मिली है। एक इंस्टाग्राम यूजर ने 20 जुलाई तक हाजीपुर के सांसद को बम से उड़ाने की बात कही है। मामले की गंभीरता को देखते हुए पार्टी ने पटना साइबर क्राइम थाने में इसकी शिकायत दर्ज कराई है। थाना प्रभारी ने मामले में जांच का आदेश दिया है। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता राजेश भट्ट ने आरोपी को राजद का समर्थक करार दिया। ब्यूरो

कक्षा के मॉनीटर की स्कूल में संदिग्ध परिस्थिति में मौत

जलगांव। महाराष्ट्र के जलगांव में स्थित एक निजी स्कूल में नौवीं के एक छात्र की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक की पहचान कल्पेश इंगले (14) के रूप में हुई है। वह अपनी कक्षा का मॉनीटर था। बेहोशी की हालत में मिलने के बाद शिक्षक उसे अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने कल्पेश को मृत घोषित किया। कल्पेश के परिजनों ने सहपाठियों पर उसके साथ मारपीट का आरोप लगाया है। एक अधिकारी ने बताया कि यह घटना जिला पेठ थाना क्षेत्र के आरआर स्कूल में शुक्रवार को भोजनावकाश के दौरान उस वक्त हुई, जब छात्र खाना खाने के बाद खेल रहे थे। एजेंसी

तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा पहुंचे लेह, भव्य स्वागत

जम्मू। तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा शनिवार को अपने एक माह के प्रवास पर लद्दाख पहुंच गए। लेह में दमन और सुरना की पारंपरिक धुनों पर नाच रहे अनुयायियों ने दलाई लामा का भव्य स्वागत किया। उनके आगमन के लिए लेह एयरपोर्ट से लेकर जिवेत्सल तक बड़ी संख्या में उनके चाहने वाले सड़क के किनारे जुटे हुए थे। वे गुलदस्ते लिए हुए थे। धर्मगुरु के सम्मान में उन्होंने ध्वज भी लहराए। एजेंसी

असम राइफल्स ने जब्त कीं 112 करोड़ रुपये की मेथ की गोलियां

आइजोल। मिजोरम के चंफाई जिले में असम राइफल्स ने 112.40 करोड़ रुपये की मेथ की गोलियां जब्त की हैं। एक बयान में बल ने कहा, यह जब्ती शुक्रवार को म्यांमार सीमा से सटे जोखावथर गांव के पास गश्त के दौरान की गई। जवानों ने दो संदिग्धों को बैग के साथ जाते देखा तो उन्हें रुकने को कहा लेकिन वे अपना सामान फेंककर सीमावर्ती नदी में कूद गए। जब उनके बैग की जांच की गई तो उसमें मेथमफेटामाइन (मेथ) की 3.33 लाख गोलियां बरामद की गईं, जिन्हें जब्त कर लिया गया। अर्धसैनिक बल ने जब्त की गई नशीली दवाओं को आगे की कार्रवाई के लिए पुलिस को सौंप दिया है। एजेंसी

कर्नाटक : बन्नेरघट्टा उद्यान में बाघिन के तीन शावकों की मौत

बंगलूरू। कर्नाटक की राजधानी बंगलूरू स्थित बन्नेरघट्टा जैविक उद्यान में एक बाघिन के तीन शावकों की मौत हो गई। पैदा होने के बाद इन्हें उनकी मां ने छोड़ दिया था। अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि बाघिन हिमा दास ने सात जुलाई को एक मादा समेत तीन शावकों जन्म दिया था लेकिन उनकी देखभाल नहीं की। परिणामस्वरूप तीनों शावक घायल हो गए और उनकी मौत हो गई। शावकों को गहन देखभाल के लिए तुरंत अस्पताल ले जाया गया लेकिन डॉक्टर शावकों को बचा नहीं पाए। एजेंसी

एलडीएफ-यूडीएफ ने केरल को बना दिया राष्ट्रविरोधी ताकतों का गढ़ : शाह

गृह मंत्री ने सत्तारूढ़ वामपंथी गठबंधन पर निशाना साधा, विकसित केरलम का लोगो जारी किया

तिरुवनंतपुरम। गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को केरल में सत्तारूढ़ माकपा नीत एलडीएफ व विपक्षी कांग्रेस नीत यूडीएफ गठबंधन पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि दोनों गठबंधनों के शासनकाल में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला और उनकी तुष्टीकरण की राजनीति ने केरल को पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) जैसी राष्ट्रविरोधी ताकतों के लिए सुरक्षित गढ़ बना दिया। पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य में सिर्फ भाजपा नीत एनडीए की सरकार ही विकास ला सकती है, न कि एलडीएफ या यूडीएफ।

भाजपा नेता ने कहा कि विकसित भारत बिना दक्षिणी राज्यों के विकसित हुए संभव नहीं है और विकसित भारत का रास्ता विकसित केरलम से होकर जाता है। इसलिए, अभी से भाजपा का मूल उद्देश्य विकसित केरलम होगा। शाह ने कहा कि भाजपा के लिए केरल में मुख्यमंत्री होने से ज्यादा जरूरी यह सुनिश्चित करना है कि राज्य में पार्टी कार्यालय विकसित केरलम का केंद्र बने। शाह ने भाजपा के नए प्रदेश कमेटी कार्यालय का उद्घाटन करने के बाद पुथरीकंदम मैदान में वार्ड स्तरीय नेतृत्व बैठक में पार्टी कार्यकर्ताओं व समर्थकों की विशाल सभा को संबोधित किया। उन्होंने पार्टी के विकसित केरलम मिशन का लोगो व मोटो भी जारी किया।

गृह मंत्री ने इस वर्ष होने वाले स्थानीय निकाय चुनावों व अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी के अभियान की शुरुआत से पहले तिरुवनंतपुरम में भाजपा की प्रदेश कमेटी के नए कार्यालय मरारजी भवन का उद्घाटन किया। शाह शुक्रवार देर रात केरल पहुंचे और भाजपा की प्रदेश इकाई के पूर्व अध्यक्ष दिवंगत केजी मरार की आवक्ष कांस्य प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। केजी मरार की आवक्ष प्रतिमा को नए भवन के केंद्रीय कक्ष में स्थापित किया गया है। एजेंसी

जनसभा के दौरान गृह मंत्री शाह को सम्मानित करते भाजपा नेता। एजेंसी

पीएफआई पर क्यों नहीं लगाया प्रतिबंध

शाह ने कहा, केरल सरकार के पास पीएफआई पर प्रतिबंध लगाने का पूरा अधिकार था, फिर भी उसने क्यों नहीं लगाया? जब इस संगठन की शाखाएं भारत के दूसरे राज्यों में पसरने लगीं, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस पर प्रतिबंध लगाया और यह सुनिश्चित किया कि इसके शीर्ष नेताओं की गिरफ्तारी हो। केंद्र सरकार ने पीएफआई व उसकी आनुषांगिक इकाइयों को वर्ष 2022 में असांविधानिक घोषित कर दिया था। शाह ने कहा कि केरल के दोनों गठबंधनों का भ्रष्टाचार का रिकॉर्ड रहा है। विस्फोटक घोटाला, सहकारी बैंक घोटाला, एआई कैमरा घोटाला, लाइफ मिशन घोटाला, पीपीई किट घोटाला, एलडीएफ के शासन में हुए। उन्होंने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार ने केरल के लिए कांग्रेस सरकार से अधिक धन निर्गत किए हैं।

2026 में केरल में सरकार बनाएगी भाजपा : गृह मंत्री ने माकपा पर निशाना साधते हुए कहा कि वह भी भाजपा की तरह कैडर आधारित पार्टी है, लेकिन दोनों में बड़ा फर्क है। भाजपा की जहां सरकारें हैं, वहां वह राज्यों के विकास के लिए काम करती है, जबकि माकपा अपने कैडर के विकास के लिए। भाजपा ने त्रिपुरा व असम जैसे प्रांतों में सरकार गठन किया, जहां कभी विपक्षी दलों का दबदबा था। उसी तरह भाजपा तमिलनाडु में सरकार बनाएगी। 2026 में भाजपा नीत एनडीए केरल में सरकार बनाने के उद्देश्य से विधानसभा चुनाव लड़ेगी।

हजारों करोड़ की परियोजनाओं की सौगात दी

शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने केरल को हजारों करोड़ रुपये की विझिंजम बंदरगाह जैसी परियोजनाएं समर्पित कीं। दो वंदे भारत ट्रेनों के जरिये 11 जिलों को जोड़ा और केरल के लिए रेलवे बजट को वर्ष 2004 के 372 करोड़ रुपये से बढ़ाकर वर्तमान में 3,700 करोड़ रुपये कर दिया है। मोदी सरकार ने पिछली कांग्रेस सरकारों की तुलना में केरल पर कई गुना ज्यादा पैसा खर्च किया है।

कन्नूर में राजराजेश्वर मंदिर में की पूजा-अर्चना

शाह ने कन्नूर के तलिपरंबा स्थित राजराजेश्वर मंदिर में पूजा-अर्चाना की। उनके स्वागत में हवाईअड्डे से मंदिर तक सड़क के दोनों तरफ समर्थकों की भारी भीड़ देखी गई। लोग शाह के वाहन पर फूल बरसा रहे थे। मंदिर से थोड़ी दूर पहले शाह ने गाड़ी से उतरकर लोगों का अभिवादन किया और समर्थकों से हाथ मिलाया।

बीबीसी ने तकनीकी चूक व बोइंग की जवाबदेही पर उठाए सवाल

- कहा-ट्रिम कमांड में असामान्यता विमान प्रणाली की डिजाइन खामी का हिस्सा हो सकती है, न कि पायलट की गलती

अमर उजाला नेटवर्क

नई दिल्ली। अहमदाबाद विमान हादसे की प्रारंभिक रिपोर्ट के बाद वैश्विक मीडिया का ध्यान तकनीकी चूकों और बोइंग की विश्वसनीयता पर केंद्रित हो गया है। ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन (बीबीसी) ने जिस आधार पर सवाल उठाए हैं, वह विमान निर्माता कंपनी बोइंग और एअर इंडिया की प्रक्रियात्मक जवाबदेही को कठघरे में खड़ा करता है।

बीबीसी ने शुरुआती डाटा और अपने सूत्रों के हवाले से बताया कि टेकऑफ के दौरान ऑटो-पायलट मोड में ट्रिम सिस्टम ने विमान को असामान्य ढंग से ऊपर की ओर खींचा, जिससे अत्यधिक ऊंचाई पर अचानक नोज-अप स्थिति पैदा हुई। यानी विमान का अगला हिस्सा पिछले से ऊंचा हो गया। यह स्थिति बोइंग 737 मैक्स से जुड़े पूर्व हादसों की याद दिलाती है, जहां सॉफ्टवेयर और सेंसर डाटा के बीच गलत समन्वय घातक साबित हुआ था। बीबीसी ने स्वतंत्र विमानन विशेषज्ञों से बात की, जिन्होंने यह संकेत दिया कि ट्रिम कमांड में असामान्यता खुद विमान प्रणाली की डिजाइन खामी का हिस्सा हो सकती है, न कि पायलट की गलती। विमान पायलटों के बीच दो लाइन की हुई बातचीत किसी निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए नाकाफी है। द न्यूयॉर्क टाइम्स ने बोइंग के ऊपर बढ़ते वैश्विक दबाव और उसके गुणवत्ता नियंत्रण तंत्र की कमजोरियों को उजागर किया है। वहीं, जर्मन समाचार पत्र डेर स्पीगेल ने लिखा है कि बोइंग की तकनीकी विफलताओं की कड़ी में यह एक और चेतावनी है, जो कंपनी की वैश्विक छवि के लिए खतरा बन सकती है। वहीं, फ्रांसिसी अखबार ले मोंद ने यह संकेत दिया है कि भारत जैसे विकासशील देशों को बेचे जाने वाले विमानों की गुणवत्ता और निगरानी प्रणाली पर बोइंग को और पारदर्शिता लानी होगी।

बड़ा सवाल : बंद कैसे हुए दोनों इंजन

मुंबई। एएआईबी की प्रारंभिक रिपोर्ट सार्वजनिक होने के बाद विशेषज्ञों ने सवाल उठाए हैं कि यदि पायलटों ने ईंधन बंद नहीं किया था, तो उड़ान के सबसे अहम दौर में दोनों इंजनों को ईंधन की आपूर्ति बंद कैसे हो गई? क्या बोइंग 787 ड्रीमलाइनर में कोई तकनीकी गड़बड़ी थी? विशेषज्ञों का मानना है कि कॉकपिट की वॉयस रिकॉर्डिंग में ईंधन की आपूर्ति बंद करने को लेकर पायलटों में जो बातचीत हुई, उसके बाद एकमात्र तार्किक संभावना यह हो सकती है कि किसी एक पायलट ने ईंधन की आपूर्ति बंद कर दी हो, पर उसने मना कर दिया हो। रिपोर्ट में यह सबसे महत्वपूर्ण जानकारी है कि उड़ान भरने के कुछ सेकंड बाद ही ईंधन बंद हो गया।

एएआईबी की टाइमलाइन पर भी सवालिया निशान

हवाई सुरक्षा विशेषज्ञ कैप्टन अमित सिंह ने एएआईबी की टाइमलाइन पर भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा, उड़ान भरने के बाद तस्वीर में आरएटी तैनात दिखाई दे रहा है, जिसका मतलब है कि दोनों इंजन पहले ही फेल हो चुके हैं। यह रिपोर्ट में बताए गए इंजन फेल होने के समय से मेल नहीं खाता। फ्यूल कटऑफ स्विच बंद होने के दस सेकंड बाद क्या हो रहा था? कॉकपिट में हुई बातचीत की पूरी जानकारी नहीं दी गई है। रिपोर्ट में सीवीआर के जिन दो वाक्यों का जिक्र है, जिनमें एक पायलट द्वारा फ्यूल कटऑफ के बारे में पूछताछ की गई है, उनमें भी कोई सटीम टाइम नहीं दिया गया है।

पीएसीएल पोंजी स्कीम घोटाले में 762 करोड़ से अधिक की संपत्ति अटैच

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 48 हजार करोड़ रुपये की पोंजी योजना से जुड़े मामले में धन शोधन निरोधक कानून के तहत पीएसीएल (पर्ल्स ग्रुप) और उसके प्रमोटरों की 762 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति अटैच की है।

इस योजना में बड़ी संख्या में निवेशकों को ठगा गया था। शनिवार को ईडी की ओर से जारी बयान में कहा गया कि धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र और ऑस्ट्रेलिया में स्थित 68 अचल संपत्तियों को अटैच किया गया है। इन संपत्तियों की कीमत 762.47 करोड़ रुपये है। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने 2015 में मनी लॉन्ड्रिंग मामले में पर्ल एग्रोटेक कॉर्पोरेशन लिमिटेड (पीएसीएल), पीजीएफ लिमिटेड और इसके मुख्य प्रमोटर दिवंगत निर्मल सिंह भंगू और अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज किया था। ईडी की कार्रवाई इसी पर आधारित है। ईडी ने कहा कि इन योजनाओं के जरिये पीएसीएल और उसके निदेशकों ने निवेशकों से लगभग 48,000 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की है। एजेंसी

कैसे हुआ घोटाला...पर्ल्स एग्रोटेक कॉर्पोरेशन लिमिटेड (पीएसीएल) ने आम लोगों से पैसा यह कहकर लिया कि वह जमीन में निवेश कर मुनाफा देंगे। लेकिन यह एक पोंजी स्कीम थी, यानी पुराने निवेशकों को नए निवेशकों के पैसे से भुगतान किया जा रहा था। इस स्कीम में लाखों लोगों ने अपनी जमा पूंजी लगा दी थी। पीएसीएल ने 1996 से यह धोखाधड़ी शुरू की और 18 साल तक चलाई। सेबी ने 1999 में इसकी जांच शुरू की और 2014 में कंपनी को अवैध सामूहिक निवेश स्कीम (सीआईएस) घोषित कर निवेशकों को 48 हजार करोड़ से ज्यादा की रकम वापस करने का आदेश दिया।

अब युवा पीढ़ी के लिए सीट खाली करने का वक्त आ गया : जुएल

भुवनेश्वर। ओडिशा के वरिष्ठ आदिवासी नेता और केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल ओराम कहा कि वह युवा पीढ़ी के लिए रास्ता बनाने के लिए चुनाव लड़ने से ब्रेक लेना चाहते हैं। ओराम ने शनिवार को संबलपुर में निजुक्ति मेला यानी नौकरी मेला में यह एलान किया।

केंद्रीय मंत्री बोले-अब नहीं लड़ूंगा चुनाव

मंत्री ने कहा कि वह भविष्य में सांसद या विधायक पद के लिए चुनाव नहीं लड़ेंगे। ओराम ने कहा, मैंने बीते चुनावों के दौरान ही साफ कर दिया था कि मैं दोबारा लोकसभा या विधानसभा चुनाव नहीं लड़ूंगा। अब वक्त आ गया है कि युवा पीढ़ी के लिए सीट खाली कर दी जाए। 6 बार सांसद और दो बार विधायक रह चुके ओराम ने यह भी कहा कि वह पार्टी की सेवा करेंगे और राज्यसभा सांसद या किसी राज्य का राज्यपाल बनने में संकोच नहीं करेंगे। एजेंसी

बिहार : लगभग सभी मतदाताओं से चुनाव आयोग ने किया सीधा संपर्क

80.11 फीसदी मतदाता पहले ही जमा कर चुके हैं गणना प्रपत्र

नई दिल्ली। भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) ने कहा कि उसने बिहार के लगभग सभी मतदाताओं से सीधा संपर्क स्थापित कर लिया है। राज्य के 80.11 फीसदी मतदाताओं ने पहले ही अपने गणना पपत्र जमा कर दिए हैं। आयोग ने यह भी कहा कि उसके वेबपोर्टल (ईसीआईनेट) में नया सत्यापन मॉड्यूल पूरी तरह से सक्रिय हो गया है।

चुनाव आयोग ने शनिवार को जारी विज्ञप्ति में बताया कि पहले से मौजूद 77,895 बूथ स्तर के अधिकारियों (बीएलओ) और 20,603 नव नियुक्त बीएलओ के साथ वह 25 जुलाई तक की निर्धारित समय सीमा से पहले ही गणना प्रपत्रों (ईएफ) का संग्रह पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस उद्देश्य के लिए, सभी 243 विधानसभा क्षेत्रों के 38 जिला निर्वाचन अधिकारियों (डीईओ), निर्वाचक पंजीकरण अधिकारियों (ईआरओ) और 963 सहायक ईआरओ (एईआरओ) सहित क्षेत्र स्तरीय टीमों की निर्वाचन अधिकारी की ओर से बारीकी से निगरानी की जा रही है। चुनाव आयोग के इन प्रयासों के साथ ही सभी राजनीतिक दलों की ओर से नियुक्त 1.5 लाख बीएलए भी घर-घर जाकर हर मौजूदा मतदाता को शामिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं, जिनका नाम 24 जून 2025 तक बिहार की मतदाता सूची में है। 4 लाख से अधिक स्वयंसेवकों की ओर से वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांग मतदाताओं और अन्य कमजोर समूहों की सहायता के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। ब्यूरो

मतदाता सूची वितरण का काम पूरा

100 फीसदी मुद्रण पूरा होने और अपने पते पर पाए गए सभी मतदाताओं को मतदाता सूची वितरण का काम लगभग पूरा होने के बाद, आज शाम 6 बजे तक संग्रह 6,32,59,497 या 80.11 फीसदी पार कर गया। इसका मतलब है कि बिहार में हर 5 में से 4 मतदाताओं ने मतदाता सूची जमा कर दी है। इस गति से, अधिकांश ईएफ 25 जुलाई 2025 से काफी पहले एकत्र किए जाने की संभावना है।

30 अगस्त तक आपत्तियां दर्ज होंगी : 1 अगस्त को प्रकाशित होने वाली मसौदा मतदाता सूची में अपना नाम शामिल कराने के लिए, मतदाताओं को अपने ईएफ, अधिमानतः, पात्रता दस्तावेजों के साथ जमा करने होंगे। यदि किसी मतदाता को पात्रता दस्तावेज जमा करने के लिए अधिक समय की आवश्यकता है, तो वह उन्हें 30 अगस्त तक अलग से जमा कर सकता है, अर्थात दावे और आपत्तियां दर्ज करने की अंतिम तिथि तक और स्वयंसेवकों की मदद भी ले सकता है। समय से एक और कदम आगे बढ़ते हुए, बीएलओ ने शनिवार शाम 6 बजे तक 4.66 करोड़ गणना फॉर्म डिजिटल रूप से ईसीआईनेट पर अपलोड कर दिए हैं।

विपक्ष ने एसआईआर पर कभी रोक लगाने की मांग नहीं की : कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भाजपा दुष्प्रचार कर रही है। अदालत ने चुनाव आयोग को आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और राशन कार्ड को पहचान के वैध प्रमाण के रूप में स्वीकार करने का निर्देश दिया था। लेकिन भाजपा अब दुष्प्रचार कर रही है। पार्टी ने स्पष्ट किया कि उसने कभी भी एसआईआर पर रोक लगाने की मांग नहीं की। वरिष्ठ कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि अदालत ने आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और राशन कार्ड को पहचान के प्रमाण के रूप में मान्य किया है, जो लगभग 90 प्रतिशत लोगों के पास है। ऐसा न करना नागरिकता प्रमाण प्रस्तुत करने की एसआईआर शर्त से प्रभावित हो सकते हैं। सिंघवी ने कहा, प्रक्रिया से वर्ष 2003 के बाद पंजीकृत लगभग 4.9 करोड़ मतदाताओं में से लगभग 2 करोड़ लोग मताधिकार से वंचित हो सकते हैं, क्योंकि उनसे नागरिकता प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए कहा जा रहा है। एजेंसी

चिंताजनक डब्ल्यूएमओ की चेतावनी, धूल भरे तूफान बनते जा रहे वैश्विक आपदा, अरबों डॉलर का नुकसान

धूल से घुट रहा दम, हर साल 380 करोड़ लोगों की सांसों पर संकट

अमर उजाला नेटवर्क

नई दिल्ली। धूल और रेत से उठता संकट अब किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रहा। हर साल वातावरण में प्रवेश कर रही 200 करोड़ टन धूल से 380 करोड़ लोग प्रभावित हो रहे हैं, जिनमें से कई वर्षों तक इसके संपर्क में रहे। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) की ताजा रिपोर्ट इस वैश्विक चुनौती की भयावहता उजागर करती है।

डब्ल्यूएमओ की रिपोर्ट के मुताबिक दुनियाभर में रेत और धूल भरी आंधियों का खतरा तेजी से बढ़ रहा है, जिससे लगभग 150 देशों के 33 करोड़ से अधिक लोग सीधे तौर पर प्रभावित हो रहे हैं। हर साल करीब 200 करोड़ टन धूल वातावरण में घुल रही है जिसका कुल भार मिस्र के गीजा स्थित 307 पिरामिडों के बराबर है। यह धूल हवा, स्वास्थ्य, कृषि और वैश्विक अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुंचा रही है। यह रिपोर्ट 12 जुलाई को 'रेत और धूल के तूफानों से मुकाबले के अंतरराष्ट्रीय दिवस' के अवसर पर जारी की गई। इस दिवस की घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2023 में की थी, ताकि इन तूफानों के खतरनाक असर को कम करने और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों को मजबूती मिल सके। 2024 में धूल की औसत मात्रा भले ही 2023 के मुकाबले थोड़ी कम रही हो, लेकिन क्षेत्रीय असर अधिक घातक रहा। रिपोर्ट के मुताबिक वातावरण में पहुंचने वाली 80 फीसदी से ज्यादा धूल उत्तर अफ्रीका और मध्य पूर्व के रेगिस्तानों से आती है, जो हवा के जरिये हजारों किलोमीटर दूर तक फैलती है।

कुछ क्षेत्रों में पांच साल में 1,600 से अधिक लोग हुए प्रभावित

डब्ल्यूएमओ और विश्व स्वास्थ्य संगठन के साझा आंकड़ों के अनुसार 2018 से 2022 के बीच 380 करोड़ लोग धूल के खतरनाक स्तर के संपर्क में आए जो 2003-2007 की तुलना में 31 फीसदी अधिक है। कुछ क्षेत्रों में लोग पांच वर्षों में 1,600 से अधिक दिनों तक धूल के प्रभाव में रहे। लैंसेट की रिपोर्ट बताती है कि यह समस्या केवल अस्थायी नहीं, बल्कि दीर्घकालिक खतरा बन चुकी है। एक अमेरिकी अध्ययन के अनुसार वर्ष 2017 में सिर्फ अमेरिका में धूल और हवा से हुए कटाव से 154 अरब डॉलर का नुकसान हुआ, जो 1995 के मुकाबले चार गुना अधिक था। 2024 में आए प्रमुख धूल तूफानों में स्पेन के कैनरी द्वीप, पूर्वी एशिया के 14 तूफान और मंगोलिया से उठे तूफान शामिल रहे, जिनसे बीजिंग में पीएम10 का स्तर 1,000 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से अधिक पहुंच गया और दृश्यता घटकर मात्र एक किलोमीटर रह गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष के बाद भाजपा दिल्ली-यूपी में चुनेगी पार्टी प्रमुख

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) बहुत जल्द नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की घोषणा कर सकती है। चुनाव की पात्रता प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। सूत्रों के अनुसार नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम के ऐलान के बाद ही दिल्ली और उत्तर प्रदेश के अध्यक्षों के चुनाव होंगे।

पार्टी के वरिष्ठ सूत्र ने बताया कि दिल्ली में भाजपा 27 साल बाद प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के नेतृत्व में सत्ता में लौटी है। यह तय नहीं है कि सचदेवा को दूसरा कार्यकाल मिलेगा या पार्टी नए चेहरे को नेतृत्व सौंपेगी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाट नेता और वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी का कार्यकाल जनवरी 2023 में समाप्त हो गया था। हालांकि, उन्हें 2024 के लोकसभा चुनाव तक विस्तार दिया गया था। एजेंसी